वार्षिक रिपोर्ट

1997-98

नीपा

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
17-बी, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110016

संस्थान का भवन

वार्षिक रिपोर्ट
1997-98

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
17-बी, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली- 110016

150 प्रतियां

© राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, 1999

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान के लिए कुलसचिव, नीपा द्वारा प्रकाशित तथा सुपरफलैक्स डी.टी.पी. सर्विसेज़, 59 डी कालू सराय, सर्वप्रिय विहार, नई दिल्ली-110016 में लेजर टाइप सेट होकर, प्रभात ऑफसेट प्रेस, 2622 कुचा चेलान, दरिया गंज,नई दिल्ली-110002 में मुद्रित

विषय सूची

अध्याय

1.	विहंगावलोकन	1
2.	प्रशिक्षण	6
3.	अनुसंधान और प्रकाशन	14
4.	पुस्तकालय, प्रलेखन केंद्र और अकादमिक समर्थन प्रणाली	24
5.	संगठन, प्रशासन और वित्त	28

अनुलग्नक

I.	प्रशिक्षण कार्यक्रम/कार्यशाला/संगोष्ठी	31
II.	संकाय का अकादमिक योगदान	37

परिशिष्ट

I.	नीपा परिषद	49
II.	कार्यकारी समिति	52
III.	वित्त समिति	54
IV.	योजना और कार्यक्रम समिति	55
V.	संकाय और प्रशासनिक स्टाफ	60
VI.	वार्षिक लेखा और लेखा परीक्षा रिपोर्ट	63

मिशन और उद्देश्य

- शैक्षिक योजना और प्रशासन में उत्कृष्टता का ऐसा राष्ट्रीय केंद्र विकसित करना जो योजना और प्रशासन की गुणवत्ता में सुधार लाए और इसके लिए अध्ययन, नए विचारों और तकनीकों के सृजन का रास्ता अपनाए तथा रणनीतिक समूहों के साथ अनुक्रिया और प्रशिक्षण के माध्यम से इनका प्रचार–प्रसार करे;

- केंद्र, राज्यों और संघ राज्यों की सरकारों के वरिष्ठ शिक्षाधिकारियों तथा शैक्षिक योजना और प्रशासन से जुड़े विश्वविद्यालयी और महाविद्यालयी प्रशासकों के लिए अभिविन्यास और प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों तथा परिचय–सत्रों का आयोजन करना;

- महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शैक्षिक योजना और प्रशासन के क्षेत्र से संबद्ध प्रशासकों के लिए अभिविन्यास और प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों का आयोजन करना;

- संस्थान के समान कार्यों से संबद्ध संस्थाओं का नेटवर्क विकसित करना और ऐसी समर्थनकारी तथा साहयोगिक भूमिका अदा करना जिससे राज्यों, क्षेत्रों और प्रादेशिक क्षेत्रों का क्रमशः विकास हो सके;

- केंद्र और राज्य सरकारों में शैक्षिक योजना और प्रशासन संबंधी नीति–निर्माण से जुड़े विधायकों समेत राष्ट्रीय स्तर के व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम, संगोष्ठी और परिचर्चा का आयोजन करना;

- शैक्षिक योजना और प्रशासन के विभिन्न पक्षों पर शोधकार्यों को सहायता और प्रोत्साहन देना और उनका समन्वय करना। इनमें भारत के विभिन्न राज्यों और दुनिया के अन्य देशों में प्रयुक्त योजनाकारी तकनीकों और प्रशासनिक कार्यप्रणालियों के तुलनात्मक अध्ययन भी शामिल हैं;

- शैक्षिक योजना और प्रशासन के क्षेत्र में कार्य कर रहे कार्मिकों, संस्थानों और एजेंसियों का अकादमिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन करना;

- राज्य सरकारों और शिक्षा संस्थाओं के अनुरोध पर सलाहाकारी सेवाएं प्रदान करना;

  शैक्षिक योजना और प्रशासन संबंधी अनुसंधान, प्रशिक्षण और विस्तार कार्य से संबंधित विचारों और सूचनाओं के लिए कार्य करना;

- इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आलेखों, पत्रिकाओं और पुस्तकों की तैयारी, मुद्रण और प्रकाशन; विशेष रूप से शैक्षिक योजना और प्रशासन पर पत्रिका का प्रकाशन करना;

- अपने उद्देश्यों की अधिकाधिक पूर्ति के लिए भारत और विदेश में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विश्वविद्यालय, प्रशासन और प्रबंध के क्षेत्र से जुड़े संस्थानों के साथ सहयोग करना;

- अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अध्येतावृत्ति, छात्रवृत्ति और अकादमिक प्रोत्साहन वृत्ति प्रदान करना;

- शैक्षिक योजना और प्रशासन से जुड़े विख्यात शिक्षाविदों को मानद अध्येतावृत्ति प्रदान करना;

- अन्य देशों और खासकर एशियाई देशों के अनुरोध पर शैक्षिक योजना और प्रशासन संबंधी प्रशिक्षण और अनुसंधान की सुविधाएं प्रदान करना तथा ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन में उनका सहयोग करना।

1997-98

अध्याय 1

विहंगावलोकन

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान (नीपा) पिछले साढ़े तीन दशकों से शिक्षा की योजना और प्रशासन के क्षेत्र में एक शीर्षस्थ संस्थान के रूप में कार्य करता आ रहा है। 1962 में अपनी स्थापना के बाद के पहले दस वर्षों में यह, यूनेस्को और भारत सरकार के बीच एक समझौते के आधार पर, एशिया प्रशांत क्षेत्र में शैक्षिक योजनाकर्मियों, प्रशासकों और पर्यवेक्षकों के प्रशिक्षण के लिए यूनेस्को के क्षेत्रीय केंद्र के रूप में काम करता रहा। पहली अप्रैल 1965 को इसका नाम बदलकर एशियाई शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान कर दिया गया। यूनेस्को सें समझौते की अवधि समाप्त होने के बाद और कोठारी आयोग की सिफारिश पर भारत सरकार ने यूनेस्को केंद्र की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। इस तरह 1970 में एक स्वायत्त संस्था के रूप में शैक्षिक योजनाकर्मियों और प्रशासकों के लिए राष्ट्रीय स्टॉफ कालेज की स्थापना हुई। शैक्षिक योजना और प्रशासन संबंधी राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करना और इस क्षेत्र में दूसरे देशों के साथ अनुभव और विशेषज्ञता का आदान–प्रदान करना इसका मुख्य उद्देश्य था। 1979 में संस्थान का नाम बदलकर शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान (नीपा) कर दिया गया।

अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संस्थान ने अपने अकादमिक कार्यक्रमों को चार विषयवार एककों में बाँटा है : (1) योजना, (2) प्रशासन; (3) वित्त, और (4) नीति। शैक्षिक स्तर के दो एकक हैं: (1) विद्यालय और अनौपचारिक शिक्षा एकक तथा (2) उच्च शिक्षा एकक। साथ में क्षेत्रीय स्तर के दो एकक भी हैं : (1) प्रादेशिक प्रणाली एकक, और (2) अंतर्राष्ट्रीय एकक। वर्ष 1995 में स्थापित संक्रियात्मक अनुसंधान और प्रणाली प्रबंधन एकक, प्रणाली प्रबंधन के विभिन्न मुददों से संबंधित कार्य से संबद्ध है। पुस्तकालय और प्रलेखन केंद्र, प्रकाशन एकक, हिंदी कक्ष, इलेक्ट्रॉनिक आंकड़ा प्रसंस्करण एकक, रिप्रोग्राफी और मानचित्रण कक्ष के अलावा सामान्य प्रशासन और वित्त अनुभाग भी अकादमिक कार्यों में सहायता करते हैं। वर्ष 1997-98 में संस्थान की प्रमुख गतिविधियां प्रस्तुत रिपोर्ट में दी गई हैं।

संस्थान की अकादमिक गतिविधियां तीन प्रमुख श्रेणियों में बांटी गई हैं : (1) क्षमता के विकास के लिए प्रशिक्षण; (2) ज्ञान का सृजन और व्यवहार अर्थात अनुसंधान और क्रियात्मक अनुसंधान, और (3) ज्ञान का प्रसार, परामर्शकारी सेवा, व्यावसायिक सहायता और प्रकाशन।

प्रशिक्षण

कार्यक्रम के प्रमुख क्षेत्र : प्रशिक्षण के क्षेत्र में खास जोर शैक्षिक योजना और प्रशासन संबंधी प्रशिक्षण सेवाओं की नेटवर्किंग पर और प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण पर दिया जाता है। इसका उद्देश्य क्षेत्र, राज्य, स्थान और संस्था के स्तर पर प्रशिक्षण की क्षमताओं का विकास करना है।

प्रशिक्षण के कार्यक्रमों में प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों पर जोर दिया जाता है। जैसे सभी के लिए शिक्षा, व्यष्टिस्तरीय योजना, जिला स्तर पर योजना, संस्था स्तर पर योजना और मूल्यांकन, अनौपचारिक और वयस्क शिक्षा, जिला शिक्षा–प्रशिक्षण संस्थानों की योजना और प्रबंध, आदिवासी शिक्षा, विकेंद्रीकृत प्रशासन, लैंगिक प्रश्न, पर्यावरण शिक्षा, कंप्यूटरों का व्यवहार, (अ) अकादमिक स्टाफ कालेजों और (ब) स्वायत्त महाविद्यालयों की योजना और विकास, (स) उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता और प्रासंगिकता लाने के लिए योजना।

विस्तार : संस्थान ने इस साल 50 कार्यक्रमों का आयोजन किया। इसमें भारत में विभिन्न भागों से 1713 और दुनिया के 33 देशों से 172 भागीदारों को भाग लेने का अवसर मिला।

प्रशिक्षण सामग्री : क्षेत्र, राज्य और राष्ट्र के स्तर पर क्षमता के

1997-98

विकास के लिए संस्थान ने शैक्षिक योजना और प्रशासन के स्वशिक्षा माड्यूल, आलेख और आंकड़ों की रिपोर्टें तैयार कीं। संकाय ने हरेक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए विभिन्न स्रोतों के आधार पर, कार्यक्रमों के विषयों पर पठन सामग्री तैयार की जो भागीदारों को उपलब्ध कराई गई।

प्रशिक्षण की पद्धति : प्रशिक्षण के सभी कार्यक्रमों का स्वरूप अंतःशास्त्रीय है। कार्यक्रमों में व्यावहारिक और सामूहिक कार्य, केस अध्ययन और संगोष्ठियां शामिल हैं। कंप्यूटरों, फिल्मों, वीडियो और ओवरहेड प्रोजेक्टर जैसी सहायक सामग्रियों का प्रयोग करके प्रशिक्षण में प्रस्तुतियों को समृद्ध बनाया जाता है। आवश्यकता के अनुसार भागीदारों को क्षेत्रों के दौरों पर ले जाया जाता है।

मूल्यांकन : प्रशिक्षण के हर कार्यक्रम में मूल्यांकन का एक तत्व शामिल होता है। 6 माह के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा जैसे लंबी अवधि वाले कार्यक्रमों में मूल्यांकन निरंतर चलता रहता है। इन कार्यक्रमों के भागीदारों को डिप्लोमा के लिए पाठ्यचर्यात्मक कार्यों के अलावा लघुप्रबंध लिखने होते हैं।

अनुसंधान

अनुसंधान और क्रियात्मक अनुसंधान संस्थान के महत्वपूर्ण कार्यकलाप हैं। कोई भी नया कार्यक्रम आरंभ करने से पहले एक प्रायोगिक या गहन अध्ययन किया जाता है। क्रियात्मक अनुसंधान अकसर प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल विषयों पर कराए जाते हैं। अनुसंधान कार्यों में जोर उन पक्षों पर दिया जाता है जो शैक्षिक योजना, प्रशासन और नीति से संबंधित हों। शैक्षिक योजना और प्रशासन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुसंधान के इच्छुक विद्वानों की परियोजनाओं के लिए धन देकर भी संस्थान अनुसंधान को प्रोत्साहन देता है।

इस साल अनुसंधान की पांच परियोजनाएं पूरी हुईं। नए शोध अध्ययनों समेत 15 परियोजनाएं जारी थीं।

परामर्शकारी और व्यावसायिक सहयोग

संस्थान के संकाय सदस्यों ने राष्ट्र, राज्य और संस्था के स्तर के संगठनों को तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को भी परामर्श और वृत्तिक सहयोग प्रदान किया। मिसाल के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, राज्यों के शिक्षा विभागों, राज्य उच्च शिक्षा परिषदों, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों, राज्य शैक्षिक प्रबंध और प्रशिक्षण संस्थानों को तथा यूनेस्को, विश्व बैंक और सी आई डी ए जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को परामर्शकारी और वृत्तिक सहयोग दिया गया।

सूचनाओं का प्रसार

प्रकाशन : संस्थान नियमपूर्वक शोध अध्ययनों और दो पत्रिकाओं का प्रकाशन करता है। जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन एक अंग्रेजी पत्रिका और परिप्रेक्षय एक हिंदी पत्रिका है। एक अर्धवार्षिक एनट्रिप (एशियन नेटवर्क आफ ट्रेनिंग एंड रिसर्च इंस्टीट्यूशंस इन एजुकेशनल प्लानिंग) न्यूज लेटर का प्रकाशन भी किया जाता है। इस साल दो पुस्तकों, जिला शैक्षिक योजना पर 12 माड्यूलों का एक सेट और DISE 98 मैनुएल प्रकाशित किए गए। इनके अलावा अंग्रेजी पत्रिका के 4 और हिंदी पत्रिका के तीन अंकों और एनट्रिप न्यूजलेटर के दो अंकों का तथा अनेक अनुलेखों और शोधपत्रों का प्रकाशन भी किया गया।

अकादमिक और सहायक एकक

संस्थान के अकादमिक कार्यक्रम नौ अकादमिक एककों द्वारा चलाए जाते हैं। इन अकादमिक और सहायक एककों का संक्षिप्त विवरण नीचे प्रस्तुत है।

अकादमिक एकक

शैक्षिक योजना एकक : आज हम केंद्रीकृत की जगह विकेंद्रीकृत योजनाओं पर जोर दे रहे हैं। योजना एकक में अनुसंधान, प्रशिक्षण और परामर्श का केंद्र भी बदला है। फिलहाल हमारा मुख्य प्रयास है संस्था, जिला, राज्य और राष्ट्र स्तरों पर योजना के आगतों, प्रक्रियाओं और उत्पादों का एकीकरण करना। अर्थ व्यवस्था का उदारीकरण आरंभ होने के बाद अब परंपरागत अर्थों में व्यापक योजना की जगह रणनीतिक, सांकेतिक योजना पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। सार्वभौम

1997-98

प्रारंभिक शिक्षा के अलावा सामाजिक सुरक्षातंत्र योजना के सिद्धांत और व्यवहार का एक नया तत्व के रूप में उभरकर सामने आया है। यह एकक अनुसंधान, प्रशिक्षण और परामर्श के कार्यक्रम चलाता है।

शैक्षिक प्रशासन एकक : यह एकक अपने विभिन्न प्रशिक्षण, अनुसंधान और अन्य कार्यक्रमों के द्वारा संस्था और उससे ऊपर के स्तर के प्रशासकों की क्षमताएं विकसित करने के प्रयास करता है। देश भर में आज 80,000 से अधिक विद्यालय हैं, इसलिए यह एकक और अधिक संख्या में विद्यालयों तक पहुंचने के लिए नेटवर्किंग के द्वारा प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण पर ध्यान देता आया है। यह विशेष प्रकार की संस्थाओं, जैसे– रेलवे विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों, केंद्रीय विद्यालयों, आश्रम विद्यालयों आदि की जरूरतें भी पूरी करता है। शैक्षिक प्रशासन की व्यवस्था को आधुनिक बनाने के लिए यह एकक शैक्षिक प्रशासकों में आवश्यक प्रबंध–कौशल के विकास के प्रयास करता है ताकि वे शैक्षिक विकास की नई मांगों और चुनौतियों का सामना कर सकें।

शैक्षिक वित्त एकक : नई आर्थिक दशाएं शिक्षा के बजटों पर भारी दबाव डाल रही हैं। शिक्षा व्यवस्था के लिए संसाधन संबंधी आवश्यकताएं तेजी से बढ़ रही हैं जबकि उनकी उपलब्धता सीमित है और इस तरह दोनों के बीच का अंतर बढ़ रहा है। जरूरत ऐसे कारगर तरीके निकालने की है कि संसाधनों का आवंटन, सरकारी और गैर–सरकारी संसाधनों की लामबंदी और उनका अच्छा उपयोग किया जा सके। इस तरह शैक्षिक वित्त का कारगर प्रबंध आज भारी महत्व का विषय है।

यह एकक इसी के अनुसार अनुसंधान, प्रशिक्षण और परामर्श तथा राज्यों के शिक्षा विभागों और विश्वविद्यालयों के वित्त अधिकारियों की क्षमताओं के विकास के लिए प्रयासरत है। यह उन्हें शैक्षिक वित्त संबंधी नवीनतम विकासक्रमों और प्रवृत्तियों का परिचय देता हैं और संसाधनों के आवंटन, लामबंदी और उपयोग समेत वित्तीय प्रबंध की आधुनिक विधियों और तकनीकों की जानकारी भी देता है।

शैक्षिक नीति एकक : यह एकक शैक्षिक नीतियों के निर्धारण, क्रियान्वयन और मूल्यांकन के कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों पर जोर देता है। यह शैक्षिक नीति के नाजुक मुद्दों पर अनुसंधान और विचारविमर्श का आरंभ करता है। यह राष्ट्रीय नीति के बेहतर क्रियान्वयन के लिए प्रशिक्षण/अभिविन्यास के कार्यक्रमों का आयोजन करता है। शिक्षा में समता और उसकी मांग के सृजन से जुड़े प्रश्नों पर उसका खास जोर होता है।

इस वर्ष इस एकक की गतिविधियां मुख्यतः दूरदराज के क्षेत्रों में शिक्षा की योजना और प्रबंध, अल्पसंख्यकों के शैक्षिक विकास, विकेंद्रित योजना और समुदाय की भागीदारी पर केंद्रित रही है।

विद्यालय और अनौपचारिक शिक्षा एकक : जिला शिक्षा अधिकारियों, वयस्क और अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय अधिकारियों तथा विद्यालय और अनौपचारिक शिक्षा की योजना और प्रशासन से जुड़े अन्य अधिकारियों की क्षमता विकास इस एकक का केंद्र रहा है। यह विद्यालयों और अनौपचारिक शिक्षा से जुड़ी विभिन्न समस्याओं और मुद्दों को उठाता है तथा उनके समाधान की वैकल्पिक रणनीतियां विकसित करने के प्रयास करता है। यह प्रमुख अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाकर उनकी व्यावसायिक योग्यता या कौशल बढ़ाने के प्रयास करता है। यह एकक अनुसंधान परियोजनाएं चलाकर विद्यालय व्यवस्था की कारगर योजना और प्रबंध के बारे में उनके ज्ञान वद्धि के प्रयास करता है। यह एकक विद्यालय शिक्षा के प्राथमिकता–प्राप्त क्षेत्रों और योजनाओं पर जोर देता है।

यह एकक अनुसंधान कार्य भी करता है तथा गुणवत्ता सुधार के लिए यह विद्यालय शिक्षा की योजना और प्रबंध संबंधी परामर्श भी प्रदान करता है।

उच्च शिक्षा एकक : उच्च शिक्षा के विकास की भविष्यमुखी योजना और प्रबंध के लिए यह एकक एक मंच प्रदान करता है। इसके लिए यह परामर्श, अनुसंधान और प्रशिक्षण की गतिविधियां चलाता है और जिन क्षेत्रों में आवश्यक हो, उनमें संस्था, राज्य और केंद्र स्तर के नीतिनिर्माताओं, योजनाकारों,

1997-98

प्रशासक और सहायक कार्मिकों को एक मंच पर लाता है। समता, उत्कृष्टता, प्रासगिकता, स्वायत्तता, जबावदेही, और प्रत्यायन को बढ़वा देने पर इस एकक का खास जोर रहा है। यह उच्च शिक्षा की योजना और प्रबंध संबंधी प्रशिक्षण, अनुसंधान और परामर्श के द्वारा मूल्यांकन, आत्म–मूल्यांकन और संस्थागत मूल्यांकन तथा स्टॉफ के विकास पर जोर देता है। 'प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण' के लिए कार्यक्रमों का आयोजन करके तथा साथ ही महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों, अकादमिक स्टाफ कालेजों के निर्देशकों और उच्च शिक्षा निर्देशकों की क्षमता विकास के कार्यक्रम चलाकर योजना और प्रबंध की क्षमताएं बढ़ाना इस एकक के प्रयासों का लक्ष्य है। यह केंद्र, राज्य, विश्वविद्यालय और महाविद्यालय स्तर के अकादमिक और गैर–अकादमिक संकायों की क्षमता बढ़ाने के कार्यक्रम भी चलाता है, प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा उनका अभिविन्यास करता है, नीतियों, कार्यक्रमों और कार्रवाई की योजनाओं से संबंधित नवीनतम विकासक्रमों से उन्हें परिचित कराता है और भारत में उच्च शिक्षा संस्थाओं की योजना और प्रबंध की आधुनिक तकनीकों से उन्हें लैस करता है।

इन सब उद्देश्यों को ध्यान में रखकर यह एकक सभी स्तरों पर कार्यरत योजनाकर्मियों और प्रशासकों की क्षमताएं विकसित करने के अलावा अनुसंधान और परामर्श के कार्य भी करता है।

प्रादेशिक प्रणाली एकक : इस एकक के प्रमुख कार्यकारी बिन्दु निम्नलिखित हैं: सभी के लिए शिक्षा के संदर्भ में विकेंद्रित और व्यष्टिस्तरीय योजना, संस्थागत योजना और मूल्यांकन, शैक्षिक कार्यक्रमों की निगरानी और उनका मूल्यांकन तथा प्रादेशिक स्तरों पर शिक्षा के सूचकों का विकास। 'सार्वभौम प्रारंभिक शिक्षा की निगरानी के लिए राष्ट्रीय प्रतिदर्शी सर्वेक्षण,' दूसरा 'अखिल भारतीय शैक्षिक प्रशासन सर्वेक्षण' और 'विद्यालय-मानचित्रण' इस एकक के प्रमुख राष्ट्रस्तरीय अध्ययन रहे हैं। इसमें केंद्र द्वारा प्रायोजित अनौपचारिक शिक्षा योजनाओं के संदर्भ में देश के शैक्षिक रूप से पिछड़े नौ राज्यों के मूल्याकन अनुसंधान को आधार बनाकर देश में अनौपचारिक शिक्षा के मूल्यांकन पर एक विस्तृत रिपोर्ट का प्रकाशन भी किया गया है। इस एकक ने राज्य सरकारो के सहयोग से जिला शिक्षा–प्रशिक्षण संस्थानों में अनेक क्षेत्र–आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी किया है।

अंतर्राष्ट्रीय एकक : विचारों और अनुभवों के आदान-प्रदान के द्वारा खासकर विकासशील देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और समझदारी की भावना को बढ़ावा देना अंतर्राष्ट्रीय एकक का उद्देश्य है। इस मकसद से यह एकक मानव संसाधन विकास के अहम विषयों और मुद्दों पर संगोष्ठियों और बैठकों का आयोजन करता है। विकासशील देशों के शैक्षिक योजनाकर्मी और प्रशासकों के दीर्घकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना इसका प्रमुख कार्यकलाप है। इस कार्यक्रमों में एक ओर शिक्षा की संरचनाओं और प्रक्रियाओं, व्यष्टिस्तरीय, मध्यस्तरीय और समष्टिस्तरीय योजनाओं के देशीकरण पर और दूसरी तरफ शैक्षिक पर्यवेक्षण, प्रशासन, प्रबंध और नेतृत्व पर जोर दिया जाता है। यह एकक विभिन्न देशों के आग्रह पर पहले से निरूपित प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाता है। यह अंतर्राष्ट्रीय तुलनात्मक शिक्षाशास्त्र के क्षेत्र में अनुसंधान और परामर्श की सेवायें भी प्रदान करता है।

संक्रियात्मक अनुसंधान और प्रणाली प्रबंधन एकक : इस एकक का गठन नीपा समीक्षा समिति की सिफारिश पर अक्टूबर 1995 में किया गया। यह एकक प्रणाली स्तर पर प्रबंध के अनेक मुद्दों को उठाता है। इनमें क्रियागत (लाजिस्टिक) प्रबंध, सूचना प्रणालियां, नियंत्रण की प्रणालियां, कप्यूटर के व्यवहार, शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान, परियोजनाओं का निरूपण, निगरानी और क्रियान्वयन, निर्णय में सहायता की प्रणालियां आदि शामिल हैं। यह एकक विशेष रूप से राज्य/जिला स्तर के उपयोगकर्ताओं के लिए कंप्यूटर के उपयोग की क्षमताओं के विकास पर तथा सूचना प्रणालियों के विकास और क्रियान्वयन के संबंध में पेशेवर स्टाफ के प्रशिक्षण पर जोर देता है। यह एकक इन दिनों जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के लिए शैक्षिक प्रबंध सूचना प्रणाली के निरूपण और क्रियान्वयन में तकनीकी और वृत्तिक सहयोग प्रदान कर रहा है। यह अनुसंधान की परियोजनाओं, प्रायोगिक परियोजनाओं, क्षेत्र–आधारित अध्ययनों, प्रमुख अध्ययनों और क्रियात्मक अनुसंधान में भी संलग्न है।

माननीय डा. मुरली मनोहर जोशी,केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री
विद्या : एक अंत:स्थित निधि पर आयोजित एशियाई क्षेत्रीय सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर
दीप प्रज्वलित करते हुए

माननीय डॉ. कर्णसिंह, सदस्य,इक्कीसवीं सदी की शिक्षा पर यूनेस्को अंतर्राष्ट्रीय आयोग,
विद्या : एक अंत:स्थित निधि पर आयोजित एशियाई क्षेत्रीय सम्मेलन के दौरान नीपा के निदेशक से
बातचीत करते हुए

अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम के भागीदार, नीपा संकाय और स्टाफ के साथ

राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम के भागीदार, नीपा संकाय और स्टाफ के साथ

1997-98

अकादमिक सहायता एकक

पुस्तकालय और प्रलेखन केंद्र : पुस्तकालय शैक्षिक योजना और प्रशासन संबंधी नवीनतम और अधुनातन सामग्रियों का संग्रह करता है और उनके उपयोग की सुविधाएं प्रदान करता है। सूचनाओं का प्रसार प्रलेखन सूचना केंद्र द्वारा किया जाता है। पुस्तकालय के पास कोई 50244 पुस्तकें हैं और वह 350 पत्रिकाएं भी मंगाता है। यहां पुस्तकों और लेखों की एक कंप्यूटरीकृत सूची भी है। पुस्तकालय और प्रलेखन केंद्र ने जिला शिक्षा–प्रशिक्षण संस्थानों के पुस्तकालयों की योजना और प्रबंध पर प्रशिक्षण के कार्यक्रम भी आयोजित किए हैं।

पुस्तकालय डेलनेट के सदस्य के रूप में दिल्ली के 65 पुस्तकालयों से फोन द्वारा जुड़ा हुआ है। सकाय को इलेक्ट्रानिक मेल की सेवा भी प्रदान की जाती है जिससे वे देश–विदेश से अपनी डाक मंगा और भेज सकते हैं।

प्रकाशन एकक : अनुसंधान के परिणामों का प्रसार स्वयं अनुसंधान जितना अहम होता है। कार्यपत्रों और सामयिक आलेखों के जरिये भी अनुसंधान का प्रसार किया जाता है। प्रसार का एक और साधन विनिबंध और अनुलेखित पांडुलिपियां हैं। यह एकक कार्यपत्रों, सामयिक आलेखों, जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन (अंग्रेजी) और 'परिप्रेक्ष्य' (हिंदी) एनट्रिप न्यूजलेटर, शैक्षिक योजना और प्रशासन संबंधी पुस्तकों और अनुसंधान की रिपोर्टों का प्रकाशन भी करता है।

हिंदी कक्ष : यह कक्ष प्रशिक्षण सामग्रियों के हिंदी अनुवाद के साथ–साथ राष्ट्रीय नीति के अनुसार प्रशासन और संकाय को राजभाषा नीति के क्रियान्वयन में सहयोग देता है।

मानचित्रण कक्ष : यह कक्ष आंकड़ों की सचित्र प्रस्तुति, प्रशिक्षण, प्रकाशन और प्रदर्शन के लिए मानचित्रों और चार्टों आदि की सुविधाएं प्रदान करता है।

रिप्रोग्राफी कक्ष : संस्थान की अकादमिक आवश्यकताएं पूरी करने के लिए यह कक्ष प्रशिक्षण सामग्रियों, शोधपत्रों और अनुलेखित सामग्रियों की प्रतियां तैयार करने में सहायता देता है।

प्रशासन और वित्त

प्रशासन : प्रशासन की व्यवस्था में सामान्य, अकादमिक और कार्मिक प्रशासन आते हैं। 31 मार्च 1998 तक संस्थान की कुल स्वीकृत सदस्य संख्या 181 थी। इसमें अकादमिक और प्रशासनिक, दोनों प्रकार के कार्मिक आते हैं। इनके अलावा विभिन्न परियोजनाओं में उनकी अपनी–अपनी अवधियों तक के लिए नियुक्त 24 परियोजनाकर्मी भी थे।

वित्त : इस साल संस्थान को कुल 425.31 लाख रुपये का अनुदान मिला। (गैर–योजना मद में 116.98 लाख और योजना मद में 308.33 लाख) साल के आरंभ में संस्थान के पास योजना और गैर–योजना, दोनों मदों में 8.19 लाख रुपये शेष थे। साल के दौरान कार्यालय और छात्रावास से 53.96 लाख रुपए की प्राप्ति हुई। योजना और गैर–योजना मदों में उस साल का व्यय 376.97 लाख रुपये था।

दूसरे संगठनों द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों/अध्ययनों की मद में इस साल के दौरान संस्थान के पास 57.40 लाख रुपये बकाया थे और 132.70 लाख रुपए की अतिरिक्त प्राप्ति हुई। प्रायोजित कार्यक्रमों/अध्ययनों पर साल में कुल 105.98 लाख रुपये खर्च किए गए।

परिसर की सुविधाएं : संस्थान के पास एक चार–मंजिल कार्यालय, सात मंजिलो में 48 कमरों वाला एक छात्रावास और एक आवास–क्षेत्र है। इस आवास क्षेत्र में टाइप I के 16 टाइप II से V तक के 8-8 क्वार्टर और एक निदेशक आवास हैं। छात्रावास भवन के विस्तार और उन्नयन के लिए निर्माण कार्य कमोबेश पूरा हो चुका है। इसमें वार्डन का आवास, अतिथि संकाय के निवास की सुविधा, कुछ अतिरिक्त ब्लाक, भोजन कक्ष का विस्तार आदि शामिल हैं।

1997-98

अध्याय 2

प्रशिक्षण

प्रशिक्षण, संस्थान के मुख्य कार्यकलापों में से एक है। यह शैक्षिक योजना और प्रशासन में लगे वरिष्ठ सरकारी शिक्षा अधिकारियों तथा विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के प्रशासकों के लिए अभिविन्यास और प्रशिक्षण के कार्यक्रमों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और ऐसे ही दूसरे कार्यक्रम आयोजित करता है। संस्थान दूसरे देशों के प्रमुख शिक्षाकर्मियों के लिए भी प्रशिक्षण के कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

दृष्टिकोण और मुख्य बल

प्रशिक्षण के कार्यक्रमों की रूपरेखा क्षेत्र के नए विकासक्रमो से उत्पन्न आवश्यकताओं के अनुसार बनाई जाती है। कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाते वक्त भागीदारों और निर्णयकर्ताओं द्वारा पहचानी गई प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं पर भी विचार किया जाता है। कार्यक्रमों के ब्यौरो पर विचारविमर्श के लिए कार्यबल गठित किए जाते हैं।

इसके अलावा संस्थान के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सूची बनाते समय प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों पर भी ध्यान दिया जाता है। मसलन जिला स्तर पर योजना, आदिवासी क्षेत्रों में संस्थाओं और अल्पसंख्यक प्रबंधवाली संस्थाओं की योजना और प्रबंध, शैक्षिक योजना और प्रबंध में कंप्यूटरों की भूमिका आदि। प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम वाले जिलों में कार्यरत शिक्षाकर्मियो के लिए भी कार्यक्रम आयोजित किए गए।

संस्थान विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सगठनों के सहयोग से विकासशील देशों के शिक्षाकार्मियों के लिए प्रशिक्षण के कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और संगोष्ठियों का आयोजन करके अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी केंद्रीय भूमिका निभाता आ रहा है।

संस्थान धीरे–धीरे अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण पर तथा राज्य और क्षेत्र स्तर की संस्थाओं और विश्वविद्यालयों के शिक्षाशास्त्र विभागों से नेटवर्किंग पर जोर दे रहा है।

प्रशिक्षण सामग्री

नीपा का संकाय प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए अनुसंधान पर आधारित सामग्रियों की तैयारी में सक्रिय रहा है। कार्यक्रमों के दौरान यह सामग्री भागीदारों के लिए बुनियादी लेखों का काम करती हैं। इन सामग्रियों के साथ सबंधित विषयों पर प्रकाशित साहित्य दिया जाता है।

मूल्यांकन

प्रशिक्षण के हर कार्यक्रम का औपचारिक मूल्यांकन किया जाता है। इसका पहला चरण हर प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में आता है जब एक संरचनाबद्ध प्रपत्र पर हर भागीदार से कार्यक्रम का मूल्यांकन करने को कहा जाता है। लंबी अवधि के कार्यक्रमों में इस मूल्यांकन से पहले एक–दो मध्यावधि मूल्यांकन किए जाते हैं।

भागीदारी

वर्ष 1997-98 में संस्थान ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कुल 50 प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, सम्मेलनों और डिप्लोमा कार्यक्रमों का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों में कुल 1885 व्यक्तियों ने भाग लिया। इनमें से 1713 (1294 भागीदार राष्ट्रीय कार्यक्रमों में और 419 भागीदार अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में) भारत से थे और 172 दूसरे देशों के थे।

राष्ट्रीय स्तर : समीक्षाधीन वर्ष में संस्थान ने 43 डिप्लोमा कार्यक्रमों/अभिविन्यास व प्रशिक्षण कार्यक्रमों/कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, सम्मेलनों आदि का आयोजन किया। इनमें 1571 भागीदार विभिन्न राज्यों और संघीय क्षेत्रों के शिक्षा विभागों से तथा 142 केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों और संगठनों से जुड़े हुए थे। कार्यक्रमों की सूची संलग्न I में दी गई है।

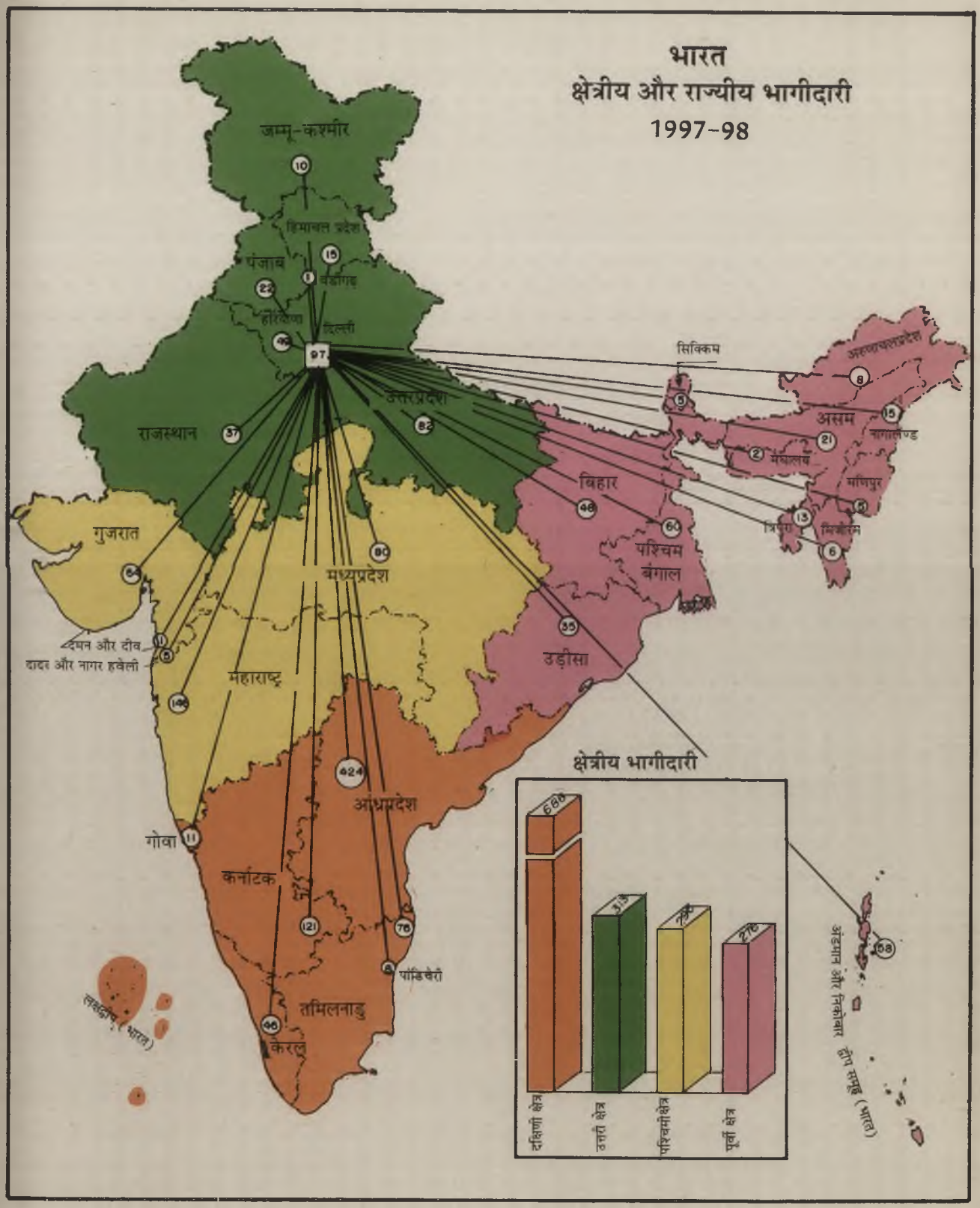

भारत
क्षेत्रीय और राज्यीय भागीदारी
1997-98
जम्मू-कश्मीर
10
हिमाचल प्रदेश
15
पंजाब
22
चंडीगढ़
1
हरियाणा
दिल्ली
97
राजस्थान
37
उत्तरप्रदेश
82
सिक्किम
5
अरुणाचलप्रदेश
8
असम
21
नागालैण्ड
15
मेघालय
2
मणिपुर
5
त्रिपुरा
13
मिजोरम
6
बिहार
48
पश्चिम बंगाल
60
उड़ीसा
35
गुजरात
64
मध्यप्रदेश
80
दमन और दीव
11
दादर और नागर हवेली
5
महाराष्ट्र
आंध्रप्रदेश
424
गोवा
11
कर्नाटक
121
तमिलनाडु
76
पांडिचेरी
8
केरल
46
लक्षद्वीप (भारत)
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह (भारत)
58
क्षेत्रीय भागीदारी
276
दक्षिणी क्षेत्र
उत्तरी क्षेत्र
पश्चिमीक्षेत्र
पूर्वी क्षेत्र

श्रेणीवार कार्यक्रम
कार्यक्रमों की संख्या
भागीदारों की संख्या
कार्यक्रमों की संख्या और भागीदारों की संख्या
600
400
200
0
शैक्षिक योजना और प्रशासन में राष्ट्रीय डिप्लोमा
शैक्षिक योजना और प्रशासन में अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा
योजना और प्रबंध में विद्यालयों के प्रधानाचार्यों का प्रशिक्षण
उच्च शिक्षा की योजना और प्रबंध
डी आई एस ई / ई एम आई एस का कार्यान्वयन
आदिवासी शिक्षा की योजना और प्रबंध
परिमाणात्मक तकनीकें और जनांकीय दबाव
वित्तीय प्रबंध और संसाधनों का उपयोग
आश्रम विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के लिए योजना और प्रबंध
अल्पसंख्यक प्रबंधित संस्थानों की योजना और प्रबंध
विद्यालय मानचित्रण और व्यष्टि स्तरीय योजना
शिक्षा में जिला योजना
कंप्यूटर अनुप्रयोग की योजना और प्रबंध
अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम
अन्य कार्यक्रम
डिप्लोमा कार्यक्रम
शैक्षिक योजना और प्रशासन पर विषयवार कार्यक्रम

1997-98

इस वर्ष आयोजित कार्यक्रम दो प्रकार के थे: (अ) डिप्लोमा कार्यक्रम और (ब) शैक्षिक योजना और प्रशासन पर सामान्य या विषयवार कार्यक्रम तथा राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर संक्षिप्त अवधि के विषय केंद्रित कार्यक्रम। संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रम तालिका 1 में दिए गए हैं।

तालिका 1

1997-98 में संस्थान द्वारा आयोजित श्रेणीवार कार्यक्रम

	कार्यक्रमों की श्रेणी	कार्यक्रमों की संख्या	अवधि (दिन)	भागीदारों की संख्या
	डिप्लोमा कार्यक्रम			
(अ)	राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम *	2	149	46
(ब)	अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम *	2	182	58
	शैक्षिक योजना और प्रशासन पर विषयवार कार्यक्रम			
	विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के लिए योजना और प्रबंध में प्रशिक्षण	1	12	42
	आदिवासी शिक्षा की योजना और प्रबंध	7	9	350
	आश्रम विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के प्रशिक्षण की योजना और प्रबंध	1	12	30
	अल्पसंख्यक प्रबंधित संस्थाओं की योजना और प्रबंध	1	12	34
	उच्च शिक्षा की योजना और प्रबंध	5	45	136
	कंप्यूटर अनुप्रयोग की योजना और प्रबंध	2	13	36
	शैक्षिक योजना की परिमाणात्मक तकनीकें	2	23	87
	शै प्र सू प्रणाली का क्रियान्वयन	11	28	111
	वित्तीय प्रबंध और संसाधनों का उपयोग	3	15	59
	विद्यालय मानचित्रण और व्यष्टिस्तरीय योजना	2	7	73
	जिला शैक्षिक योजना	2	17	51
	अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम	5	81	533
	अन्य कार्यक्रम	4	15	239
	योग	**50**	**620**	**1885**

* पिछले वर्ष से जारी दो डिप्लोमा कार्यक्रम (एक राष्ट्रीय और एक अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम) सम्मिलित हैं।

1997-98

संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में देश के लगभग सभी राज्यों और (लक्षद्वीप को छोड़कर) सभी संघीय क्षेत्रों ने भाग लिया। राज्यवार भागीदारी तालिका 2 में दिखाई गई है।

तालिका 2
राज्यवार भागीदारी

क्रम संख्या	राज्य/संघीय क्षेत्र	भागीदारों की संख्या
1	आंध्रप्रदेश*	424
2	अरुणाचलप्रदेश*	8
3	असम*	21
4	बिहार*	48
5	गोवा	11
6	गुजरात	64
7	हरियाणा	49
8	हिमाचलप्रदेश	15
9	जम्मू–कश्मीर*	10
10	कर्नाटक	121
11	केरल	46
12	मध्यप्रदेश*	80
13	महाराष्ट्र	146
14	मणिपुर	5
15	मेघालय	2
16	मिजोराम	6
17	नागालैंड	15
18	उड़ीसा*	35
19	पंजाब	22
20	राजस्थान*	37
21	सिक्किम	5
22	तमिलनाडु	76
23	त्रिपुरा	13
24	उत्तरप्रदेश*	82
25	पश्चिम बंगाल*	60
संघीय क्षेत्र		
26	अंडमान–निकोबार द्वीप समूह	58
27	चंडीगढ़	1
28	दादरा व नागर हवेली	5
29	दमन और दिव	1
30	दिल्ली	97
31	लक्षद्वीप	–
32	पांडिचेरी	8
33	भारत सरकार व अन्य संगठन	142
योग		**1713**

लगभग 42 प्रतिशत भागीदार शैक्षिक रूप से पिछड़े दस राज्यों से आए – आंध्रप्रदेश (424), अरुणाचलप्रदेश (8), असम (21), बिहार (48), जम्मू–कश्मीर (10), मध्यप्रदेश (80), उड़ीसा (35), राजस्थान (37), उत्तरप्रदेश (82) और पश्चिम बंगाल (60)।

1997-98

भागीदारी का प्रकार और स्तर : विभिन्न कार्यक्रमों के भागीदारों का स्तरों के आधार पर एक मिला–जुला समूह था। इनमें राज्यों, संघ क्षेत्रों और जिला स्तर के कार्मिक, आदिवासी कल्याण अधिकारी और विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों जैसे संस्था–प्रमुख शामिल थे। इसी तरह उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालयों के प्राचार्यों और विश्वविद्यालयों के वरिष्ठ प्रशासकों ने भी भाग लिया। प्रकार और स्तर के अनुसार भागीदारों के ब्यौरे तालिका 3 में देखे जा सकते हैं।

तालिका 3

संस्थान द्वारा 1997-98 में आयोजित अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों और सम्मेलनों आदि में स्तरवार भागीदारी

स्तर	भागीदारों की संख्या
विद्यालयों के प्रधानाध्यापक	143
आश्रम विद्यालयों के प्रमुख	30
आदिवासी शिक्षा के प्रमुख	350
अल्पसंख्यक प्रबंधवाली संस्थाओं के प्रमुख	34
जिला शिक्षा अधिकारी	35
जि शि प्र संस्थाओं/राज्य शै अ प्र परिषदों/जि प्रा शि कार्यक्रम के कार्मिक	195
वरिष्ठ शैक्षिक प्रशासक	289
महाविद्यालयों के प्राचार्य	109
विश्वविद्यालयों के प्रशासक/वरिष्ठ अकादमिक	181
शै प्र सू प्रणाली/जि प्रा शि कार्यक्रम से जुड़े अधिकारी	111
अन्य	236
योग	**1713**

1997-98

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर

इस वर्ष संस्थान ने 7 कार्यक्रम आयोजित किए। इनमें 2 डिप्लोमा कार्यक्रम थे (जिनमें एक अभी चल रहा था), श्रीलंका के वरिष्ठ विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के लिए एशियाई विकास बैंक द्वारा प्रायोजित 3 प्रशिक्षण कार्यक्रम थे, अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक योजना संस्थान के सहयोग से एक उपक्षेत्रीय गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम था, और "भारत में शिक्षाः अगली सहस्त्राब्दी" पर एक विश्व सम्मेलन था। 172 व्यक्तियों की देशवार भागीदारी तालिका 4 में दिखाई गई है।

तालिका 4

1997-98 में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में देशवार भागीदारी

देश का नाम	भागीदारों की संख्या
आस्ट्रेलिया	1
बंगलादेश	4
भूटान	9
बोतस्वाना	1
कनाडा	1
इरीट्रिया	8
घाना	1
यूनान	1
गुयाना	1
हांगकांग (चीन)	1
ईरान	1
इराक	4
जापान	1
केनिया गणराज्य	1
मालदीव	5
मारीशस	6
म्यांमार	2
नौरू गणराज्य	1
नेपाल	9
न्यूजीलैंड	1
नाइजीरिया	2
पाकिस्तान	2
पपुआ न्यू गिनी	1
फिलीपीन	2
दक्षिण अफ्रीका	6
श्रीलंका	81
तंजानिया	2
तुर्की	5
ग्रेट ब्रिटेन	5
संयुक्त राज्य अमेरिका	3
यूगांडा	1
वियतनाम गणराज्य	2
जांबिया	1
योग	**172**

क्षेत्रवार और विषयवार कार्यक्रम

संस्थान ने चार डिप्लोमा कार्यक्रमों (2 राष्ट्रीय और 2 अंतर्राष्ट्रीय जिनमें दो पिछले वर्ष से चल रहे थे) 29 प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रमों, 12 कार्यशालाओं, 1 संगोष्ठी, 2 सम्मेलनों और 2 बैठकों का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों का संक्षित विवरण नीचे दिया गया है।

शैक्षिक योजना और प्रशासन का राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम (डेपा) : वर्ष 1997-98 में संस्थान ने सत्रहवें डिप्लोमा कार्यक्रम का दूसरा और तीसरा चरण पूरा किया। यह कार्यक्रम अक्तूबर 1996 में शुरू हुआ था। क्रमशः जनवरी और अप्रैल 1997 में पहले और दूसरे चरणों का समापन हुआ। अठारहवां डिप्लोमा कार्यक्रम 10 नंवबर 1997 को शुरू हुआ। इसके पहले और दूसरे चरण क्रमशः फरवरी और मई 1998 में पूरे हुए।

ये कार्यक्रम व्याख्यान और विचारविमर्श, पैनल विचारविमर्श,

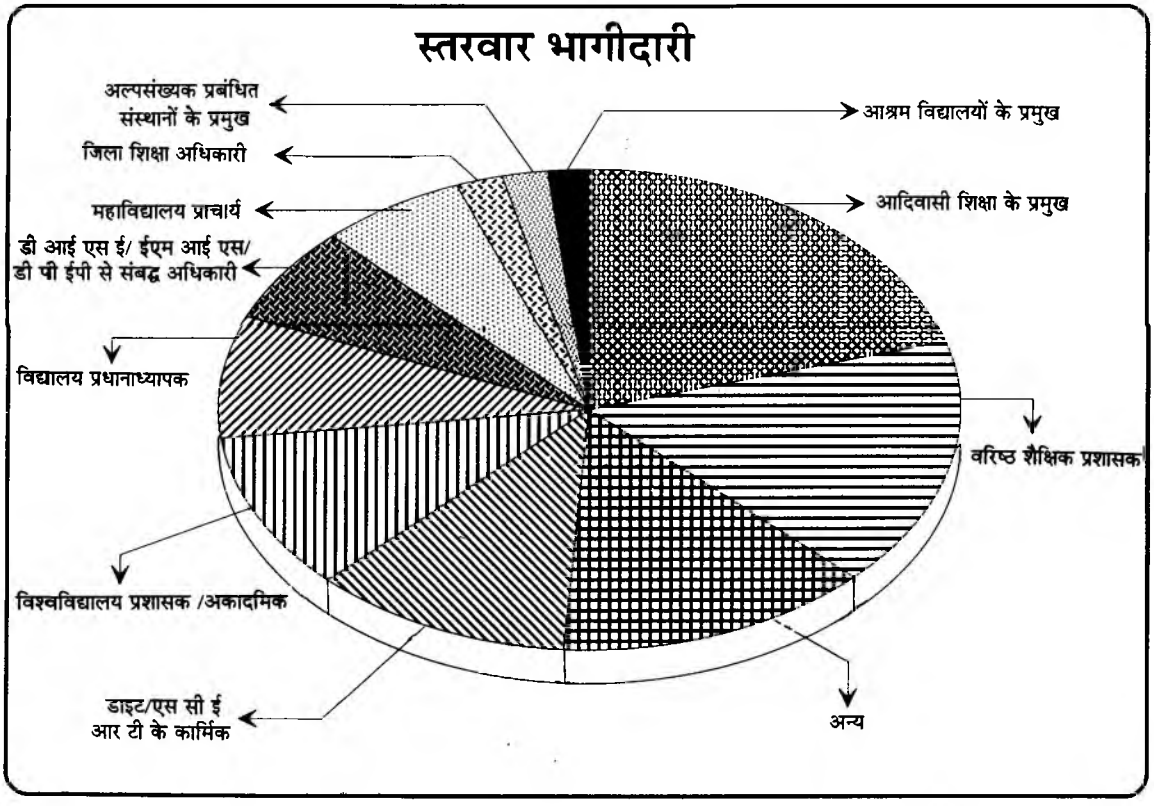
स्तरवार भागीदारी
अल्पसंख्यक प्रबंधित संस्थानों के प्रमुख
जिला शिक्षा अधिकारी
महाविद्यालय प्राचार्य
डी आई एस ई/ ईएम आई एस/ डी पी ईपी से संबद्ध अधिकारी
विद्यालय प्रधानाध्यापक
विश्वविद्यालय प्रशासक /अकादमिक
डाइट/एस सी ई आर टी के कार्मिक
आश्रम विद्यालयों के प्रमुख
आदिवासी शिक्षा के प्रमुख
वरिष्ठ शैक्षिक प्रशासक
अन्य

अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी: 1997-98

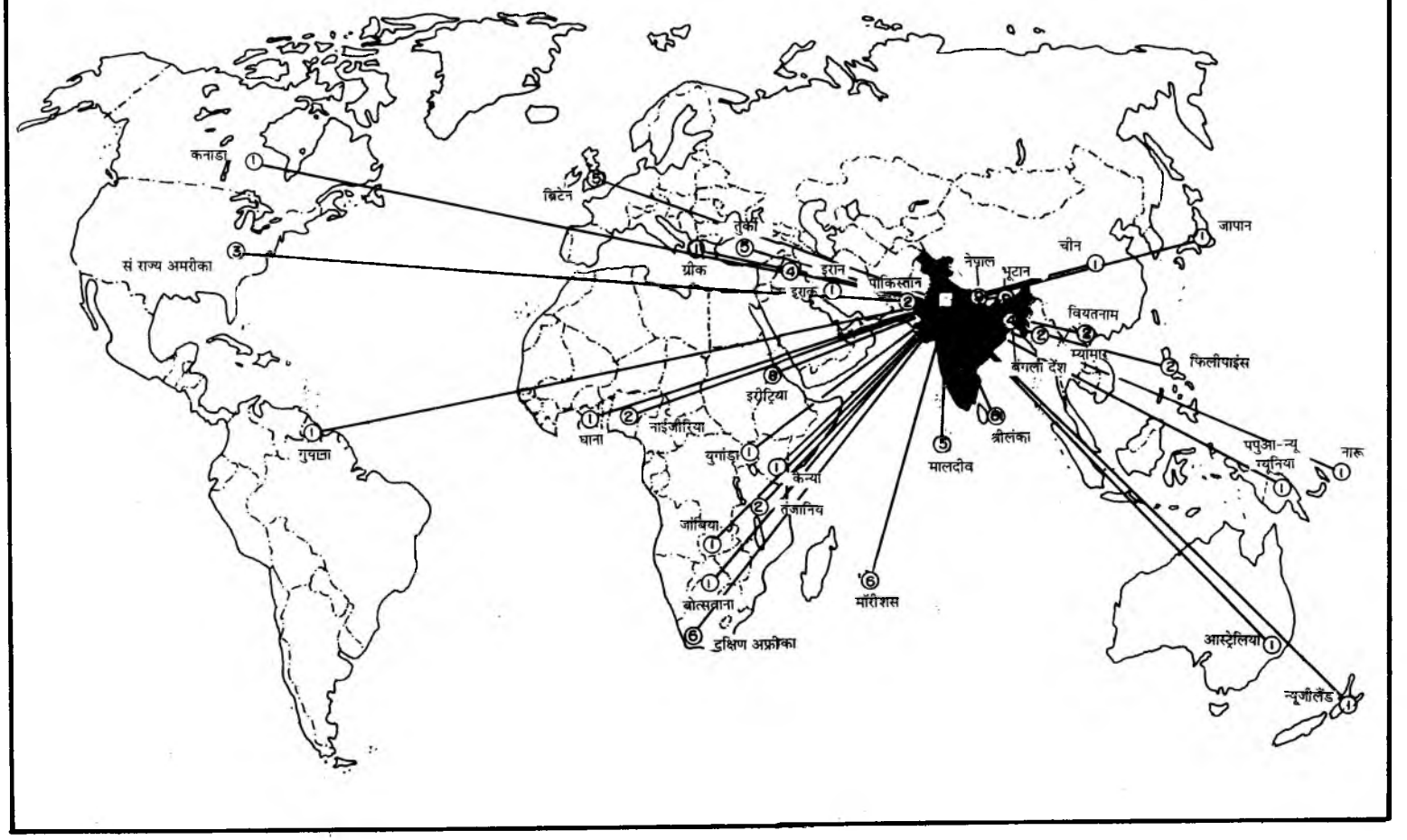

1997-98

केस अध्ययन, सिंडिकेट विधि, अनुकरण कार्य, भूमिका–निर्वाह, इन–बास्केट विधि और पहचानशुदा विषयों से संबंधित सामूहिक विचारविमर्श पर आधारित थे। व्यावहारिक कार्यों, पुस्तकालय पर निर्भर कार्यों, और कुछ महत्वपूर्ण शिक्षा संस्थाओं के भ्रमण के लिए भी पर्याप्त समय दिया गया। इसके अलावा प्रत्येक भागीदार को सेवाकालीन प्रशिक्षण भी दिया गया जिसमें तीन माह की अवधि तक जिला शिक्षा अधिकारियों के कार्यस्थल पर परियोजना कार्य की निगरानी भी शामिल थी। उन्हें टाइप किए हुए 15 फुलस्केप कागजों के अंदर अपनी परियोजना की रिपोर्ट का सारसंक्षेप भी प्रस्तुत करने को कहा गया।

तालिका 5

17 वें और 18वें डिप्लोमा कार्यक्रमों में राज्यवार भागीदारी

राज्य	17वां डिप्लोमा	18वां डिप्लोमा	योग
असम	3	–	3
बिहार	3	–	3
गुजरात	3	4	7
हरियाणा	–	4	4
जम्मू–कश्मीर	–	1	1
कर्नाटक	2	1	3
केरल	3	1	4
मध्यप्रदेश	2	–	2
मिजोरम	1	–	1
नागालैंड	2	–	2
पंजाब	–	2	2
राजस्थान	3	–	3
तमिलनाडु	1	1	2
त्रिपुरा	3	–	3
उत्तरप्रदेश	2	2	4
अंडमान–निकोबार	1	–	1
दिल्ली	–	1	1
योग	**29**	**17**	**46**

18 वें डिप्लोमा के भागीदारों के लिए 2-12 जनवरी 1998 के दौरान उड़ीसा के एक अंतर्राज्य अध्ययन भ्रमण की व्यवस्था की गई। इस भ्रमण में राज्य और जिला स्तर के संगठनों तथा औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के संस्थागतस्तर के प्रयासों का अवलोकन शामिल था। इस भ्रमण में भागीदार उड़ीसा के तीन जिलों–धेनकेनाल, खुरडा और पुरी में गए। इन दोनों पाठ्यक्रमों में जिला स्तर के तथा राज्य शै अ प्र परिषदों और जि शि प्र संस्थानों के 46 अधिकारियों ने भाग लिया। राज्यवार भागीदारी तालिका 5 में दिखाई गई है।

शैक्षिक योजना और प्रशासन का अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा (आई-डेपा) : नीपा में 1985 से ही हर वर्ष विकसशील देशों के शिक्षाकर्मियों के लिए शैक्षिक योजना और प्रशासन का एक छः माह का अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम चलाया जा रहा है। 13 वां आई–डेपा कार्यक्रम फरवरी 1997 में शुरू होकर अगस्त 1997 में पूरा हुआ। 14 वां आई–डेपा कार्यक्रम फरवरी 1998 में शुरू हुआ। इस कार्यक्रम के पहले और दूसरे चरण क्रमशः अप्रैल और जुलाई 1998 में पूरे हुए।

तालिका 6

13 वें और 14वें अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रमों में देशवार भागीदारी

देश का नाम	12वां डिप्लोमा	13वां डिप्लोमा	योग
बंगलादेश	1	1	2
भूटान	4	1	5
बोत्सवाना	1	–	1
इरीट्रिया	4	4	8
घाना	1	–	1
गुयाना	1	–	1
ईरान	–	1	1
इराक	3	1	4
केनिया गणराज्य	1	–	1
मालदीव	–	3	3

क्रमशः

1997-98

देश का नाम	13वां डिप्लोमा	14वां डिप्लोमा	योग
मारीशस	3	3	6
म्यांमार	–	2	2
नौरू गणराज्य	1	–	1
नेपाल	–	6	6
नाइजीरिया	2	–	2
पपुआ न्यू गिनी	1	–	1
फिलीपीन	2	–	2
दक्षिण अफ्रीका	2	–	2
श्रीलंका	3	–	3
तंजानिया	2	–	2
यूगांडा	1	–	1
वियतनाम गणराज्य	–	2	2
जांबिया	–	1	1
योग	**33**	**25**	**58**

पाठ्यक्रम की संरचना के दो प्रमुख घटक थे : (अ) पहला चरण जो नीपा में तीन माह के गहन पाठ्यचर्यात्मक कार्य पर आधारित था, और (ब) भागीदार के अपने प्रयास से उसी के देश में तीन माह की क्षेत्र अनुसंधान परियोजना। कार्यक्रम के पद्धतिशास्त्र में सिद्धांत और व्यवहार के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। इसमें मोटे तौर पर व्याख्यान और विचार–विमर्श, अनुकरण और व्यावहारिक कार्य, भूमिका निर्वाह, केसों पर बहस, प्रबंध क्रीड़ा, खोजी सम्मेलन, प्रदर्शन और सामूहिक विचार विमर्श शामिल होते हैं। इसके अलावा भागीदारों को प्रोत्साहन देने के लिए पैनल विचार–विमर्श और भागीदारों की संगोष्ठियां इस पाठ्यक्रम की पद्धति की प्रमुख विशेषताएं हैं। कार्यक्रम में व्यष्टिगत स्तर पर अकादमिक कार्यों, शैक्षिक/सांस्कृतिक क्षेत्र–भ्रमण, क्षेत्र से शैक्षिक संबद्धताओं और समृद्धकारी व्यख्यानों पर भी जोर दिया जाता है। पूरे कार्यक्रम को समेटने वाले अन्य प्रमुख क्षेत्र के अलावा व्यष्टिगत स्तर पर क्षेत्र से शैक्षिक संबद्धताएं आई–डेपा के भागीदारों के कार्यों का एक प्रमुख घटक है। इन संबद्धताओं में महाराष्ट्र और पंजाब की संस्थाओं के दौरे और उनसे संबद्धता शामिल थे। ऐसे हर दौरे के बाद पहले से नामजद एक भागीदार/क्षेत्र सलाहकार ने एक विशेष संस्था के शैक्षिक भ्रमण पर एक रिपोर्ट पेश की। 23 विकासशील देशों से 58 अधिकारियों ने इन दोनों आई–डेपा कार्यक्रमों में भाग लिया। देशवार भागीदारी तालिका 6 में दिखाई गई है।

विद्यालय-प्रमुखों के प्रशिक्षण की योजना और प्रबंध : विद्यालय प्रमुखों के प्रशिक्षण की योजना और प्रबंध पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के 42 प्रमुखों ने भाग लिया।

आदिवासी शिक्षा की योजना और प्रबंध : नीपा ने आदिवासी शिक्षा की योजना और प्रबंध के क्षेत्र में आदिवासी शिक्षा संस्थाओं के प्रमुखों के लिए 7 कार्यक्रम चलाए। इनमें 350 व्यक्तियों ने भाग लिया।

आश्रम विद्यालयों के प्रमुखों के लिए योजना और प्रबंध : इस साल संस्थान ने आश्रम विद्यालयों के प्रमुखों के लिए योजना और प्रबंध पर एक कार्यक्रम चलाया। इसमें आश्रम विद्यालयों के 30 प्रमुख शामिल हुए।

अल्पसंख्यक प्रबंधवाली संस्थाओं की योजना और प्रबंध : संस्थान ने अल्पसंख्यक प्रबंधवाली संस्थाओं की योजना और प्रबंध पर उनके प्रमुखों के लिए एक कार्यक्रम चलाया। इन संस्थाओं के 34 अधिकारी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

उच्च शिक्षा की योजना और प्रबंध : नीपा ने इस साल उच्च शिक्षा के क्षेत्र में दो अभिविन्यास कार्यक्रमों, एक कार्यशाला और दो बैठकों का आयोजन किया। महाविद्यालयों के प्राचार्यों और अकादमिक स्टाफ कालेजों के निदेशकों को मिलाकर इन कार्यक्रमों में 136 व्यक्तियों ने भाग लिया।

कंप्यूटरों के उपयोग की योजना और प्रबंध : वि अ आयोग और राज्य स्तर के अधिकारियों के लिए कंप्यूटरों के अपयोग पर दो कार्यक्रम चलाए गए। इनमें 36 भागीदार शामिल हुए।

शैक्षिक योजना की परिमाणात्मक तकनीकें : राज्य स्तर के अधिकारियों के लिए शैक्षिक योजना की परिमाणात्मक तकनीकों

1997-98

पर दो कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें 87 व्यक्तियों ने भाग लिया।

DISE/EMIS का क्रियान्वयन : जि प्रा शि कार्यक्रम–2 वाले राज्यों में DISE/EMIS के क्रियान्वयन के लिए नीपा ने उड़ीसा, आंध्रप्रदेश, हिमाचलप्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, हरियाणा, केरल, बिहार, तमिलनाडु और उत्तरप्रदेश के लिए 11 प्रशिक्षण कार्यक्रमों/कार्यशालाओं का आयोजन किया। इनमें राज्य स्तर के 111 अधिकारियों ने भाग लिया।

वित्तीय प्रबंध और संसाधनों का उपयोग : वित्तीय प्रबंध और संसाधनों के उपयोग के क्षेत्र में तीन कार्यक्रम कर्नाटक के विश्वविद्यालयों के अधिकारियों और विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के लिए चलाए गए। इनमें 59 भागीदार शामिल हुए।

विद्यालय मानचित्रण और व्यष्टिस्तरीय योजना : विद्यालय मानचित्रण और व्यष्टिस्तरीय योजना के क्षेत्र में दो कार्यक्रम चलाए गए। इनमें 73 अधिकारियों ने भाग लिया।

जिला शैक्षिक योजना : देश भर के जिला स्तर के अधिकारियों और जि शि प्र संस्थानों की योजना और प्रबंध शाखाओं के अधिकारियों के लिए नीपा ने जिला शैक्षिक योजना पर दो कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों में 51 भागीदार शामिल हुए।

अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम : नीपा ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कुल 5 प्रशिक्षण कार्यक्रमों/सम्मेलनों का आयोजन किया: श्रीलंका के माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के लिए एशियाई विकास बैंक द्वारा प्रायोजित तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम, बुनियादी शिक्षा के पद्धतिशास्त्रीय पक्षों की योजना में प्रयुक्त सूचकों और तकनीकी साधनों के उपयोग पर अं शै यो संस्थान के सहयोग से एक उपक्षेत्रीय गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, और भारत में शिक्षा: अगली सहस्त्राब्दी विषय पर एक सम्मेलन। इन कार्यक्रमों में 533 अधिकारी शामिल हुए। इनमें से 419 भागीदार भारत के थे और 114 दूसरे देशों के थे।

अन्य कार्यक्रम : नीपा ने सलवान शिक्षा ट्रस्ट वाले विद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए योजना और प्रबंध पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम, सार्वभौम प्रारंभिक शिक्षा के विशेष संदर्भ मे शिक्षा पर जनांकीय दबाव पर एक कार्यक्रम, शिक्षा और रोजगार के संबंधों तथा व्यवसायीकरण पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा शैक्षिक योजना और प्रबंध पर एक सम्मेलन का आयोजन किया। इन चार कार्यक्रमों में 239 अधिकारियों ने भाग लिया।

सभी डिप्लोमा कार्यक्रम, अभिविन्यास और प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, सम्मेलनों आदि की विस्तृत रिपोर्टें संस्थान के पुस्तकालय/प्रलेखन केंद्र में उपलब्ध हैं।

1997-98

अध्याय 3

अनुसंधान और प्रकाशन

अनुसंधान

नीपा शैक्षिक योजना और प्रशासन के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान को आयोजित करने, सहायता देने, प्रोत्साहन देने और उसका समन्वय करने में सक्रिय है। इस अनुसंधान का चरित्र बहुशास्त्रीय होता है और इसमें शैक्षिक योजना और प्रशासन के सिद्धांतों, नीतियों, प्रासंगिक विधियों, तकनीकों और प्रक्रियाओं पर खास जोर दिया जाता है।

नीपा की ओर से संकाय की शोध परियोजनाओं के लिए धन देकर दूसरे संगठनों की शोध परियोजनाएं लेकर तथा पहचानशुदा प्राथमिकता–प्राप्त क्षेत्रों में शोध के लिए विशेषज्ञों और संस्थाओं को वित्तीय सहायता देकर अनुसंधान को प्रोत्साहन दिया जाता है।

नीपा द्वारा आयोजित और सहायता प्राप्त अनुसंधान में सैद्धांतिक और अनुभवाश्रित मुद्दों का समन्वय होता है। संस्थान के शोधकार्य नीतियों और योजनओं के निरूपण के लिए बराबर ठोस अनुभवाश्रित और वैश्लेषिक आधार तैयार करने के प्रयास करते हैं। प्रशिक्षण के विभिन्न कार्यक्रमों के लिए भी ये महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान करते हैं।

समीक्षाधीन काल में 5 शोध अध्ययन पूरे हुए जबकि नए अध्ययनों समेत 15 अध्ययन जारी थे।

पूरे किए गए अध्ययन

1. प्रावधान और कारगुजारी : केरल के मल्लपुरम जिले के प्राथमिक विद्यालयों का अध्ययन

इस अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार थे :

अ) विभिन्न प्रखंडों में प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति और उनके कार्यों का विश्लेषण करना;

ब) विद्यालयों में पठन–पाठन की दशाओं को स्पष्ट करना;

स) विभिन्न प्रखंडों और विद्यालयों के बीच शिक्षार्थियों की उपलब्धियों के स्तरों में अंतर का विश्लेषण करना।

यह अध्ययन मल्लपुरम जिले पर केंद्रित है और संस्थान द्वारा शुरू किए और पूरे मए एक अध्ययन का परवर्ती भाग है जो आधारभूत मूल्यांकन का एक अध्ययन था। अध्ययन का प्रतिदर्श 40 विद्यालयों, 187 अध्यापकों, कक्षा 2 के 794 और कक्षा 4 के 1029 छात्रों पर आधारित था।

डा. एन वी वर्गीज और श्री के एस संजीव ने यह अध्ययन किया।

2. शैक्षिक प्रक्रिया और प्रगति : केरल के कासरगोड़ जिले में प्राथमिक विद्यालयों का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार थे:

अ) विभिन्न प्रखंडों में प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति और उनके कार्यों का विश्लेषण करना;

ब) विद्यालयों में पठन–पाठन की दशाओं को स्पष्ट करना;

स) विभिन्न प्रखंडों और विद्यालयों के बीच शिक्षार्थियों की उपलब्धियों के स्तरों के अंतर का विश्लेषण करना।

यह अध्ययन कासरगोड़ जिले में किया गया और संस्थान द्वारा आधारभूत मूल्यांकन पर शुरू किए गए और पूरे किए गए एक अध्ययन का परवर्ती भाग था। अध्ययन का प्रतिदर्श 37 विद्यालयों, 151 अध्यापकों, कक्षा 2 के 722 छात्रों और कक्षा 4 के 977 छात्रों पर आधारित था।

यह अध्ययन अक्तूबर 1997 में पूरा हुआ।

परियोजना दल में डा. एन वी वर्गीज और श्री के एस संजीव शामिल थे।

1997-98

3. प्राथमिक विद्यालयों में बच्चे कितना सीखते हैं : केरल के वायनाड जिले का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार थे :

अ) विभिन्न प्रखंडों में प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति और उनके कार्यों का विश्लेषण करना;

ब) विद्यालयों में पठन–पाठन की दशाओं को स्पष्ट करना;

स) विभिन्न प्रखंडों और विद्यालयों के बीच शिक्षार्थियों की उपलब्धियों के स्तरों के अंतर का विश्लेषण करना।

अध्ययन केरल के वायनाड जिले में किया गया और आधारभूत मूल्यांकन के एक अध्ययन का परवर्ती था। अध्ययन का प्रतिदर्श 36 विद्यालयों, 164 अध्यापकों, कक्षा 2 के 714 और कक्षा 4 के 983 छात्रों पर आधारित था।

परियोजना दल में डा. एन वी वर्गीज और श्री के एस संजीव और श्री एम वी बीजूलाल थे। यह अध्ययन पूरा हो चुका है।

4. कारगुजारी के मूल्यांकन और अध्यापकों की जवाबदेही का अध्ययन

अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं: सामान्यतः कारगुजारी के मूल्यांकन और अध्यापकों की जवाबदेही की व्यवस्था की धारणा को और विशेष रूप से उसे भारतीय संदर्भ में समझना, उच्च शिक्षा व्यवस्था में कारगुजारी के मूल्यांकन और अध्यापकों की जवाबदेही पर अध्यापकों और प्राचार्यों के दृष्टिकोणों की पहचान करना; संबद्ध लोगों से आंकड़ों और सूचनाओं का संग्रह करना; महाविद्यालयों में कारगुजारी के मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त विभिन्न प्रपत्रों का अध्ययन करना; इस प्रकार प्राप्त आंकड़ों और सूचनाओं का विश्लेषण करना; उपरोक्त के आधार पर देश में कारगुजारी के मूल्यांकन और अध्यापकों की जवाबदेही की व्यवस्थाओं के क्रियान्वयन के वैकल्पिक उपाय सुझाना।

संक्षिप्त परिचय : कारगुजारी के मूल्यांकन और अध्यापकों की जवाबदेही की धारणा यूं तो शिक्षा व्यवस्था जितनी ही पुरानी है मगर इसकी अहमियत और जरूरत को अभी हाल में स्वीकारा गया है। शिक्षा में प्रासंगिकता और गुणवत्ता लाने के लिए इस धारणा से काफी आशाएं की जा रही हैं। विभिन्न और खासकर उच्च शिक्षा के मंचों पर इसकी योजना पर बहसें हुई हैं। लेकिन सोच की इस तर्ज पर भारी जोर 1986 और 1992 की राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों और कार्रवाई योजनाओं ने दिया। प्रस्तुत अध्ययन नीपा के उच्च शिक्षा एकक द्वारा शुरू किया गया और यह महाविद्यालयों में इस मूल्यांकन और जवाबदेही के मौजूदा तौर तरीकों का सर्वेक्षण करता है। इससे प्राप्त आंकड़ों और सूचनाओं का विश्लेषण करके इस रिपोर्ट में प्रस्तुत किया गया है।

इन तौर तरीकों से संबंधित आंकड़े और सूचनाएं प्राप्त करने के लिए प्राचार्यों और प्राध्यापकों को अलग–अलग प्रश्नावलियां भेजी गईं। ये देश भर के 80 निजी, निजी सहायता प्राप्त और सरकारी महाविद्यालयों में भेजी गई। कुल 41 प्राचार्यों और 221 अन्य दूसरे कर्मियों ने उत्तर दिए।

दस्तावेज में नियामक निकायों और धनदायी संस्थाओं के माध्यम से केंद्र और राज्य सरकारों के प्रयासों, तथा विभिन्न समितियों और आयोगों की सिफारिशों को भी दर्ज किया गया है ताकि देश में मौजूद व्यवस्था की बेहतर समझ हासिल हो सके।

आमतौर पर समझा जाता है कि सही विधि का चयन कठिन है क्योंकि गुणवत्ता परखने के मानदंडों का ठीक–ठीक परिमाणीकरण नहीं किया जा सकता। वि अ आयोग ने प्रस्ताव किया है कि उसके द्वारा तैयार प्रपत्र पर आत्म–मूल्यांकन किया जाए और अगर इसे ठीक से लागू किया जाए तो निश्चित ही संतोषजनक परिणाम प्राप्त होंगे। क्रियान्वयन से पहले अध्यापक संगठनों से परामर्श किया जाए तो उनकी प्रतिबद्धता भी प्राप्त होगी और क्रियान्वयन में आसानी होगी। कारगुजारी के मुल्यांकन और जवाबदेही को अनिवार्य समझा जाता है। और एक विचार यह भी है कि इसके लिए पुरस्कार और दंड की व्यवस्था होनी चाहिए। अकादमिक, पाठ्यचर्या से जुड़े और उससे बाहर के कार्यों में अध्यापक जवाबदेह बनें, इसके लिए पक्के उपाय करने होंगे। यह भी कहा गया है कि मूल्यांकन अध्यापकों द्वारा नहीं बल्कि छात्रों, सहकर्मियों, ऊपर के लोगों और लाभार्थियों द्वारा होना चाहिए।

प्राध्यापकों के प्रत्युत्तरों से पता चलता है कि आमतौर पर प्रत्युत्तरदाता प्रश्नावली को भरने में लापहरवाह रहे हैं। एक बड़ी संख्या ने कुछ ही प्रश्नों के उत्तर दिए हैं और बहुतों को

खाली छोड़ दिया है। कुछ मामलों में जवाबों से मूल्यांकन और जवाबदेही की सही समझ के अभाव का पता चलता है।

अधिकांश प्रत्युत्तरदाताओं ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा मूल्यांकन की बात कही और 27 प्रतिशत ने कहा कि उनका मूल्यांकन छात्र करते हैं। लगभग आधे ने कहा कि वे मूल्यांकन की वर्तमान व्यवस्था से संतुष्ट हैं और उन्हें कोई समस्या नहीं है। लगभग 10 प्रतिशत ने कहा कि उनके यहां मूल्यांकन की कोई व्यवस्था नहीं है।

लगभग सभी ने कहा कि वर्तमान व्यवस्था का उच्च शिक्षा संस्थाओं की गुणवता सुधारने में कोई योगदान नहीं है। कुछ प्राध्यापकों ने मूल्यांकन की दूसरी विधियों के सुझाव दिए : आत्म–मूल्यांकन, पैनल या समिति द्वारा मूल्यांकन, पर्यवेक्षकों के आकस्मिक दौरे, समाज या अभिभावकों द्वारा मूल्यांकन, बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने के बाद मूल्यांकन, छात्रों से प्रतिज्ञान, अनुसंधान कार्य के आधार पर मूल्यांकन, प्रकाशित लेखों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों आदि में भागीदारी के आधार पर मूल्यांकन।

5. भारत के अकादमिक स्टाफ कालेजों की समीक्षा

इस परियोजना के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं: आठवीं पंचवर्षीय योजना में आकदमिक स्टाफ कालेजों की कारगुजारी के बारे में ऐसे 45 कालेजों से आंकड़ों का संग्रह, संकलन और विश्लेषण करना।

संक्षिप्त परिचय : अकादमिक स्टाफ कालेजों की स्थिति और आठवीं योजना में उनकी कारगुजारी से जुड़े आंकड़े और सूचनाएं प्राप्त करने के लिए एक प्रश्नावली तैयार करके अकादमिक स्टाफ कालेजों को भेजी गई। फिर इन आंकड़ों का विश्लेषण करके इस रिपोर्ट में प्रस्तुत किया गया। प्रश्नावली में दर्ज प्रमुख मदें इस प्रकार थीं: कालेजों की सामान्य स्थिति और कार्यकलाप, प्रतिष्ठान और विश्वविद्यालयों से प्राप्त सुविधाएं, कालेजों में स्टाफ का वास्तविक कार्यकलाप, निदेशकों के परिदृश्य, बुनियादी सुविधाएं और साजसामान, स्वयं कालेज द्वारा संसाधनों की लामबंदी और उनका उपयोग, पुस्तकालय और उसकी कारगुजारी, कालेज से जुड़े लोगों से अंतःक्रिया और कालेज के सामने मौजूद कठिनाइयां। इन परिमाणात्मक आंकड़ों का संबंध कालेजों द्वारा आयोजित पुनश्चर्या और अभिविन्यास कार्यक्रमों, किए गए प्रवर्तन कार्यों और अन्य कार्यक्रमों, जैसे—कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, विचार विमर्श और बैठकों आदि से भी था।

कालेजों के कार्यक्रमों में भाग लेने वालों से भी प्रश्नावलियां भरवाई गईं और उनके विश्लेषण से कालेजों की कारगुजारी का निश्चय किया गया। रिपोर्ट में भारत में अकादमिक स्टाफ कालेजों की बेहतर कारगुजारी के लिए भी कुछ सुझाव दिए गए हैं। यह रिपोर्ट विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थायी समिति को प्रस्तुत की गई है।

जारी अध्ययन

1. दूसरे अखिल-भारतीय शैक्षिक प्रशासन सर्वेक्षण परियोजना

यह परियोजना 19.84 लाख रुपये की राशि के साथ स्वीकृत की गई। नीपा के वरिष्ठ संकाय सदस्य डा. एम मुखोपाध्याय, डा. आर गोविंद, डा. जे बी जी तिलक, डा. वाई पी अग्रवाल, डा. एन वी वर्गीज और डा. के सुजाता विभिन्न राज्यों में सर्वेक्षण के प्रभारी हैं।

यह सर्वेक्षण सभी राज्यों, संघीय क्षेत्रों और केंद्र में शैक्षिक प्रशासन का एक व्यापक अध्ययन है। इसके प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं : (अ) विभिन्न स्तरों पर संरचनाओं, प्रणालियों और प्रक्रियाओं की दृष्टि से शैक्षिक प्रशासन की वर्तमान स्थिति को समझना, (ब) प्रयोगों, परिवर्तनों और प्रवर्तनों का अध्ययन करना, (स) शैक्षिक योजना और प्रशासन के प्रमुख मुद्दों और भावी दायित्वों की निशानदेही करना। सर्वेक्षण में सचिवालय, निदेशालय और निरीक्षणालय स्तर पर शिक्षा विभागों के सांगठनिक ढांचों, उनकी भूमिका, कार्यों और गतिविधियों को, विभिन्न प्रबंधमंडलों तथा शिक्षा विभाग से दूसरे विभागों के तहत आने वाली संस्थाओं को समेटा गया है। इसका प्रमुख ध्यान केंद्र विद्यालय शिक्षा का प्रशासन है।

संस्थान की ओर से विकास पब्लिशिंग हाउस द्वारा अरुणाचलप्रदेश, केरल, पंजाब, मिजोरम, गोवा, हरियाणा, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, सिक्किम, चडीगढ़, लक्षद्वीप, अंडमान–निकोबार द्वीपसमूह, राजस्थान, त्रिपुरा और हिमाचलप्रदेश के सर्वेक्षण की रिपोर्टें समूल्य प्रकाशित की जा चुकी हैं। बिहार और असम की रिपोर्टें प्रेस में हैं। उत्तरप्रदेश और

1997-98

मेघालय की रिपोर्टों को अंतिम रूप दिया जा चुका है तथा दिल्ली और महाराष्ट्र की रिपोर्टों को अंतिम रूप देने का काम शुरू हो चुका है। तमिलनाडु, दमन व दिव तथा पांडिचेरी की रिपोर्टें अंशतः संशोधित की गई हैं। गुजरात, नागालैंड, उड़ीसा, मणिपुर, दादरा व नागर हवेली, जम्मू–कश्मीर, पश्चिम बंगाल और आंध्रप्रदेश की रिपोर्टें तैयारी के विभिन्न चरणों में हैं।

सर्वेक्षण के अंग के रूप में निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन भी किया गया:

क्षेत्र अध्ययन

बिहार के रांची जिले में ग्राम शिक्षा समिति की भूमिका और कार्यकलाप

विद्यालयों का प्रबंधः पूना जिला, महाराष्ट्र का एक केस अध्ययन।

सर्वेक्षण के आधार पर अभी तक (अ) मध्यप्रदेश (ब) कर्नाटक, (स) राजस्थान और (द) मेघालय तथा पूर्वोत्तर राज्यों पर संगोष्ठियों/कार्यशालाओं का आयोजन किया जा चुका है।

2. गंदी बस्तियों के बच्चों की शैक्षिक योजनाएं: अध्ययन के लिए प्रतिदर्शी सर्वेक्षण तकनीकों के उपयोग की परियोजना– दिल्ली और मुंबई के केस अध्ययन

इस परियोजना का संचालन शैक्षिक योजना एकक के अध्यक्ष और वरिष्ठ अध्येता प्रोफेसर श्री प्रकाश कर रहे हैं। अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं: नामांकन की कमी, प्रतिधारण और विद्यालयत्याग के निधार्रण के लिए गंदी बस्तियों के बच्चों की शिक्षा संबंधी समस्याओं का अध्ययन करना, तथा सामाजिक–आर्थिक विकास से उसके संबंधों का अध्ययन करना।

प्रश्नावली विकसित की जा चुकी और क्षेत्र में परखी जा चुकी है। समष्टि क्षेत्र को सूचीबद्ध किया जा चुका है और प्रतिदर्शन की विधियों को अंतिम रूप दिया जा चुका है।

अध्ययन प्रगति पर है।

3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों द्वारा समय का प्रबंध

शैक्षिक योजना और प्रशासन संबंधी अध्ययनों के लिए नीपा की सहायता योजना के तहत यह अध्ययन डा. सिंधिया पांड्यन, रीडर, शिक्षाशास्त्र विभाग, चेन्नई विश्वविद्यालय को स्वीकृत किया गया है। इसकी अनुमानित लागत 64,680 रुपये है।

इसके प्रमुख उद्देश्य ये हैं : (अ) प्रधानाध्यापकों द्वारा समय प्रबंध के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना, (ब) समय–प्रबंध के बारे में प्रधानाध्यापकों के तौर–तरीकों में अंतरों का पता लगाना, तथा (स) जान–बूझकर समय बरबाद करने वालों तथा कार्य और समय के बीच तालमेल बिठाने वाले प्रधानाध्यापकों के काम के ढर्रों की पहचान करना।

4. साक्षरता कार्यक्रमों की योजना और प्रशासनः प्रखंड स्तर के अनुभवों के पाठ

यह अध्ययन शैक्षिक अनुसंधान और विकास संस्थान, बंगलौर के अध्यक्ष प्रोफेसर रंगनाथ भारद्वाज को शैक्षिक योजना और प्रशासन संबंधी अध्ययनों के लिए नीपा की सहायता योजना के तहत स्वीकृत किया गया। इसकी अनुमानित लागत 87,600 रुपये है।

इसके प्रमुख उद्देश्य ये हैं : (अ) आंदोलन को बल पहुंचाने वाले संस्थागत ढांचे और स्वयं आंदोलन की गति के आपसी संबंधों का अध्ययन करना, (ब) इसमें प्रशिक्षित व्यक्तियों के परवर्ती जीवन के परिदृश्य तैयार करना और इस तरह इसका आकलन करना कि क्या साक्षरता के लाभार्थी उसकी सहायता से अपना जीवन सुधार सकते हैं।

5. जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत शैक्षिक सूचना प्रणाली के विकास के लिए यूनिसेफ द्वारा प्रायोजित प्रायोगिक परियोजना

नीपा ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग के आग्रह पर यूनिसेफ द्वारा प्रायोजित इस प्रायोगिक परियोजना का पहला चरण आरंभ किया। इसकी अनुमानित लागत 25,37,325 रुपये और समय सीमा 9 माह थी। नीपा में वरिष्ठ अध्येता डा. वाई पी अग्रवाल परियाजना के निदेशक हैं।

परियोजना के मुख्य उद्देश्य ये हैं : (अ) प्रत्येक राज्य से आंकड़ों का संग्रह और संकलन तथा विद्यालय से राज्य स्तर तक उनके संप्रेषण की मौजूदा व्यवस्था का अध्ययन करना, (ब) परियोजना के आगतों और निर्गतों की निगरानी के लिए सूचकों तथा इसके लिए आवश्यक एक प्रपत्र का विकास

1997-98

करना, (स) (जनगणना और प्रतिदर्शी विधियों से प्राप्य) अतिरिक्त आवश्यक आंकड़ों की पहचान करना, (द) उपरोक्त के लिए उनकी रिपोर्टिंग की बारंबारता का पता लगाना, (य) निगरानी के विभिन्न सूचकों के आधार पर आंकड़ों के संग्रह, रिपोर्ट–लेखन और संप्रेषण की विधियां निर्धारित करना, (र) आंकड़ों के कुल परिमाण का आकलन करना और जिला या राज्य स्तर पर उनको कंप्यूटरों में भरने के लिए आवश्यक पेशेवर श्रमशक्ति के सुझाव देना, (ल) आंकड़ों के भंडारण, तालिकाओं की तैयारी, समेकन, तथा जिले से राज्य स्तर तक रिपोर्टों के संप्रेषण के लिए साफ्टवेयर विकसित करना, (व) आंकड़ों के प्रवाह और रिपोर्टों की तैयारी के लिए अलग–अलग स्तरों पर एक प्रणाली की रूपरेखा विकसित करना, (क) जिला, राज्य और राष्ट्र स्तरों पर एक शैक्षिक सूचना प्रणाली की स्थापना के लिए प्रशिक्षण का एक पैकेज तैयार करना, (ख) उपरोक्त प्रणाली और उसमें शामिल आंकड़ों के उपयोग पर वरिष्ठ नीति निर्माताओं और प्रशासकों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करना, और (ग) जि प्रा शि कार्यक्रम से बाहर के जिलों तक DISE के विस्तार की रणनीति संबंधी सुझाव देना।

6. संस्थागत लागत का ढर्रा और ढांचा : दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों का एक तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य

अ) शैक्षिक लागतों की मदों के वर्गीकरण की विवेचना करना;

ब) दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों में संस्थागत लागतों के ढर्रों और ढांचों का तुलनात्मक अध्ययन करना,

स) दिल्ली के विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के बीच विद्यालय स्तर पर प्रतिछात्र व्यय संबंधी अंतर का विश्लेषण करना।

परियोजना की स्थिति

यह अध्ययन अनुभवाश्रित स्वरूप तथा प्राथमिक व द्वितीयक, दोनों प्रकार के आंकड़ों पर आधारित है। नामांकन, उत्तीर्णता, अध्यापक संख्या, अध्यापक–छात्र अनुपातों, समीक्षाधीन वर्षों में मदवार व्यय के आंकड़े विशेष रूप से तैयार की गई प्रश्नावलियों के सहारे पहले ही तैयार किए जा चुक हैं। आशा है कि अध्ययन की आखिरी रिपोर्ट अगस्त 1998 तक तैयार हो जाएगी। यह अध्ययन डा. एन. के. मोहंती कर रहे हैं।

7. भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में प्रारंभिक शिक्षा की स्थिति और समस्याएं : एक तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य

अ) पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा की समस्याओं के सभी आयामों की पहचान करना,

ब) गुणात्मक सुधार के लिए भावी रणनीतियों के सुझाव देना।

यह परियोजना 1997 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग के आग्रह पर जि प्रा शि कार्यक्रम वाले राज्यों की तर्ज पर, क्षेत्र में प्रारंभिक विद्यालयों के गुणात्मक सुधार के लिए हस्तक्षेप की रणनीतियां सुझाने के लिए शुरू की गई थी। उसे नीपा की सहायता प्राप्त है और इसके आठ अध्यायों में प्रारंभिक शिक्षा के ऐतिहासिक आयामों, जिलों के बीच विषमताओं, स्त्री साक्षरता, लड़कियों की शिक्षा, सुविधाओं के उपयोग और 9 वीं योजना की परिप्रेक्ष्य योजना को समेटा गया है।

यह परियोजना सुश्री जयश्री राय जलाली कर रही हैं। सुश्री एफ लालथुनारी इस परियोजना में सहायता कर रही हैं।

8. प्रारंभिक शिक्षा का सार्वजनीकरण: भारत में उच्चतर प्राथमिक शिक्षा का एक अध्ययन

भारत में उच्चतर प्राथमिक शिक्षा के प्रदाय की व्यवस्थाओं का गहन विश्लेषण इस परियोजना का प्रमुख उद्देश्य है। इस अध्ययन के दो चरण होंगे। पहले चरण में द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर उच्चतर प्राथमिक शिक्षा के प्रावधान की प्रवृत्तियों और तर्जों का विश्लेषण किया जाएगा। दूसरे चरण में विश्लेषण प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित होगा जो मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र केरल और उत्तरप्रदेश के 8 प्रखंडों के उच्चतर प्राथमिक विद्यालयों और अध्यापकों से प्राप्त किए जाएंगे। अध्ययन के लिए चुने गए जिले विकासपुर, औरंगाबाद, मल्लपुरम और मुरादाबाद हैं।

अध्ययन का पहला चरण जनवरी 1998 में शुरू हुआ। आंकड़ों का संग्रह और रिपोर्ट की तैयारी प्रगति पर हैं। आशा है यह चरण मई 1998 तक पूरा हो जाएगा। इसी के बाद अध्ययन का दूसरा चरण शुरू होगा।

1997-98

इस अध्ययन का संचालन डा. एन वी वर्गीज और डा. अरुण सी मेहता कर रहे हैं। परियोजना दल में श्री सुधांशु नायक और श्री संतोष तराई शामिल हैं।

9. विद्यालय मानचित्रण

शिक्षा सुविधाओं के वितरण के मौजूदा ढर्रे का विश्लेषण करना तथा सुविधाओं के प्रावधान की आवश्यकता वाले स्थानों की पहचान करना इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य हैं। यह संस्थान द्वारा विकसित दूरस्थ आधात्री की पद्धति पर आधारित है। परियोजना उड़ीसा के धेनकनाल जिले के ओडापाड़ा प्रखंड में चलाई जा रही है। आंकड़ों का संग्रह अक्तूबर 1997 में शुरु हुआ और दिसंबर 1997 के अंत तक पूरा हो गया। इन आंकड़ों को परखकर और शोधकर कंप्यूटरों में भरा गया। आंकड़ों का विश्लेषण जारी है। आशा है कि अध्ययन के प्रारंभिक परिणाम मई–जून 1998 तक उपलब्ध होंगे और परियोजना की रिपोर्ट वर्ष 1998 के अंत तक तैयार हो जाएगी।

परियोजना दल के संचालक डा. एन वी वर्गीज और डा. के बिस्वाल हैं। इस दल में श्री तपन मोहंती शामिल हैं।

10. जि प्रा शिक्षा कार्यक्रम के तहत गतिविधियों और वित्तीय संसाधनों के उपयोग की प्रवृत्तियां

अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं :

अ) कार्यक्रम के क्रियान्वयन की गतिविधियों का विश्लेषण करना,

ब) संसाधनों के उपयोग का मूल्यांकन करना, और

स) गतिविधियों और संसाधनों के उपयोग का समग्र मूल्यांकन करना।

अध्ययन मूलतः राज्य और जिला स्तर की मध्यवर्ती और वार्षिक योजनाओं, जि प्रा शि कार्यक्रम के ब्यूरो द्वारा समय–समय पर प्रकाशित दस्तावेजों, निगरानी मिशन और PMIS के आंकड़ों पर आधारित है। अध्ययन में अनुभवाश्रित विश्लेषण तीन राज्यों–असम, केरल और मध्यप्रदेश तक सीमित था। यह अध्ययन अक्तूबर 1997 में शुरू हुआ। दिसंबर 1997 में इसके प्राथमिक परिणाम जि प्रा शि कार्यक्रम के ब्यूरो को सौंपे गए। रिपोर्ट की तैयारी प्रगति पर हैं और आशा है यह जून–जुलाई 1998 तक पूरी हो जाएगी।

डा एन वी वर्गीज, सुश्री रंजना अग्रवाल, श्री असीम त्रिपाठी और सुश्री जोसेफीन सहित एक दल इस अध्ययन का संचालन कर रहा है।

11. जि प्रा शि कार्यक्रम के अंतर्गत योजना की प्रक्रिया

अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार है:

अ) जि प्रा शि कार्यक्रम के अंतर्गत मध्यकालिक और वार्षिक योजनाओं की तैयारी की प्रक्रिया का विश्लेषण करना,

ब) जिला योजना प्रक्रिया में संलग्न विभिन्न संगठनों के संबंधों का अध्ययन करना।

परियोजना में केस अध्ययन के लिए जिला औरंगाबाद, महाराष्ट्र को चुना गया है। परियोजना का काम केवल 1997 के अंत में शुरू हो सका। इस समय औरंगाबाद में जि प्रा शि कार्यक्रम की योजना और क्रियान्वयन में लगे विभिन्न कार्मिकों में बांटने के लिए अनुसंधान के उपकरणों का विकास किया जा रहा है। आशा है जून–जुलाई 1998 तक क्षेत्र कार्य आरंभ हो सकेगा और रिपोर्ट का प्रारूप 1998 के अंत तक तैयार होगा।

अध्ययन का संचालन डा. एन वी वर्गीज और डा. एस एम आई ए जैदी कर रहे हैं। परियोजना दल में श्री जयेश एम अवतरे भी शामिल हैं।

12. अवस्नातक कार्यक्रमों का व्यवसायीकरण : एक प्रायोगिक अध्ययन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और वि अ आयोग की कोर समिति की सिफारिशों को लागू करने के लिए आयोग ने पहली उपाधि शिक्षा कार्यक्रम के व्यवसायीकरण का एक कार्यक्रम 1994-95 में शुरू किया था और पहली उपाधि के स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू किए गए। अभी तक देश भर के 80 विश्वविद्यालयों के लगभग 2000 महाविद्यालयों में व्यावसायिक कार्यक्रम शुरू किए गए हैं।

अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है:

व्यवसायीकरण कार्यक्रम में निहित मान्यताओं, विश्वासों और राज्यों की छानबीन करना; उच्च शिक्षा में व्यावसायिक कार्यक्रम लागू कर रहे व्यक्तियों की आशाओं को समझना; व्यवहार में

1997-98

वास्तविक योजना का तथा संरचना, प्रकार्य, वित्त आदि की दृष्टि से जुटाए गए आगतों का अध्ययन करना; दिल्ली के महाविद्यालयों में लागू किए जा रहे व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के बारे में आंकड़ों और सूचनाओं का संग्रह करना; और अंत में, वास्तविक क्रियान्वयन के आधार पर इसकी ताकतों और कमजोरियों को पहचानना और सुधार के लिए सिफारिशें देना।

13. लातीनी अमरीका में अनौपचारिक शिक्षा की योजना और प्रबंध : भारत के लिए सबक और उसके निहितार्थ

यह परियोजना 1,46,200 रुपये की लागत से स्वीकार की गई थी। अंतर्राष्ट्रीय एकक में अध्येता डा. अंजना मंगलागिरि इसका संचालन कर रही हैं।

अध्ययन के उद्देश्य ये हैं:

लातीनी अमरीका में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों की संरचना, प्रक्रिया, संगठन और प्रबंध की पड़ताल करना, तथा शिक्षा में अंतःक्षेत्रीय समझदारी और सहयोग के लिए तुलनात्मक शिक्षा शास्त्र के विकास का आधार तैयार करना।

यह अध्ययन भारत में प्रयुक्त रणनीतियों के प्रकाश में तथा विकेंद्रीकरण और समुदाय की भागीदारी के विशेष संदर्भ में लातीनी अमरीका में अनौपचारिक शिक्षा की योजना और प्रबंध की रणनीतियों की पड़ताल करता हैं। लातीनी अमरीका के अनुभव से जाहिर है कि वहां भारत की तरह अनौपचारिक शिक्षा को एक शैक्षिक कार्यक्रम नहीं समझा जाता बल्कि ढांचाबद्ध और मानकबद्ध औपचारिक शिक्षा व्यवस्था का एक भरपूर विकल्प समझा जाता है। भारत में इसके लिए ऊपर–नीचे का जो दृष्टिकोण अपनाया जाता है उसके विपरीत लातीनी अमरीका में विकेंद्रीकरण जनता की भागीदारी, आत्मीकरण, और अधिकारों की प्राप्ति के लिए जनता की भागीदारी जैसे तत्व पाए जाते हैं। लातीनी अमरीका में स्वयं कार्यक्रम की बजाय योजना और प्रबंध की प्रक्रियाओं पर जोर दिया जाता है। इसके कुछ सकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं।

14. केरल, कर्नाटक और राजस्थान में शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों के लिए क्षेत्र-सघन कार्यक्रम के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए प्रतिदर्शी सर्वेक्षण

शिक्षा के अवसरों में समानता लाना सरकार के प्रमुख सरोकारों में शामिल है। सभी के लिए शिक्षा के समान अवसर जुटाने संबंधी प्रयासों के अंग के रूप में सरकार ने शिक्षा में पिछड़े अल्पसंख्यकों के शैक्षिक विकास के लिए अनेक कार्यक्रम शुरू किए है, जैसे क्षेत्र–सघन कार्यक्रम और मदरसा शिक्षा का आधुनिकीकरण। लेकिन अकसर पाया जाता है कि इन कार्यक्रमों संबंधी सूचनाएं लक्षित समुदायों तक पहुंचती ही नहीं। इसी तरह इन कार्यक्रमों से इन समुदायों को जो लाभ मिले हैं उनको भी ठीक से पेश नहीं किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन की योजना इसी पृष्ठभूमि में तैयार की गई।

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक और अनुभवजन्य, दोनों प्रकार की सूचनाओं के आधार पर यह समझने का प्रयास है कि इस योजना की धारणा किस तरह बनाई गई और इसे लागू किस तरह किया गया। यह अध्ययन मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग के आग्रह पर शुरु किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

योजना में क्रियान्वयन का जो ढांचा दिया गया है उसे और इसके वास्तविक क्रियान्वयन को ध्यान में रखकर अध्ययन के ये उद्देश्य तय किए गए:

अ) शिक्षा में पिछड़े अल्पसंख्यकों की भारी आबादी वाले क्षेत्रों में शिक्षा के बुनियादी ढांचे और सुविधाएं जुटाने के प्रमुख उद्देश्य के सापेक्ष योजना का मूल्यांकन करना;

ब) उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पर्याप्तता की दृष्टि से क्रियान्वयन के ढांचे का मूल्यांकन करना;

स) क्रियान्वयन तथा 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के ढांचे के बीच मौजूद खाई को निगाह में रखकर परिवर्तनों के सुझाव देना।

अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं :

अ) प्राथमिक/उच्चतर प्राथमिक विद्यालयों, अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों की स्थापना करने और शिक्षा के बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाने की योजना के उपयोग की सीमा का अध्ययन करना;

ब) नामांकन और भागीदारी में गोचर वृद्धि हुई हो तो उसकी छानबीन करना;

1997-98

स) एक से अधिक पाठ्यक्रम वाले आवासी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के माध्यमिक चरण में मुस्लिम लड़कियों की भागीदारी के प्रभाव को समझना।

यह अध्ययन डा. प्रमिला मेनन, हेमंत पंडा और श्री जमालुद्दीन फारूकी का एक दल कर रहा है। श्री अशोक धमीजा से सचिवालयी सहायता प्राप्त हो रही है।

यह अध्ययन जून 1998 तक पूरा हो जाएगा।

15. महिलाएं और विश्वविद्यालय : प्रावधान और संरक्षण

उच्च शिक्षा एकक में वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष डा. के सुधा राव, श्री पी आर प्रसाद और श्री बी के बारिक की सहायता से इस परियोजना का संचालन कर रही हैं। भारतीय विश्वविद्यालय के अधिनियमों और नियमावलियों में उच्च शिक्षा में महिलाओं के लिए जो प्रावधान और संरक्षण के उपाय किए गए हैं उनका एक संदर्भ ग्रंथ तैयार करना इसका उद्देश्य है।

इस प्रमुख उददेश्य को ध्यान में रखकर विभिन्न विश्वविद्यालयों के अधिनियमों और नियमावलियों का अध्ययन और विश्लेषण किया जा रहा है, और उन विश्वविद्यालयों में महिलाओं के प्रवेश और उनकी सफलता के लिए जो प्रावधान और संरक्षण के उपाय किए गए हैं उनकी पहचान की जा रही है। विश्वविद्यालयों में विभिन्न स्तरों पर प्रवेश, भरती, चयन और नियुक्ति से जुड़े सभी फैसलों का आधार अधिनियमों और नियमावलियों में मौजूद यही प्रावधान हैं। फिर इन्हीं से विश्वविद्यालयों की निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं को बराबर का भागीदार बनने का अवसर मिलता है। 60 से अधिक विश्वविद्यालयों के अधिनियमों और नियमावलियों का विश्लेषण इस आशा के साथ किया जा रहा है कि इस विश्लेषण से जो व्यापक दस्तावेज सामने आएगा वह उन सभी लोगों के लिए एक अच्छा संदर्भग्रंथ होगा जो भविष्य में स्त्रियों के विकास में और उनके लिए समान अवसरों की व्यवस्था में रूचि रखते हैं। अध्ययन प्रगति पर है।

प्रकाशन

अनुसंधान के परिणामों का प्रकाशन स्वयं अनुसंधान जितना ही महत्वपूर्ण होता है। अनुसंधान के परिणाम कार्यपत्रों और सामयिक आलेखों के द्वारा प्रकाशित किए जाते हैं। प्रसार का एक और साधन विनिबंध और अनुलेखित पांडुलिपियां हैं। यह एकक अंग्रेजी में 'जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन' तथा हिंदी में 'परिप्रेक्ष्य' नामक पत्रिकाओं के अलावा अनेक आलेख, एनट्रिप (एशियन नेटवर्क आफ ट्रेनिंग एंड रिसर्च इंस्टीट्यूशंस इन एजुकेशनल प्लानिंग) न्यूजलेटर, तथा शैक्षिक योजना और प्रशासन के बारे में पुस्तकें और शोधपत्र भी प्रकाशित करता है।

समीक्षित काल में संस्थान ने निम्नलिखित का प्रकाशन किया:

समूल्य

दूसरे अखिल-भारतीय शैक्षिक प्रशासन सर्वेक्षण से संबंधित पुस्तकें : नीपा ने दो दशकों के अंतराल के बाद शैक्षिक प्रशासन के बारे में दूसरे अखिल–भारतीय सर्वेक्षण का व्यापक कार्यक्रम शुरू किया है। इसमें सभी राज्यों और संघीय क्षेत्रों को समेटा गया है। समीक्षाधीन वर्ष में श्रृंखला की निम्नलिखित पुस्तक प्रकाशित की गई :

1. **एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन इन हिमाचलप्रदेश: स्ट्रक्चर्स, प्रोसेसेज एंड फ्यूचर प्रास्पेक्ट्स,** अनिल सिन्हा, आर एस त्यागी और आर एस ठाकुर

श्रृंखला की हर पुस्तक संबंधित राज्य/संघीय क्षेत्र में प्राथमिक स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं पर ही आधारित नहीं होती बल्कि द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त अधुनातन आंकड़ों पर भी आधारित होती है। इसमें मुख्य रूप से विद्यालय शिक्षा के प्रशासन पर ध्यान देते हुए संस्था के स्तर से लेकर राज्य/संघीय क्षेत्र के स्तर तक शैक्षिक प्रशासन की वर्तमान स्थिति दिखाई जाती है।

ये पुस्तकें शैक्षिक योजना और प्रशासन का एक आलोचनात्मक विश्लेषण पेश करती हैं और साथ ही प्रशासन व्यवस्था के भावी विकास संबंधी सुझाव भी देती हैं। ये शैक्षिक योजना कर्मियों और प्रशासकों के सामने मौजूद कार्यों की रूपरेखा भी सामने रखती हैं।

ये पुस्तकें शोधकर्ताओं, शिक्षा शास्त्रियों, शैक्षिक योजनाकर्मियों और प्रशासकों के लिए तथा शिक्षा के विकास में दिलचस्पी रखनेवाले सभी लोगों के लिए एक उपयोगी संदर्भ–सामग्री का काम देती हैं।

2. **माड्यूल्स इन डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग इन एजुकेशन**

भारत में जिला स्तर की योजना अभी तक व्यापक कार्य व्यवहार का रूप नहीं ले सका है। इसका मुख्य कारण जिला

1997-98

स्तर पर विस्तृत योजनाएं तैयार करने के बारे में शिक्षाकर्मियों में क्षमता का अभाव है। एक विकेंद्रित ढांचे में स्थानीय क्षमताओं के विकास में तेजी लाने के लिए संस्थान ने विकेंद्रित शैक्षिक योजना पर माड्यूल विकसित करने की जरूरत महसूस की ताकि जिला शैक्षिक योजना के क्षेत्र में कार्मिकों के प्रशिक्षण में निचले स्तर की संस्थाओं की सहायता की जा सके। संस्थान ने ऐसे 12 माड्यूल विकसित किए जो जिला योजना के अलग–अलग पर आपस में जुड़े पहलुओं पर पूरे एक सेट के रूप में हैं।

ये 12 माड्यूल मोटे तौर पर 5 श्रेणियों में विभाजित हैं। माड्यूल 1-4 जिला स्तर पर शैक्षिक योजनाओं के निरूपण और क्रियान्वयन के संदर्भ, अवधारणा और अनिवार्य–चरणों की विवेचना करते हैं। माड्यूल 5-7 आवश्यक आंकड़ों, उनके स्रोतों तथा योजनाएं तैयार करने के लिए आंकड़ों के विश्लेषण की उपयोगी तकनीकों की जानकारी देते हैं। माड्यूल 8-9 में विद्यालय मानचित्रण और व्यष्टिस्तरीय योजना की पद्धतियों की विस्तृत विवेचना की गई है जो संसाधनों के बुद्धिसंगत आवंटन तथा संसाधनों और सुविधाओं के उपयोग की दक्षता में सुधार के लिए योजना के जरूरी साधन हैं। माड्यूल 10-11 में शैक्षिक योजनओं की लागत के निर्धारण और शिक्षा के लिए वित्त की व्यवस्था की चर्चा की गई है तथा माड्यूल 12 में संस्था स्तर की योजना पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

ये माड्यूल एक साथ मिलकर जिला शैक्षिक योजनाओं की तैयारी की धारणा, दृष्टिकोण, आंकड़ों के आधार और पद्धति के बारे में अच्छी अंतःदृष्टि प्रदान करते हैं। हर माड्यूल योजना की तैयारी के किसी एक पहलू पर केंद्रित है और अपने आपमें पूर्ण है। दूसरे शब्दों में, कोशिश यह की गई है कि ये माड्यूल मिलकर किसी व्यक्ति को एक विकेंद्रित ढांचे के अंदर शैक्षिक योजना के सभी पहलुओं पर अच्छा खासा अधिकार प्रदान करें और हर माड्यूल शैक्षिक योजना के किसी एक पहलू में उसकी क्षमता विकसित करे।

ये माड्यूल स्वशिक्षा के लिए नहीं है। इनके प्रमुख लक्ष्य वर्ग वे योजनाकर्मी और कार्यकर्त्ता हैं जो जिला शैक्षिक योजना संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इसलिए इन माड्यूलों को स्थानीय स्तर पर शैक्षिक योजना के पाठ्यक्रमों के आयोजन के लिए पठन–पाठन की सामग्री समझना बेहतर होगा।

इन माड्यूलों को (नीपा के लिए) न्यू कांसेप्ट, नई दिल्ली (1997) ने *माड्यूल्स आन डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग इन एजुकेशन* शीर्षक से (संपादकः एन वी वर्गीज) प्रकाशित किया है।

पुस्तक में शामिल माड्यूल इस प्रकार हैं :

1. एन वी वर्गीजः एजुकेशनल प्लानिंग ऐट द डिस्ट्रिक्ट लेविल : मीनिंग एंड स्कोप
2. एन वी वर्गीजः डायग्नोसिस आफ एजुकेशनल डवलपमेंट
3. एन वी वर्गीज : प्लान फार्मूलेशन
4. एन वी वर्गीज और के बिस्वाल : प्लानिंग फार इंप्लीमेंटेशन
5. यश अग्रवालः डेटाबेस आन एलीमेंटरी एजुकेशन इन इंडियाः स्कोप, कवरेज एंड इशूज
6. एस एम आई ए जैदी : इंडिकेटर्स आफ एजुकेशनल डवलपमेंट
7. अरुण सी मेहता : इनरोलमेंट एंड टीचर प्रोजेक्शंस
8. एन वी वर्गीज : स्कूल मैपिंग
9. एन वी वर्गीज और एस एम आई ए जैदी : माइक्रो प्लानिंग इन एजुकेशन
10. जांध्याला बी जी तिलक : एनालिसिस आफ फिनांसेज फार एजुकेशन
11. जांध्याला बी जी तिलक : एनालिसिस आफ कास्ट्स आफ एजुकेशन
12. आर गोविंद : इंस्टीट्यूशनल प्लानिंग

मूल्यरहित

3. एक्सपेंडिचर आन एजुकेशनः थ्योरीज, माडल्स एंड ग्रोथ, लेखक : श्रीप्रकाश और सुमित्रा चौधरी, (पुनर्मुद्रित)

4. डिस्ट्रिक्ट इंफार्मेसन सिस्टम फार एजुकेशनः ए युजर्स मैनुअल

योजना और प्रबंध में कंप्यूटर पर आधारित सूचना प्रणालियों के महत्व को समझते हुए नीपा ने प्रशिक्षण के अनेक कार्यक्रम और विकास के कार्यकलाप शुरू किए। जि प्रा शि कार्यक्रम की गतिविधियों की योजना, प्रबंध और निगरानी को चुस्त

1997-98

बनाने के लिए विद्यालयों से संबंधित आंकड़ों और सूचनाओं के प्रवाह और विश्लेषण का एक व्यापक माडल विकसित करने का फैसला किया गया था। नीपा ने इस चुनौती को स्वीकार किया। उसने विद्यालयों से जुड़े आंकड़ों के संग्रह का एक प्रपत्र तथा आंकड़ों के प्रवाह और विश्लेषण के लिए एक साफ्टवेयर (डिस्ट्रिक्ट इनफार्मेशन सिस्टम फार एजुकेशन) तैयार किया। नीपा ने इस साफ्टवेयर के क्रियान्वयन और उपयोग के बारे में पेशेवर और दूसरे स्टाफ के प्रशिक्षण का काम भी शुरू किया। यह परियोजना यूनिसेफ की वित्तीय सहायता से शुरू की गई और अब जि प्रा शि कार्यक्रम वाले सभी जिलों में लागू की जा रही है जिनकी संख्या आज 150 से अधिक है। इस साफ्टवेयर का सबसे हाल का प्रारूप DISE 98 है।

क्रियान्वयन और क्षमता के विकास की रणनीति के अंग के रूप में DISE 98 के उपयोगकर्ताओं के लिए एक हस्तपुस्तिका भी तैयार की गई। यह हस्तपुस्तिका 8 अध्यायों में है। इसकी खास विशेषता यह है कि उपयोगकर्ता बड़ी आसानी से इसका उपयोग कर सकते हैं। हस्तपुस्तिका में साफ्टवेयर को लगाने और चलाने का ढंग क्रमवार बतलाया गया है। इसमें जिला स्तर पर आंकड़े भरने और उनको अंतिम रूप देने से पहले उनका सत्यापन करने का ढंग भी बताया गया है। अहम नुक्ते बाक्स में दिखाए गए हैं ताकि वे उपयोग करनेवालों की निगाहों से छूट न जाएं। एक त्वरित संदर्भ के रूप में अकसर पूछे जानेवाले प्रश्न दिए गए हैं। हस्तपुस्तिका में एक जिले से नमूना भी दिया गया है। साफ्टवेयर के इस्तेमाल से किस–किस प्रकार की तालिकाएं प्राप्त की जा सकती हैं, इसका पता इस नमूने से चलता है। कंप्यूटर के पेशेवर व्यक्तियों ने तथा जिला और राज्य स्तर पर दूसरे उपयोगकर्ताओं ने इस हस्तपुस्तिका का व्यापक उपयोग किया है।

नीपा की पत्रिकाएं

संस्थान दो पत्रिकाओं का प्रकाशन करता है—अंग्रेजी में *जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन* और हिंदी में *परिप्रेक्ष्य*। इस वर्ष दोनों पत्रिकाओं के निम्नलिखित सात अंक प्रकाशित किए गए:

1-4 जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन: वर्ष 11 अंक 1 (जनवरी 1997), वर्ष 11 अंक 2 (अप्रैल 1997), वर्ष 11 अंक 3 (जुलाई 1997) और वर्ष 11 अंक 4 (अक्तूबर 1997)

5-7 परिप्रेक्ष्य: वर्ष 2 अंक 3 (दिसंबर 1995), वर्ष 3 अंक 1 (अप्रैल 1996) वर्ष 3 अंक 2 (अगस्त 1996)

नीपा न्यूजलेटर

नीपा न्यूजलेटर का एक अंक जनवरी 1997 प्रकाशित किया गया।

एनट्रिप न्यूजलेटर

इस वर्ष एनट्रिप (एशियन नेट वर्क आफ ट्रेनिंग एंड रिसर्च इंस्टीट्यूशंस इन एजुकेशनल प्लानिंग) न्यूजलेटर के दो अंक (जनवरी–जून 1997 और जुलाई–दिसंबर 1997) प्रकाशित किए गए।

प्रकाशनाधीन

1-2 असम और बिहार में शैक्षिक प्रशासन के सर्वेक्षण की रिपोर्टें (समूल्य)

3. **रिफार्मिंग स्कूल एजुकेशन : इशूज इन पालिसी, प्लानिंग एंड इंप्लिमेंटेशन,** संपादक : वाई पी अग्रवाल और कुसुम प्रेमी, समूल्य।

4. **एजुकेशन फार आल इन इंडिया : इनरोलमेंट प्रोजेक्शंस,** लेखक: अरुण सी मेहता (समूल्य)

5. **मैनेजमेंट आफ आटोनमी इन आटोनमस कालेजेज,** लेखिका : के सुधा राव (समूल्य)

6. **आटोनमस एंड नान आटोनमस कालेजेज: सम केस स्टडीज,** लेखकगण: के सुधाराव, जार्ज मैथ्यू और सुधीर सामंत राय (समूल्य)

7. **जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन,** वर्ष 12, अंक 1, जनवरी 1998 (समूल्य)।

8. **परिप्रेक्ष्य** वर्ष 3, अंक 3, दिसंबर 1996

अनुलेखित प्रकाशन

संस्थान ने अनेक अनुलेखित/जिराक्स रूप में शोध अध्ययनों, सामयिक आलेखों, रिपोर्टों तथा विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों की पाठ्यसामग्रियों का प्रकाशन भी किया।

1997-98

अध्याय 4

पुस्तकालय, प्रलेखन केंद्र और अकादमिक समर्थन प्रणाली

पुस्तकालय/प्रलेखन केंद्र

संस्थान के पास शैक्षिक योजना, प्रशासन और शास्त्रीय विषयों पर एक समृद्ध पुस्तकालय है। इसे एशिया क्षेत्र में शैक्षिक योजना और प्रबंध पर सबसे समृद्ध पुस्तकालयों में शामिल किया जा सकता है। इससे केवल सकाय, शोधछात्रों और विभिन्न कार्यक्रमों के भागीदारों की ही जरूरतें पूरी नहीं होती बल्कि अंतरपुस्तकालय ऋण व्यवस्था के माध्यम से दूसरे संगठनों की जरूरतें भी पूरी होती हैं। यहां की वाचनालय सुविधाएं सभी के लिए उपलब्ध है।

समीक्षित काल में पुस्तकालय/प्रलेखन केंद्र में 1181 पुस्तकों और दस्तावेजों की वृद्धि हुई। (इनमें 1031 परिगृहीत और 150 अपरिगृहीत थीं।) इस समय पुस्तकालय/प्रलेखन केंद्र के पास संयुक्त राष्ट्र, यूनेस्कों आर्थिक सहयोग–विकास संगठन, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, यूनिसेफ, विश्व बैंक आदि अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा आयोजित संगोष्ठियों और सम्मेलनों की रिपोर्टों के एक समृद्ध संग्रह के अलावा 50244 पुस्तकों का एक संग्रह भी है।

पत्रिकाए

पुस्तकालय/प्रलेखन केंद्र में शैक्षिक योजना, प्रशासन, प्रबंध और दूसरे संबद्ध विषयों पर 350 पत्रिकाएं आती हैं। इन पत्रिकाओं में प्रकाशित सभी महत्वपूर्ण लेखों की सूची तैयार की जाती है। समीक्षित काल में इन पत्रिकाओं से 1700 लेखों की सूची तैयार की गई।

अखबारों की कतरनें

पुस्तकों और पत्रिकाओं के अलावा पुस्तकालय/प्रलेखन केंद्र मे आनेवाले 22 समाचार पत्रों से शैक्षिक योजना और प्रशासन संबंधी कतरनों का एक विशेष संग्रह भी रखा जाता है।

अमुद्रित सामग्री

यह पुस्तकालय एक बहुमाध्यमी संसाधन केंद्र है। इसमें वीडियो कैसेटों, आडियो कैसेटों, फिल्मों, माइक्रो फिल्मों और माइक्रोफिंचों का एक संग्रह भी मौजूद है। इस समय यहां 6 फिल्में, 40 वीडियो कैसेट, 80 आडियो कैसेट, 50 माइक्रोफिल्में और 109 माइक्रोफिंचें हैं।

समसामयिक ज्ञान सेवा

शिक्षा संबंधी पत्र-पत्रिकाएं : हर पखवाड़े में आनेवाली शैक्षिक पत्रिकाओं के लेखों के बारे में पाठकों को जानकारी देते रहने के लिए पुस्तकालय ने अपना पाक्षिक अनुलेखित प्रकाशन पीरियाडिकल्स इन एजुकेशन : टाइटिल्स रिसीव्ड एंड देयर कंटेंट का प्रकाशन जारी रखा।

नीपा पुस्तकालय/प्रलेखन केंद्र की प्राप्तियां

पुस्तकालय/प्रलेखन केंद्र में आनेवाले प्रकाशनों की कंप्यूटर से मासिक सूचियां भी तैयार की जाती हैं। इससे पाठकों की उनकी रूचि के दस्तावेजों, लेखों और नई सामग्रियों की जानकारी मिलती रहे।

सूचनाओं का चुनिंदा प्रसारण

पुस्तकालय ने संस्थान के अकादमिक एककों और शोध परियोजनाओं के अध्ययन दलों को नई सूचनाएं उपलब्ध कराई ताकि वे लाभकारी उपयोग कर सकें।

संदर्भ-सूची

इस काल में पुस्तकालय ने संस्थान के विभिन्न कार्यकलापों के लिए 250 संदर्भ सूचियां तैयार कीं।

पुस्तकालयों का नेटवर्किंग

नीपा पुस्तकालय/प्रलेखन केंद्र ने 1995 में दिल्ली लाइब्रेरी नेटवर्क (डेलनेट) की सदस्यता ग्रहण की। इससे हमें

नीपा पुस्तकालय में प्रशिक्षण कार्यक्रम के भागीदार

कंप्यूटर केंद्र में कार्यरत स्टाफ

एशियाई विकास बैंक प्रायोजित श्रीलंका कार्यक्रम का एक सत्र

हिंदी माह के समापन के अवसर पर कवि सम्मेलन

1997-98

निम्नलिखित सुविधाएं प्राप्त हुईं :

(अ) **फोन पर संपर्क :** दिल्ली के 65 पुस्तकालयों पर फोन पर संबंध स्थापित हुआ। ये 65 पुस्तकालय भी नीपा पुस्तकालय के संग्रह के बारे में फोन पर जानकारी पा सकते हैं।

(ब) **ई-मेल सेवा :** दिल्ली की 91 संस्थाओं से संबंध स्थापित हो चुका है।

रेनिक (RENNIC) के माध्यम से देश के दूसरे भागों से संपर्क स्थापित हो चुका हैं।

विदेश संचार निगम लि के द्वारा इंटरनेट से संपर्क स्थापित हो चुका हैं।

इस सुविधा के सहारे नीपा का संकाय देश–विदेश से अपनी डाक ई–मेल द्वारा मंगा और भेज सकता है। साथ ही पुस्तकालय भी पहले से कम समय में उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताएं पूरी कर सकता है।

एजुकेशन फाइल

नीपा का पुस्तकालय जयशंकर समृति केंद्र के सहयोग से *एजुकेशन फाइल* का प्रकाशन कर रहा है। यह देश में शिक्षा के क्षेत्र में मौजूदा जारी प्रवृत्तियों को एक जगह लाकर सुचनाओं की आवश्यकता को पूरा करने का एक प्रयास है।

यह फाइल अंग्रेजी–हिंदी में शिक्षा के सभी पहलुओं पर प्रकाशित खबरों का संग्रह है। इस फाइल में देश भर से 30 अखबरों से खबरें ली जाती हैं। यह एक मासिक प्रकाशन है। मई 1996 में इसका प्रकाशन आरंभ किया गया था। पुस्तकालय/प्रलेखन केंद्र द्वारा समीक्षित काल में इसके 12 अंक प्रकाशित किए गए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

सलवान शिक्षा ट्रस्ट के विद्यालयों में मौजूद पुस्तकालयों से 22 पुस्तकाध्यक्षों ने विद्यालय पुस्तकाल की योजना और प्रबंध पर आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम में भाग लिया। यह कार्यक्रम 21 से 26 अप्रैल 1997 तक चला।

प्रलेखन केंद्र

संस्थान के कार्यक्रमों और विशेष रूप से राज्यों और संघीय क्षेत्रों की जरूरतों से जुड़े कार्यक्रमों को सूचनाओं का एक कारगर आधार देने के लिए पुस्तकालय का प्रलेखन केंद्र शैक्षिक योजना और प्रशासन पर उन संदर्भ सामग्रियों का संग्रह करता है जो केंद्र, राज्यों, संघीय क्षेत्रों, शिक्षा विभागों, जिला अधिकारियों और शिक्षा संस्थाओं द्वारा प्रकाशित की जाती हैं। सूचनाओं के संग्रह, भंडारण और प्रसार पर यह केंद्र खास जोर देता है ताकि संस्थान सूचनाओं के निकासीघर की भूमिका निभा सके।

इस वर्ष केंद्र में 408 दस्तावेज शामिल कीए गए। इस समय केंद्र के पास 19,869 दस्तावेज हैं। इनमें राज्यों के गजेटियर, राज्य जनगणनाओं की पुस्तिकाएं, शैक्षिक सर्वेक्षण, राज्यों की शैक्षिक योजनाएं, पंचवर्षीय योजनाएं, बजट, राज्य विश्वविद्यालयों की हस्तपुस्तिकाए, बुनियादी स्रोतग्रंथ और संदर्भ–सूचियां, अखबारी कतरनें, राज्यों की शैक्षिक आचार संहिताएं, कानून, नियम–कायदे, तकनीकी–आर्थिक और प्रतिदर्शी सर्वेक्षण, जिलों के गजेटियर, जिला जनगणनाओं की पुस्तिकाएं, वार्षिक योजनाएं, शैक्षिक योजनाएं, जिला साख योजनाएं, जिलों के प्रतिदर्शी सर्वेक्षण, जिलों के शैक्षिक सर्वेक्षण, जिलों की सांख्यिकीय हस्तपुस्तिकाएं, गांव और प्रखंड स्तर की योजनाएं और अध्ययन, शोधों और परियोजनाओ की रिपोर्टें, संसाधन अध्ययन कोश, तकनीकी–आर्थिक सर्वेक्षण, जि प्रा शि कार्यक्रम की योजनाएं और अध्ययन, तथा विश्वविद्यालयों के शोध प्रबंध शामिल हैं।

देश भर से उपहारों के आदान प्रदान के आधार पर केंद्र में 105 शिक्षाशास्त्रीय व संबद्ध पत्रिकाएं आती हैं।

प्रलेखन केंद्र में निम्नलिखित के विशेष संग्रह भी मौजूद हैं:

(1) नीपा के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रिपोर्टें, 1962 से 1998 तक।

(2) शैक्षिक योजना और प्रशासन के डिप्लोमा और अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रमों के भागीदारों द्वारा प्रस्तुत किए गए लघुशोधप्रबंध;

(3) नीपा के अनुसंधान अध्ययन (1962-98) तक।

(4) विश्वविद्यालयों के शोधप्रबंध;

(5) जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम की दस्तावेजें, रिपोर्टें।

प्रलेखन केंद्र की सामग्री केवल संदर्भ के लिए है। नीपा के संकाय, शोधकर्ता स्टाफ और प्रशिक्षार्थी ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संस्थाओं के शोधछात्र भी इसका व्यापक और कारगर उपयोग करते हैं। इस वर्ष 1326 विद्वानों ने केंद्र की सेवाओं का उपयोग किया।

कंप्यूटर केंद्र

संस्थान के पास एक सुसज्जित कंप्यूटर केंद्र हैं जिसमें अनेक प्रकार के कंप्यूटर और प्रिंटर मौजूद हैं। यह केंद्र सभी अकादमिक एककों को तथा पुस्तकालय, प्रशासन और वित्त अनुभाग को भी कंप्यूटर की सुविधाएं प्रदान करता है। अकादमिक एककों को प्रशिक्षण, अनुसंधान और दूसरे कार्यकलापों में सहायता दी जाती है। यह केंद्र प्रेस–पूर्व पृष्ठ तैयार करके संस्थान के विभिन्न प्रकाशन–कार्यों में भी सहयोग देता हैं। ये जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, एनट्रिप न्यूजलेटर, वार्षिक रिपोर्ट आदि ऐसे कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन हैं। केंद्र के पास ई–मेल और इंटर नेट की सुविधाएं भी हैं।

एक पेंटियम सर्वर मशीन स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क की सुविधा जुटाती है। इसका ढांचा 25 नोडों पर आधारित है पर संस्थान के लगभग सभी कक्ष इससे जोड़े गए हैं। इस तरह सर्वर और अधिक बिंदुओं पर सुलभ होता है और विभिन्न स्थानों से अनेक एप्लिकेशन साफ्टवेयर्स का उपयोग किया जा सकता है।

उपरोक्त हार्डवेयर के अलावा केंद्र में अनेक प्रकार के साफ्टवेयर पैकेज हैं–अलग–अलग प्रयुक्त होनेवाले तथा स्थानीय नेटवर्क की श्रेणी वाले भी। इनमें से कुछ साफ्टवेयर इस प्रकार है : लोटस 1-2-3 (रिला 3), डी–बेस 4, विंडोज के लिए एस पी एस एस, साफ्टकेल्क, साफ्टवर्ड, साफ्टबेस, वर्डस्टार 6, माइक्रोसाफ्ट आफिस 97, विंडोज 95 आदि। प्रोग्राम के लिए कोबाल, फोर्ट्रान, पास्कल और सी कंपाइलरों का उपयोग किया जाता है। अनेक साफ्टवेयर सरल उपयोग वाले भी हैं। इनका उपयोग शिक्षा और अन्य क्षेत्रों से जुड़े आंकड़ों के परिमाणात्मक विश्लेषण के लिए किया जाता है।

मानचित्रण कक्ष

मानचित्रण कक्ष विभिन्न प्रकाशनों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और शोध परियोजनाओं के लिए मानचित्रों, ग्राफों, चार्टों, तालिकाओं और पारदर्शियों के माध्यम से आंकड़ों और सूचनाओं को प्रस्तुत करने की नई–नई विधियां विकसित करता रहा है। यह कक्ष चित्रों, आर्गेनोग्रामों, आंकड़ों के पोस्टरों और शीर्षक पृष्ठों आदि की तैयारी में विभिन्न प्रकार की परियोजनाओं और कार्यक्रमों को कंप्यूटर ग्राफिक की सुविधाएं प्रदान करता है।

इस कक्ष ने हिमाचल प्रदेश, असम और बिहार में शैक्षिक प्रशासन की रिपोर्टों तथा भारत में 'सभी के लिए शिक्षा : नामांकन के प्रक्षेपण' जैसे प्रकाशनों में भी अनेक चित्रों का योगदान किया है।

हिंदी कक्ष

हिंदी कक्ष अनुवाद की सुविधांए और अनुसंधान, प्रशिक्षण और प्रशासन में अकादमिक सहायता प्रदान करता है। यह विभिन्न प्रकाशनों को हिंदी में लाने में ही नहीं बल्कि राजभाषा नीति के क्रियान्वयन में भी सहायता देता है।

संस्थान के हिंदी कक्ष ने समीक्षित वर्ष में रोजमर्रा के कार्यों के अलावा अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए :

(अ) हिंदी के प्रगामी प्रयोग की समीक्षा के लिए संस्थान की राजभाषा क्रियान्वयन समिति की बैठकें की गईं।

(ब) प्रकाशन के लिए लेख का चयन करने के उद्देश्य से हिंदी पत्रिका परिप्रेक्ष्य के संपादकमंडल की बैठकें की गईं।

(स) परिप्रेक्ष्य के तीन अंक प्रकाशित किए गए और अगले तीन अंकों की पांडुलिपियां तैयार की गईं।

(द) हिंदी में निम्नलिखित का अनुवाद और उन्हें प्रकाशन के लिए तैयार किया गया–

(1) वार्षिक रिपोर्ट : 1996-97

(2) प्रशिक्षण कार्यक्रम : 1998-99

(य) हिंदी दिवस का आयोजन : हिंदी दिवस के अवसर पर

1997-98

1 से 15 सितंबर 1997 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। इस पखवाड़े के दौरान हिंदी में निबंध लेखन नेटिंग और ड्राफ्टिंग, अनुवाद और टाइपिंग जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। 16 सितबंर 1997 को पुरस्कार वितरण समारोह मनाया गया। जब कवि गोष्ठी आकर्षण का मुख्य केंद्र थी। गंगाप्रसाद विमल, सरोजिनी प्रीतम, सुधा अरोड़ा, विजयकुमार मलहोत्रा, महेंद्र शर्मा, धनंजय सिंह और हीरालाल बछौतिया जैसे सुज्ञात हिंदी कवियों ने अपनी कविताएं पढ़ीं।

(र) 11 से 15 सितंबर 1997 तक पांच दिनों की हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें संस्थान के 35 अधिकारी और कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गाय।

(ल) राजभाषा प्रयोग सहायिका, भाग 2 (अकादमिक) की पांडुलिपि के पहले प्रारूप को अंतिम रूप दिया गया।

1997-98

अध्याय 5

संगठन, प्रशासन और वित्त

संगठनात्मक ढांचा

नीपा सोसायटी पंजीकरण कानून के तहत पंजीकृत एक स्वायत्त संगठन है और भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय से उसे वित्तीय सहायता–अनुदान प्राप्त होता है। एक परिषद्, एक कार्यकारी समिति, एक वित्त समिति, और एक योजना और कार्यक्रम समिति नीपा के प्रमुख निकाय हैं। संस्थान का निदेशक उसका प्रमुख कार्यकारी अधिकारी होता है और भारत सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है। उसकी सहायता संयुक्त निदेशक करता है। कुल सचिव कार्यालय का प्रमुख तथा पूरे प्रशासन का प्रभारी होता है।

परिषद्

संस्थान का शीर्ष निकाय परिषद है। इसका प्रमुख अध्यक्ष होता है जिसे भारत सरकार मनोनीत करती है। नीपा का निदेशक परिषद का उपाध्यक्ष होता है। राष्ट्रीय और प्रादेशिक शिक्षा व्यवस्थाओं के कार्यपालक और यशस्वी शिक्षाशास्त्री परिषद के सदस्य होते हैं। जैसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अध्यक्ष; भारत सरकार के चार सचिव (शिक्षा, वित्त, कार्मिक और योजना आयोग); राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद का निदेशक; राज्यों और संघीय क्षेत्रों के छः शिक्षा सचिव और छः शिक्षा निदेशक; छः यशस्वी शिक्षाशास्त्री; कार्यकारी समिति के सभी सदस्य; और नीपा संकाय के तीन सदस्य। नीपा का कुलसचिव परिषद का सचिव होता हैं।

परिषद का मुख्य कार्य संस्थान के उद्देश्यों को आगे बढ़ाना और उसके कार्यकलापों पर आम निगरानी रखना है।

31 मार्च 1998 के अनुसार परिषद के सदस्यों की सूची परिशिष्ट I में दी गई है।

कार्यकारी समिति

संस्थान का निदेशक इसका पदेन अध्यक्ष होता है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), वित्त मंत्रालय और योजना आयोग के सचिव, किसी एक राज्य का शिक्षा सचिव, एक यशस्वी शिक्षाशास्त्री, एक राज्य सरकार का निदेशक, शैक्षिक योजना और प्रबंध में सक्रिय एक राज्य शिक्षा संस्थान का निदेशक, नीपा का संयुक्त निदेशक, तथा नीपा के परिषद में शामिल तीन संकाय सदस्यों में से दो कार्यकारी समिति के सदस्य होते हैं। नीपा का कुलसचिव कार्यकारी समिति का सचिव होता है।

यह समिति संस्थान के मामलों और धन के प्रबंध के लिए जिम्मेदार होती है, और परिषद की सभी शक्तियों के प्रयोग का अधिकर रखती है। 31 मार्च 1998 के अनुसार कार्यकारी समिति के सदस्यों की सूची परिशिष्ट II में दी गई है।

वित्त समिति

वित्त समिति का गठन अध्यक्ष करता है। इसमें संस्थान के निदेशक की पदेन अध्यक्षता में पांच सदस्य होते हैं। इसमें परिषद् के वित्तीय सलाहकार और वे सदस्य शामिल होते हैं जो अध्यक्ष द्वारा मनोनीत हों। नीपा का कुलसचिव वित्त समिति के सचिव का कार्य करता है।

यह समिति खातों और बजट के अनुमानों की छानबीन करती हैं और व्यय के नए प्रस्तावों और दूसरे वित्तीय विषयों पर अपनी सिफारिशें देती हैं। 31 मार्च 1998 के अनुसार वित्त समिति के सदस्यों की सूची पारिशिष्ट III में दी गई हे।

योजना और कार्यक्रम समिति

निदेशक योजना और कार्यक्रम समिति का पदेन अध्यक्ष होता है। इसके अलावा संयुक्त निदेशक, नीपा के अकादमिक एककों के अध्यक्ष, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), योजना आयोग और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के एक–एक प्रतिनिधि, एक विश्वविद्यालय का कुलपति (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत), राज्य सरकारों के दो शिक्षा सचिव और दो शिक्षा निदेशक (भारत सरकार द्वारा मनोनीत); और राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत छः शिक्षाशास्त्री/समाज वैज्ञानिक/प्रबंध के विशेषज्ञ (जिसमें से दो महिलाओं/लड़कियों की

1997-98

शिक्षा, एक अनुसूचित जातियों/जनजातियों की शिक्षा और एक अल्पसंख्यकों की शिक्षा से संबद्ध हो) इस समिति के सदस्य होते हैं।

31 मार्च 1998 के अनुसार इस समिति के सदस्यों की सूची परिशिष्ट IV में दी गई है।

इस समिति से आशा की जाती है कि संस्थान के विभिन्न कार्यक्रमों को स्वीकृति और अंतिम रूप दे, उसके दीर्घकालिक और अल्पकालिक अकादमिक परिप्रेक्ष्यों और योजनाओं का विकास करे, संस्थान द्वारा नियोजित अनुसंधान, प्रशिक्षण प्रसार और परामर्शकारी कार्यक्रमों का वार्षिक समेकन करे, उनका अध्ययन करे तथा कमियों और प्राथमिकता के क्षेत्रों की पहचान करे।

अकादमिक एकक

संस्थान का संकाय निम्नलिखित नौ अकादमिक एककों में विभाजित है :

शैक्षिक योजना, शैक्षिक प्रशासन, शैक्षिक वित्त, शैक्षिक नीति, विद्यालय और अनौपचारिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, प्रादेशिक प्रणाली, अंतर्राष्ट्रीय, तथा संक्रियात्मक अनुसंधान और प्रणाली प्रबंधन। इन एककों के दृष्टिकोण और अकादमिक प्राथमिकताओं का वर्णन अध्याय 1 में किया जा चुका है।

इनमें शैक्षिक नीति एकक को छोड़ कर शेष सभी एककों के अध्यक्ष वरिष्ठ अध्येता हैं।

सभी अकादमिक एककें अपने-अपने क्षेत्र में पूरे दायित्व के साथ विकास और प्रशिक्षण, अनुसंधान संबंधी कार्य करती हैं और अपेक्षित परामर्शकारी सेवाएं प्रदान करती हैं।

कार्यबल और समितियां

निदेशक द्वारा विशेष कार्यक्रमों के लिए समय-समय पर विशेष कार्यबलों और समितियों का गठन किया जाता है।

विभिन्न शोध परियोजनाओं में सलाह देने तथा उनकी प्रगति पर निगरानी रखने के लिए विशेषज्ञों को शामिल करके परियोजना सलाहकार समितियां गठित की जाती हैं।

निदेशक की अध्यक्षता में एक अनुसंधान अध्ययन सलाहकार बोर्ड शैक्षिक योजना और प्रशासन संबंधी अध्ययनों के लिए सहायता-योजना हेतु प्राप्त प्रस्तावों पर विचार करता है। इसमें दूसरों के अलावा अकादमिक एककों के अध्यक्ष भी सदस्य होते है। कुलसचिव इसका सदस्य सचिव होता है।

प्रशासन और वित्त

प्रशासन का ढांचा तीन अनुभागों और दो कक्षों—अकादमिक प्रशासन, कार्मिक प्रशासन, सामान्य प्रशासन, प्रशिक्षण कक्ष और समन्वय कक्ष—पर आधारित है। अकादमिक प्रशासन और समन्वय कक्ष सीधे कुलसचिव को अपनी रिपोर्ट देते हैं। कुलसचिव के अंतर्गत प्रशासनिक अधिकारी कार्मिक प्रशासन, सामान्य प्रशासन और प्रशिक्षण कक्ष के कामों पर निगरानी रखता है।

वित्त अधिकारी वित्त और लेखा अनुभाग का प्रभारी होता है और अपनी रिपोर्ट कुलसचिव को देता है।

31 मार्च 1998 तक संस्थान की कुल स्टाफ संख्या 181 थी। संस्थान के स्वीकृत स्टाफ का श्रेणीवार वितरण इस प्रकार है।

संवर्ग पद	संख्या
संकाय	50
अकादमिक सहायता	14
प्रशासन, वित्त, सचिवालय और अन्य तकनीकी स्टाफ	73
समूह घ	44
योग	**181**

स्टाफ में परिवर्तन

श्री के श्रीनिवास 5.6.1997 (पूर्वाह्न) से प्रणाली विश्लेषक नियुक्त किए गए।

सुश्री एकता नाहर 28.7.1997 से कंप्यूटर प्रोग्रामर नियुक्त की गईं।

अंतर्राष्ट्रीय एकक के अध्यक्ष और डा. के. जी. विरमानी को सेवा आयु पूरी होने पर 31.07.1997 को सेवा निवृत्त किया गया।

प्रोफेसर कुलदीप माथुर ने 1.8.1997 को नीपा के निदेशक का पद छोड़ दिया।

1997-98

मानव संसाधन विकास मत्रालय, शिक्षा विभाग में संयुक्त सचिव (योजना) श्री चंपक चटर्जी ने 1.8.1997 से संस्थान के कार्यकारी निदेशक का कार्य भार संभाला।

डा. (श्रीमती) नीलम सूद ने 5.9.1997 से अध्येता का पद ग्रहण किया।

अवर लिपिक श्री शंकर लाल को सेवा आयु पूरी होने पर 30.11.1997 को सेवानिवृत्ति दी गई।

श्री एस के मलिक, जो प्रतिनियुक्ति के तहत कार्यक्रम अधिकारी बनकर राष्ट्रीय अध्यापक शि॰ परिषद गए थे, 4.12.97 को वापस नीपा में कार्यभार ग्रहण किए।

शैक्षिक योजना एकक में वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष प्रोफेसर श्रीप्रकाश को सेवा आयु पूरी होने पर 31.12.1997 को सेवानिवृत्ति दी गई।

विदेश यात्राएं

नीपा के निदेशक **प्रोफेसर कुलदीप माथुर** ने 6 जून से 17 जुलाई 1997 तक सामाजिक अध्ययन संस्थान, हेग, नीदरलैंड में परियोजना पालिसी टेकनोक्रेसी एंड डवलपमेंट : कैपेरेटिव स्टडी इन इंडिया एंड नीदरलैंड" नामक परियोजना में काम किया।

दक्षिण अफ्रीकी शिक्षा व्यवस्था के रूपांतरण का अध्ययन करने के लिए वरिष्ठ अध्येता **डा. आर गोविंद** ने 22 से 27 जून 1997 तक दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया।

उन्होंने लोक जुंबिश में विद्यालय मानचित्रण के अध्ययन के बारे में नीपा अं शै यो संस्थान की एक शोध परियोजना के सिलसिले में 7 से 26 जुलाई 1997 तक अ शै यो संस्थान, पेरिस का दौरा भी किया।

शैक्षिक वित्त एकक में वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष **डा जे बी तिलक** ने एशिया–प्रशांत क्षेत्र की उच्च शिक्षा पर मनीला, फिलीपीन में 23 से 26 जून 1997 तक आयोजित क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

उन्होंने 8 से 10 जुलाई 1997 तक टोकियो में उच्च शिक्षा : राष्ट्रीय रणनीतियां और क्षेत्रीय सहयोग विषय पर आयोजित क्षेत्रीय सम्मेलन में संसाधन व्यक्ति के रूप मे भाग लिया।

सेनफ्रांस्स्किों, अमरीका में 28 से 30 जुलाई 1997 तक आयोजित, "पूर्वी एशियाई विकास में सामाजिक व्यय" विषय पर विश्व बैंक की ब्रेन ट्रस्ट कार्यशाला में भी भाग लिया।

एशिया की संक्रमणशील अर्थव्यवस्था में उच्च शिक्षा की नीतियां और कार्यप्रणाली पर सेन, चीन में दिनांक 7-10 अक्तूबर 1997 के दौरान आयोजित यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यशाला में भागीदारी।

कुनिंग चीन में 16-19 अप्रैल के दौरान ग्रेटर मेकांवा उप–क्षेत्र के संक्रमणक अर्थव्यवस्था में आर्थिक सुधार और अर्थशास्त्र अध्यापन तथा प्रशिक्षण पर आयोजित क्षेत्रीय संगोष्टी में भागीदारी

परिसर की सुविधाएं

संस्थान के पास चार मंजिलों वाला एक कार्यालय भवन, सात मंजिलों में स्नानघरों से युक्त 48 कमरों वाला एक छात्रावास, तथा एक आवासी क्षेत्र है जिसमें टाइप एक के 16 टाइप दो से पांच तक के 8-8 क्वार्टर तथा निदेशक आवास हैं।

छात्रावास के विकास और उन्नयन का काम कमोबेश पूरा हो चुका है। इसमें वार्डेन का आवास, संकाय अतिथि के निवास की सुविधा, अतिरिक्त ब्लाक, भोजनालय का विस्तार आदि शामिल हैं।

वित्त

इस वर्ष संस्थान को 425.31 लाख रुपये का अनुदान मिला (इसमें गैर–योजना मद में 116.98 लाख और योजना मद में 308.33 लाख रुपये शामिल थे) जबकि 1996-97 में उसे 197.59 लाख रुपये (गैरयोजना 97.70 लाख, योजना 99.89 लाख रूपये) प्राप्त हुए थे। साल के शुरू में संस्थान के पास 8.19 लाख रुपये (गैरयोजना 8.02 लाख, योजना 0.17 लाख रुपये) की रकम बकाया थी। इस साल कार्यालय और छात्रावास से 53.96 लाख रुपये की प्राप्ति हुई।

दूसरे संगठनों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों/अध्ययनों की मद में संस्थान के पास 57.40 लाख रुपयों की रकम बकाया थी और इस साल 132.70 लाख रूपयों की रकम प्राप्त हुई। इस साल प्रायोजित कार्यक्रमों और अध्ययनों पर कुल 105.98 लाख रुपये व्यय किए गए।

वार्षिक लेखा और लेखा परीक्षा की विस्तृत रिपोर्ट परिशिष्ट VI में प्रस्तुत है।

1997-98

अनुलग्नक - 1

वर्ष 1997-98 में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम/कार्यशालाएं/संगोष्ठियां और सम्मेलन

क्रम सं	एकक का कोड	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथि व अवधि	भागीदारों की संख्या
डिप्लोमा कार्यक्रम				
राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम				
1.	01.0 (जारी)	*जिला शिक्षा अधिकारियों/जि शि प्र संस्थानों के संकाय और अन्य कार्मिकों के लिए शैक्षिक योजना और प्रशासन का 17वां डिप्लोमा (दूसरा चरण)	29 जनवरी से 2 अप्रैल 1997 (2 दिन)	29
		वही (तीसरा चरण)	20-24 जुलाई 1997 (5 दिन)	
2.	01.1	जि शि अधिकारियों/जि शि प्र संस्थानों के संकाय और अन्य कार्मिकों के लिए शैक्षिक योजना प्रशासन 18वां डिप्लोमा (पहला और दूसरा चरण)	10 नवंबर 1997 से 10 मई 1998 (142 दिन)	17
		2	149	46
अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम				
3.	01.0 (जारी)	*शैक्षिक योजना और प्रशासन का 13वां अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा (पहला व दूसरा चरण)	2 फरवरी से 2 अगस्त 1997 (124 दिन)	33
4	01.4	शैक्षिक योजना और प्रशासन का 14वां अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा (पहला चरण)	2 फरवरी से 31 जुलाई 1998 (58 दिन)	25
		2	182	58

1997-98

क्रम सं	एकक का कोड	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथि और अवधि	भागीदारों की संख्या
शैक्षिक योजना और प्रशासन क्षेत्र में विषयवार कार्यक्रम				
विद्यालय-प्रमुखों के लिए योजना और प्रबंध				
5.	02.6	माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के लिए संस्थागत योजना पर अभिविन्यास कार्यक्रम	18-29 अगस्त 1997 (12 दिन)	42
	1		12	42
आदिवासी शिक्षा की योजना और प्रबंध				
6-8.	02.1 से 02.3	आदिवासी शिक्षा की योजना और प्रबंध पर अध्यापकों के लिए क्षेत्र स्तर की तीन कार्यशालाएं (क्षेत्र आधारितः विजयनगर)	8-10 अप्रैल 1997 (3 दिन)	150
9-11.	02.7 से 02.9	आदिवासी शिक्षा की योजना और प्रबंध पर कार्यरत अध्यापकों के लिए क्षेत्र स्तर की तीन कार्यशालाएं (क्षेत्र–आधारित जिला कुर्नूल, आंध्रप्रदेश)	14-16 सितंबर 1996 (3 दिन)	150
12.	02.11	आदिवासी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के लिए आदिवासी शिक्षा और विद्यालय संकुलों की योजना और प्रबंध पर कार्यशाला (क्षेत्र आधारित : पूर्वी गोदावरी जिला)	19-21 दिसंबर 1997 (3 दिन)	50
	7		9	350
आश्रम विद्यालयों के प्रमुखों के लिए योजना और प्रबंध				
13.	02.4	आंध्रप्रदेश के आश्रम विद्यालयों के प्रमुखों के लिए संस्थागत योजना और प्रबंध का अभिविन्यास कार्यक्रम	14-25 जुलाई 1997 (12 दिन)	30
	1		12	30
अल्पसंख्यक प्रबंध वाली संस्थाओं की योजना और प्रबंध				
14.	07.4	अल्पसंख्यक प्रबंध वाली संस्थाओं की योजना और प्रबंध पर अभिविन्यास कार्यक्रम	13-24 अक्तूबर 1997 (12 दिन)	34
	1		12	34

1997-98

क्रम सं	एकक का कोड	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथि और अवधि	भागीदारों की संख्या
उच्च शिक्षा का योजना और प्रबंध				
15.	06.1	नवीं पंचवर्षीय योजना के क्रियान्वयन पर बैठक	29-30 सितंबर 1997 (2 दिन)	18
16.	06.2	ग्रामीण महाविद्यालयों के प्राचार्यों के लिए योजना और प्रबंध पर अभिविन्यास कार्यक्रम	10-28 नवंबर 1997, (19 दिन)	45**
17.	06.3	ग्रामीण महाविद्यालयों के संस्थागत आत्म–मूल्यांकन पर राष्ट्रीय कार्यशाला	25-26 नवंबर 1997 (2 दिन)	**
18.	06.4	प्राचार्यों के लिए महाविद्यालयों की योजना और प्रबंध पर अभिविन्यास कार्यक्रम	5-23 जनवरी 1998 (19 दिन)	33
19.	06.5	अकादमिक स्टाफ विकास : तथ्य और आंकड़े–अकादमिक स्टाफ कालेजों की समीक्षा बैठक की रिपोर्ट	28-30 जनवरी 1998 (3 दिन)	40
		5	45	136
कंप्यूटरों के उपयोग की योजना और प्रबंध				
20.	09.5	वि अ आयोग के अधिकारियों के लिए कंप्यूटर की जानकारी	16 मई 1997 (1 दिन)	20
21.	09.10	शैक्षिक योजना और प्रबंध में कंप्यूटरों के उपयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	8-19 सितंबर 1997 (12 दिन)	16
		2	13	36
शैक्षिक योजना की परिमाणात्मक तकनीकें				
22.	01.1	शैक्षिक योजना की परिमाणात्मक तकनीकों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	28 जुलाई 8 अगस्त 1997 (12 दिन)	31
23.	01.2	सार्वभौम प्रारंभिक शिक्षा के संदर्भ में शैक्षिक योजना की परिमाणात्मक तकनीकें	16-26 सितंबर 1997 (11 दिन)	56
		2	23	87

** इन दोनों कार्यक्रमों में वही भागीदार समान थे।

1997-98

क्रम सं	एकक का कोड	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथि और अवधि	भागीदारों की संख्या
DISE / शैक्षिक प्रबंध सूचना प्रणाली का क्रियान्वयन				
24.	09.1	उड़ीसा के जि प्रा शि कार्यक्रम-2 वाले जिलों में DISE का क्रियान्वयन	21-23 अप्रैल 1997 (3 दिन)	9
25.	09.2	आंध्रप्रदेश में DISE के क्रियान्वयन के लिए अभिविन्यास कार्यशाला	28 अप्रैल 1997 (1 दिन)	8
26.	09.3	हिमाचल में DISE के अंतर्गत बुनियादी शिक्षा परियोजनाओं के क्रियान्वयन पर कार्यशाला	5-7 मई 1997 (3 दिन)	9
27.	09.4	DISE का क्रियान्वयन (क्षेत्र–आधारित : उदयपुर)	12-14 मई 1997 (3 दिन)	18
28.	09.6	गुजरात और कर्नाटक में DISE का क्रियान्वयन	2-4 जून 1997 (3 दिन)	11
29.	09.7	हरियाणा में DISE के क्रियान्वयन पर अभिविन्यास कार्यक्रम	25-26 जून 1997 (2 दिन)	6
30.	09.8	केरल में DISE के क्रियान्वयन पर अभिविन्यास कार्यक्रम	2-4 जुलाई 1997 (3 दिन)	5
31.	09.9	बिहार में DISE के क्रियान्वयन पर अभिविन्यास कार्यक्रम	12-14 अगस्त 1997 (3 दिन)	10
32.	09.11	चेन्नई में शै प्र सू प्रणाली और DISE पर कार्यशाला	12-13 सितंबर 1997 (2 दिन)	24
33.	09.13	उ. प्र. में शै प्र सू प्रणाली का क्रियान्वयन	12-14 जनवरी 1998 (3 दिन)	6
34.	09.14	टी एस जी स्टाफ (एडसिल) के लिए DISE 98 का क्रियान्वयन	15-16 जनवरी 1998 (2 दिन)	5
		11	28	111
वित्तीय-प्रबंध और संसाधनों का उपयोग				
35.	03.1	शैक्षिक वित्त के प्रबंध पर अभिविन्यास कार्यक्रम	1-5 सितंबर 1997 (5 दिन)	10
36.	03.2	विश्वविद्यालय वित्त के प्रबन्ध पर अभिविन्यास कार्यक्रम	22 सितबंर 1997 (5 दिन)	38
37.	02.12	कर्नाटक के विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के लिए संसाधनों के उपयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	29 दिसंबर 1997-2 जनवरी 1998 (5 दिन)	11
		3	15	59

1997-98

क्रम सं	एक्क का कोड	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथि और अवधि	भागीदारों की संख्या
विद्यालय मानचित्रण और व्यष्टिस्तरीय योजना				
38.	07.1	विद्यालय मानचित्रण और व्यष्टिस्तरीय योजना पर कार्यशाला	29-30 जुलाई 1997 (2 दिन)	45
39.	07.2	विद्यालय मानचित्रण और व्यष्टिस्तरीय योजना पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	4-8 अगस्त 1997 (5 दिन)	28
		2	7	73
जिला शैक्षिक योजना				
40.	07.3	जिला शैक्षिक योजना पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	18-22 अगस्त 1997 (5 दिन)	26
41.	07.5	जि शि प्र संस्थानों के संकाय के लिए शैक्षिक योजना और प्रबंध पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	9-20 मार्च 1998 (12 दिन)	25
		2	17	51
अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम				
42.	08.1	श्रीलंका के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों के लिए एशियाई विकास बैंक द्वारा प्रायोजित शैक्षिक प्रबंध का सातवां प्रशिक्षण कार्यक्रम,	25 जुलाई -15 अगस्त 1997 (22 दिन)	25
43.	08.2	उपरोक्त, आठवां प्रशिक्षण कार्यक्रम, एशियाई विकास बैंक द्वारा प्रायोजित	26 सितंबर - 17 अक्तूबर 1997 (22 दिन)	25
44.	02.10	भारत में शिक्षा : अगली सहस्त्राब्दी पर विश्व सम्मेलन	12-14 नवंबर 1997 (3 दिन)	438
45.	09.12	बुनियादी शिक्षा की योजना की पद्धति के पक्षों और तकनीकी साधनों में सूचकों के प्रयोग पर अं शै यो संस्थान और नीपा का उपक्षेत्रीय गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	24 नवंबर 5 दिसंबर 1997 (12 दिन)	20
46.	08.3	श्रीलंका के व मा विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के लिए शैक्षिक प्रबंध का नवां प्रशिक्षण कार्यक्रम, ए वि बैंक द्वारा प्रायोजित	28 नवंबर 18 दिसंबर 1997 (22 दिन)	25
		5	81	533

1997-98

क्रम सं	एकक का कोड	कार्यक्रम का शीर्षक	तिथि और अवधि	भागीदारों की संख्या
अन्य कार्यक्रम				
47.	10.1	सलवान शिक्षा ट्रस्ट के विद्यालयों के पुस्तकाध्क्षों के लिए पुस्तकालय की योजना व प्रबंध पर अभिविन्यास कार्यक्रम	21-26 अप्रैल 1997 (6 दिन)	19
48.	02.5	शैक्षिक योजना और प्रबंध पर कार्यतः सम्मेलन	25 जुलाई 199' (1 दिन)	191
49.	01.3	सा प्रा शि के विशेष संदर्भ में शिक्षा पर जनांकीय दबाव,	17-21 नवंबर 1997 (5 दिन)	16
50.	01.4	शिक्षा और रोजगार के संबंधों तथा व्यवसायीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	16-18 दिसंबर 1997 (3 दिन)	13
		4	15	239
कुलयोग		**50**	**620**	**1885**

* इस सूची में पिछले वर्ष से चल रहे डिप्लोमा कार्यक्रम (एक राष्ट्रीय और एक अंतर्राष्ट्रीय) भी शामिल हैं।

कोड संख्या

01. शैक्षिक योजना एकक
02. शैक्षिक प्रशासन एकक
03. शैक्षिक वित्त एकक
04. शैक्षिक नीति एकक
05. विद्यालय और अनौपचारिक शिक्षा एकक
06. उच्च शिक्षा एकक
07. प्रादेशिक प्रणाली एकक
08. अंतर्राष्ट्रीय एकक
09. संक्रियात्मक अनुसंधान और प्रणाली प्रबंधन एकक
10. पुस्तकालय और प्रलेखन केंद्र

1997-98

अनुलग्नक - II

संकाय का अकादमिक योगदान : 1997-98

एम मुखोपाध्याय

शासकीय निकाय और अन्य समितियों की सदस्यता

अध्यक्ष, *शासकीय निकाय*, रवींद्र मुक्त विद्यालय (पश्चिम बंगाल)

कार्यकारिणी सदस्य और उपाध्यक्ष (एशिया), अंतर्राष्ट्रीय मुक्त व दूरस्थ शिक्षा परिषद, ओस्लो, नार्वे

सदस्य, दूरस्थ शिक्षा के अध्यक्षों का स्थायी सम्मेलन, ओस्लो, नार्वे

सदस्य, संचालन समिति, शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय बहुमाध्यमी कार्य दल, वशिंगटन डी सी

सदस्य, नवीं योजना प्रारंभिक शिक्षा कार्यदल, योजना आयोग, नई दिल्ली

सदस्य, कार्यकारिणी, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, कलकत्ता

सदस्य, कार्यकारी बोर्ड, तालीम अनुसंधान प्रतिष्ठान, बोपल, अहमदाबाद

सदस्य, सलहकार समिति, भारतीय स्वास्थ्य प्रबंध अनुसंधान संस्थान, जयपुर

सदस्य, फिक्की शिक्षा समिति, नई दिल्ली

सदस्य, सलहकार समिति, डी. ई. पी-डी. पी. ई. पी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सदस्य, कार्यनरिणी, अखिल भारतीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संगठन

अध्यक्ष, हावड़ ग्रामीण शिक्षक मंच, उडंग, हावड़ा

शोध परियोजना

स्टडीआफ इंपैक्ट आफ म्यूजिक एंड स्पोर्ट्स आन इनहांसिंग स्कूल रिटेंशन एंड परफार्मेंस, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित

संगोष्ठियों और सम्मेलनों में भागीदारी

दूसरा एशिया क्षेत्रीय साक्षरता फोरम, आई एल आई–यूनेस्कों, रा सा मिशन, नई दिल्ली, 1998

राष्ट्रमंडल सचिवालय (लंदन) स्त्रियों की शिक्षा और विकास पर मा सं वि मंत्रालय की कार्यशाला, नई दिल्ली 1998

टैगोर के शैक्षिक विचार और दर्शन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, रा अ शि परिषद और राज्य शै अ प्र परिषद, कलकत्ता द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित, 1998

भारत में शिक्षाः अगली सहस्राब्दी पर विश्व सम्मेलन, नई दिल्ली, 12-14 नवंबर 1997

ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों की गुणवत्ता के विकास पर सम्मेलन, व्हाइट रीवर, दक्षिण अफ्रीका, 1997

क्षेत्रीय साक्षरता फोरम, आई एल आई, मनीला, 1997

शैक्षिक प्राद्यौगिकी पर AIAET का राष्ट्रीय सम्मेलन, राष्ट्रीय शै अ प्र परिषद, नई दिल्ली, मई 1997

प्रकाशन

पुस्तकें: ओपेन एंड डिस्टेंस एजुकेशन, नई दिल्लीः जवाहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स, 1997

1997-98

पुस्तकों में अध्याय

टीचर एजुकेशन एंड डिस्टेंस एजुकेशनः द आर्टिफिशियल कंट्रोवर्सी, पी एम बुच और जे पी दवे (सं): *कंटेंपोरेरी पार्ट्स आन एजुकेशन*, एम वी बुच स्मृतिग्रंथ, बड़ौदाः एस ई आर डीः 1998

ओपेन एंड डिस्टेंस एजुकेशनः सोशल रेलेवेंस एंड क्वालिटी, एम मुखोपाध्याय और एम परिहार (सं): *ओपेन एंड डिस्टेंस एजुकेशन*, नई दिल्लीः जवाहर पब्लिशर्स, 1997

प्रोफेशनलिज्म इन एकेडेमिक्स, एस के पंडा (सं): *स्टाफ डबलपमेंट इन हायर एजुकेशन*, नई दिल्लीः अरावली, 1997

पत्रिकाएं

एजुकेशनल टेक्नोलाजी, शिक्षाशास्त्र की पत्रिका, दो अंक, नई दिल्लीः ए आई ए ई टी, 1997-98 लेख और भाषण

आलेख और व्याखान

वयस्क साक्षरता और शिक्षाः दूरस्थ शिक्षा का व्यवहार, दूसरे एशिया क्षेत्रीय साक्षरता फोरम, आई एल आई यूनेस्कों, रा सा मि, नई दिल्ली, 1998 में आमंत्रित विशेषज्ञ की प्रस्तुति

कार्यकारी सदस्य और उपाध्यक्ष (एशिया) अंतराष्ट्रीय मुक्त और दूखर्ती शिक्षा परिषद, ओसलो, नार्वे।

रवींद्रनाथ और शिक्षा 2000+, रा अ शि परिषद और राज्य शै अ प्र परिषद, कलकत्ता द्वारा टैगोर के शैक्षिक विचार और दर्शन पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में आमंत्रित विशेषज्ञ की प्रस्तुति, 1998

अगली सहस्राब्दी में शिक्षा, भारत में शिक्षाः अगली सहस्राब्दी पर विश्व सम्मेलन में विषयपत्र, 12-14 नवंबर 1997, नई दिल्ली

शिक्षा प्रबंध विकास : दूरस्थ शिक्षा की भूमिका, *ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों की गुणवत्ता के विकास संबंधी सम्मेलन* में आमंत्रित विशेषज्ञ की प्रस्तुति, व्हाइट रीवर, दक्षिण अफ्रीका, 1997

मुक्त बुनियादी शिक्षा : शिक्षा से साक्षरता का संबंध, *क्षेत्रीय साक्षरता फोरम*, आई एल आई, मनीला, 1997 को संबोधित करने के लिए आमंत्रित (अंतर्राष्ट्रीय प्रसार के लिए एरिक क्लीयरिंग हाउस, अमरीका द्वारा ले लिया गया)

इंडियन एजुकेशनल कांसल्टेंसी, *एजुकेशनली युअर्स* 6(1), अक्तूबर 1997 में अग्रलेख

ग्लोबाइजेशन आफ एजुकेशन : इंप्लीकेशन फार इंडिया, *यूनिवर्सिटी न्यूज*, 35(18), मई 1997

आर गोविंद

शोध प्रकाशन

डिसेंट्रलाइज्ड मैनेजमेंट आफ एजुकेशनः एक्सपेरिएंसेज फ्राम साउथ एशिया, अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक योजना संस्थान, यूनेस्को, पेरिस, 1997

रीचिंग द अनरीच्ड थ्रू पार्टिसिपेटरी प्लानिंगः स्टडी आफ स्कूल मैपिंग इन राजस्थान, अं शै यो संस्थान, यूनेस्को, पेरिस (प्रकाशनाधीन)

यूजिंग टेस्टिंग ऐज ए टूल टू इंप्रूव स्कूल क्वालिटीः रिफ्लेक्शंस आन इंडियन पालिसीज एंड प्रेक्टिसेज, *इंटरनेशनल जर्नल आफ एजुकेशनल डवलपमेंट* में प्रकाशन के लिए स्वीकृत लेख

शोध परियोजनाएं

नीचे से निर्माण का गतिशास्त्रः राजस्थान में प्राथमिक शिक्षा के लिए विकेंद्रीकृत प्रबंध व्यवस्था के निर्माण पर लोक जुंबिश के अनुभवों का अध्ययन (जारी)

जिला शिक्षा व प्रशिक्षण संस्थानों का राष्ट्रीय मूल्यांकन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की परियोजना, यूनिसेफ से वित्तीय सहायता प्राप्त (जारी)

एशिया के प्राथमिक विद्यालयों में निरीक्षण और सहायक सेवाओं का अध्ययनः बंगलादेश, भारत, नेपाल, फिलीपीन, दक्षिण कोरिया, श्रीलंका, अं शै यो संस्थान, यूनेस्को, पेरिस के एक बड़े शोध कार्यक्रम का भाग (पूरा) संगोष्ठियों/सम्मेलनों में भागीदारी

1997-98

संगोष्ठियों और सम्मेलनों में भागीदारी

चेन्नई में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन द्वारा आयोजित, सतत शिक्षा पर क्षेत्रीय कार्यशाला, 5-6 अप्रैल 1997 में भागीदारी, प्रस्तुत लेखः प्लानिंग कंटीन्यूइंग एजुकेशन प्रोजेक्ट्सः लेसंस फ्राम साउथ ईस्ट एशियन कंट्रीज

बुनियादी शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, कोरियाई शैक्षिक विकास संस्थान, सियोल, कोरिया में आयोजित मई 1997 प्रस्तुत लेखः ट्रेंड्स इन सुपरविजन एंड सपोर्ट सर्विसेज टू टीचर्सः ए कंपेरेटिव एनालिसिस आफ सेलेक्टेड एशियन कंट्रीज

बुनियादी शिक्षा के प्रबंध पर यूनेस्को–ए पी आई ई डी का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, बैंकाक, थाईलैंड, दिसंबर 1997 प्रस्तुत लेखः डिसेंट्रलाइज्ड प्लानिंग एंड मैनेजमेंट आफ लिटरेसी एंड बेसिक एजुकेशन इन एशिया

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता संस्थान, पेंसिलवानिया विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय साक्षरता मिशन द्वारा नई दिल्ली में फरवरी 1998 में आयोजित एशिया साक्षरता फोरम में भाग लिया। पैनल में प्रस्तुतिः एशिया में साक्षरता और अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों की योजना के मुद्दे।

भाग लियाः निर्धनता उन्मूलन और बुनियादी शिक्षा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, भारतीय शिक्षा संस्थान, पूना, नवंबर 1997

शासकीय निकायों और अन्य समितियों की सदस्यता

सदस्य, राष्ट्रीय प्रारंभिक शिक्षा पुनर्रचना समिति, मां. सं. वि. मंत्रालय द्वारा गणित

सदस्य, कार्यकारिणी, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण

सदस्य, संयोजक, नवीं पंचवर्षीय योजना के लिए प्रारंभिक शिक्षा कार्यदल

सदस्य, नवीं पंचवर्षीय योजना के लिए अनौपचारिक शिक्षा कार्यदल

सदस्य, राष्ट्रीय सतत शिक्षा कोर ग्रुप, रा सा मिशन द्वारा गठित

सदस्य, मुक्त विश्वविद्यालयों में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों पर यू जी सी, एन सी टी ई और डी ई सी की संयुक्त समिति

सदस्य, अध्यापक शिक्षा पर दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम संबंधी जि प्रा शि कार्यक्रम की राष्ट्रीय सलाहकार समिति

अन्य अकादमिक और वृत्तिक कार्यकलाप

दक्षिण अफ्रीका में अध्यापक शिक्षा में सुधार पर भारत सरकार के भ्रमणकारी विशेषज्ञ दल के सदस्य, 24-30 जून 1997

अं शै ओ संस्थान, यूनेस्को, पेरिस में विजिटिंग फेलो, 3-21 जुलाई 1997

विद्यालयों के प्रबंध और निरीक्षण पर जी एस एस प्राथमिक शिक्षा परियोजना के लिए सलाहकार के रूप में दौरा, सितंबर 1997

साक्षरता और सतत शिक्षा की परियोजनाओं के प्रबंध और निरीक्षण पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला, सोलो, इंडोनेशिया में यूनेस्को–प्रोप द्वारा आयोजित, 9-19 दिसंबर 1997 में संसाधन व्यक्ति

अनौपचारिक शिक्षा परियोजनाओं की योजना और प्रबंध पर जिला शिक्षा अधिकारियों की राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला, 16-20 फरवरी 1998 थिंपू, भूटान में संसाधान व्यक्ति

जांध्याला बी जी तिलक

शोध प्रकाशन

इनवेस्टमेंट गैप्स इन प्राइमरी एजुकेशन (ए रिज्वाइंडर) इकानमिक एंड पोलिटिकल वीकली, 32(18) (3 मई 1997) : 972-75 (डी पी ई पी कालिंग, 1(15) (जून 1997: 41-47 में पुनमुर्द्रित)

प्रोमोशन आफ द रिकाग्निशन आफ हायर एजुकेशन क्वालिफिकेशंस इन एशिया एंड द पैसिफिक (एक क्षेत्रीय कार्यशाला की रिपोर्ट), बैंकाकः सीमियो राइहेड, अगस्त 1997

एनालिसिस आफ फाइनेंसेज फार एजुकेशन (जिला शैक्षिक योजना पर माड्यूल 10), नई दिल्लीः नीपा, 1997

एनालिसिस आफ कास्ट्स आफ एजुकेशन (जि शैक्षिक योजना पर माड्यूल 11), नई दिल्लीः नीपा, 1997

1997-98

इकानमिक रिफार्म एंड इकानमिक्स टीचिंग एंड ट्रेनिंग इन ट्रांजिशन इकानमीज इन द ग्रेटर मेकांग सब–रीजन (एक क्षेत्रीय कार्यशाला की रिपोर्ट), बैंकांकः सीमियो राइहेड, 1997 (संपादित)

पब्लिक एक्सपेंडिचर आन एजुकेशन इन मध्यप्रदेश, नई दिल्लीः एशियाई विकास बैंक, दिसंबर 1997

फिनांसिंग द सेंटर फार इलेक्ट्रानिक्स डिजाइन एंड टेक्नोलाजी, इंडियन इंस्टीट्यूट आफ साइंस, बंगलौरः ए रिव्यू, नई दिल्लीः स्विस एजेंसी फार डवलपमेंट एंड कोआपरेशन, स्वीट्जरलैंड दूतावास, दिसंबर 1997 (अनुलिखित)

फाइव डेकेड्स आफ अंडर–इनवेस्टमेंट इन एजुकेशन इन इंडिया, *इकानमिक एंड पोलिटिकल वीकली,* 32(36), (6-12 सितंबर 1997): 2239-41

ह्यूमन कैपिटल फार डवलपमेंट एंड द डवलपमेंट आफ ह्यूमन कैपिटल इन इंडिया, *अन्वेषक,* 27(1-2) जनवरी दिसंबर 1997) : 75-124

चेंजिंग पालिसीज एंड स्ट्रेटेजीज इन *हायर एजुकेशन इन साउथ एशिया,* हायर एजुकेशन इन ट्रांजिशन इकानमीज इन एशिया, बैंकाकः यूनेस्को–प्रोप, 1998 पृ 160-70

विल्डिंग ह्यूमन कैपिटल इन ईस्ट एशियाः व्हाट अदर्स कैनलर्न, पूर्वी एशिया में सामाजिक विकास की नीति पर विश्व बैंक की कार्यशाला, सान फ्रांसिस्को, 28-30 जुलाई 1997

कमेंट आन 'इकानमिक्स आफ इंडियन एजुकेशनः द इमर्जिंग पालिसीज' बाई तपस मजुमदार, *जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन,* 12(1) (जनवरी 1998) : 61-65

आन मैनेजिंग विद डवलपमेंट एसिस्टेंस इन प्राइमरी एजुकेशन इन इंडिया, नोराग न्यूज 22 (जनवरी 1998) : 22-24

आन मैनेजिंग विद डवलपमेंट एसिस्टेंस इन प्राइमरी एजुकेशन इन इंडिया, नोरागन्यूज, 22 (जनवरी 1998) : 22-24 स्कूलिंग एंड इक्विटी, इकानमिक्स आफ ह्यूमन बिहैवियरः एस्सेज इन आनर आफ ए एम नल्ला गोडन, संपादकः टी लक्ष्मनसा भी और टी एम श्रीनिवासन, नई दिल्लीः एलाइड, 1997 पृ 155-81 में संकलित अन्य)

संपादन

जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन

संगोष्ठियों, सम्मेलनों और कार्यशालाओं में भागीदारी

विशेष और असहाय समूहों के लिए मुक्त बुनियादी शिक्षा प आ शि संस्थान–यूनेस्को की राष्ट्रीय संगोष्ठी, पूनाः भारती शिक्षा संस्थान, 3-4 मार्च 1998 (एक तकनीकी सत्र की अध्यक्षता भी की)

शिक्षा पर संवाद, नई दिल्लीः सेंटर फार सिविल सोसायटी 24 जनवरी 1998 (विचार विमर्श में भाग लिया)

राष्ट्रीय शैक्षिक पहल पर कार्यशाला, भोपालः राजीव गांधी प्राथमिक शिक्षा मिशन, 14-15 जनवरी 1998

राष्ट्रीय आर्थिक सिद्धांत व नीति सम्मेलन, नई दिल्लीः भारतीय सांख्यिकी संस्थान, 8-10 जनवरी 1998

शिक्षा बतौर मूलभूत अधिकार पर सम्मेलन, दिल्ली विश्वविद्यालय, 18 दिसंबर 1997 (पैनलिस्ट)

शिक्षा व रोजगार के संबंधों और व्यवसायीकरण पर राष्ट्री संगोष्ठी, नई दिल्लीः नीपा, 16-18 दिसंबर 1997 (एक तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की)

पूर्वी एशिया में 20वीं सदी के विकास के अनुभव पर राष्ट्री संगोष्ठी, दिल्ली विश्वविद्यालय, 20-21 नवंबर 1997 (एक तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की)

विकास की समकालीन बहस में अनुदानों के औचित्य प राष्ट्रीय संगोष्ठी, नई दिल्लीः जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्याल 18-19 नवंबर 1997

भारत में शिक्षाः अगली सहस्राब्दी पर विश्व सम्मेलन, न दिल्लीः अखिल भारतीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संगठन, 12-1 नवंबर 1997

एशिया की संक्रमणशील अर्थव्यवस्थाओं में उच्च शिक्षा क रणनीतियों और नीतियों पर क्षेत्रीय कार्यशाला, 7-1 अक्तूबर 1997

1997-98

उच्च शिक्षाः नई चुनौतियां पर कार्यशाला, हैदराबाद विश्वविद्यालय, 3-6 अक्तूबर 1997 (प्रमुख भाषण)

ारत में प्रारंभिक शैक्षिक वित्त पर केंद्र और राज्य स्तर के ध्ययनों पर कार्यशाला, नई दिल्लीः यूनिसेफ, 19 गस्त 1997

ूर्वी एशिया के सामाजिक विकास पर विश्व बैंक की कार्यशाला ानफ्रासिंस्को, 28-30 जुलाई 1997 मानव विकास की रणनीतियों ौर वित्त व्यवस्था पर शोध परियोजना के तहत शिक्षा बंधी अध्ययनों के रिपोर्टों पर कार्यशाला, नई दिल्ली : युक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, 14-15 जुलाई 1997 (एक सत्र ी अध्यक्षता की)

च्च शिक्षाः 21वीं सदी के लिए राष्ट्रीय रणनीतियों और त्रीय सहयोग पर क्षेत्रीय कार्यशाला टोकियोः संयुक्त राष्ट्र वेश्वविद्यालय (यूनेस्को प्रोप), 8-10 जुलाई (एक गोल मेज म्मेलन के रैपोटियर)

ामाजिक–आर्थिक आंकड़ों की स्थिति पर संगोष्ठी, नई दिल्लीः ारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद, 30 जून– 1 जुलाई 997 (एक लेख पर बहस का आरंभ किया)

शिया–प्रशांत में उच्च शैक्षिक योग्यताओं की मान्यता में वृद्धि र क्षेत्रीय कार्यशाला, मनीला, 23-26 जून 1997

शिया–प्रशांत में 21वीं सदी के लिए उच्च शिक्षा और मानव साधन विकास पर विश्व कांग्रेस, मनीलाः उच्च शिक्षा आयोग, 3-25 जून 1997

ार मेकांग उपक्षेत्र की संक्रमणशील अर्थव्यवस्थाओं में ार्थिक सुधार तथा अर्थशास्त्रीय अध्यापन–प्रशिक्षण पर क्षेत्रीय गोष्ठी, कुनमिंग (चीन): युनान विश्वविद्यालय, 16-19 अप्रैल 997 (रैपोटियर–जनरल)

तिक संगठनों की सदस्यता

दस्य, कार्यकारिणी, आंध्रप्रदेश जि प्र शि कार्यक्रम सोसायटी 997

दस्य, सामान्य परिषद, आंध्रप्रदेश जि प्रा शि कार्यक्रम, सोसायटी, 1997

अध्यक्ष, अनुसंधान मूल्यांकन समिति, डी पी ई पी टेकनीकल सपोर्ट ग्रुप, एडसिल, नई दिल्लीः भारत सरकार, 1997

सदस्य, विद्यालय शिक्षा अनुदान समिति, दिल्ली सरकार, 1997

सदस्य, अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा विशेषज्ञ समिति (संविधान के 83 वें संशोधन के व्यवहार के लिए वित्तीय पक्षों की पड़ताल करने वाली समिति), भारत सरकार, मा सं वि मंत्रालय, 1997

सदस्य, शैक्षिक आंकड़ों के संग्रह, विश्लेषण और प्रसार की व्यवस्था में सुधार पर गठित विशेषज्ञ समिति, भारत सरकार 1997

संयोजक, शैक्षिक आंकड़ा बैंक नेटवर्क की स्थापना के लिए कार्यवाई योजना के विकास के लिए गठित शिक्षा कार्यबल, भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद, 1997

सदस्य, शिक्षा समिति, फिक्की, नई दिल्ली, 1998

सदस्य, शिक्षा व्यय की वर्तमान स्थिति के आकलन के लिए गठित विशेषज्ञ समिति, भारत सरकारः योजना आयोग, 1998

सदस्य, उच्च शिक्षा पर उच्चस्तरीय दल (यूनेस्कों के विश्व सम्मेलन पर भारत उच्च शिक्षा पर रिपोर्ट तैयार करने के लिए गठित), मा सं वि मंत्रालय, भारत सरकार, 1998

सदस्य, भारत में सांख्यिकीय व्यवस्था के आधुनिकीकरण के लिए सामाजिक–आर्थिक सांख्यिकी और श्रम सांख्यिकी पर कार्यदल 6, नई दिल्लीः योजना और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय, सांख्यिकी विभाग, भारत सरकार, 1998

अकादमिक पत्रिकाओं के लिए सलाहकार सेवाएं

सदस्य, संपादन सलाहकार बोर्ड, *हायर एजुकेशन पालिसी* (पर्गमन)

संपादन सलाहकार, *स्टडीज इन एजुकेशन* (नाईजीरिया)

सदस्य, समीक्षक संपादन सलाहकार बोर्ड, *फिलीपाइन जर्नल आफ हायर एजुकेशन* (मनीला)

1997-98

सदस्य, संपादक मंडल, *मैनपावर जर्नल*

परामर्श

परामर्शदाता, स्विस विकास निगम, नई दिल्ली

परामर्शदाता, एशियाई विकास बैंक

परामर्शदाता, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम

वाई पी अग्रवाल

प्रकाशन

यूजर्स मैनुअल, डाइस, नीपा

एक्सेस एंड रिटेंशनः द इंपैक्ट आफ डी पी ई पी, नेशनल ओवरव्यू, डी पी ई पी ब्यूरो, मानव संसाधन विकास मंत्रालय

अन्य गतिविधियां

सदस्य, कार्यकारिणी, राज्य शै अ प्र परिषद, दिल्ली, इस वर्ष कार्यकारिणी की बैठकों में भाग लिया

सदस्य, परास्नातक स्तर पर कंप्यूटर पाठ्यक्रमों के समावेश पर वि अ आयोग की विशेषज्ञ समिति

दल–प्रमुख, प्राथमिक शिक्षा संवर्धन परियोजना समीक्षा दल, मार्च 23-28, 1998 यूनिसेफ द्वारा प्रायोजित

डी पी ई पी बोर्ड की बैठक, 5 जनवरी 1998 में भाग लिया

सभी के लिए शिक्षा के परिमाणात्मक सूचकों पर समीक्षा बैठक, बड़ौदा में यूनिसेफ द्वारा आयोजित, 6 मार्च 1998 में भाग लिया

एन वी वर्गीज

शोधपत्र और आलेख

इशूज इन फिनासिंग आफ हायर एजुकेशन, *एजुकेशन डायलाग*, 3(2) 1998 : 10-16

प्राइमरी एजुकेशन एंड स्कूल इम्प्रूवमेंट, पी एम बुच और जे पी देव (सं): *कंटेम्पोरेरी थाट्स आन एजुकेशन*, एस ई आर डी, बड़ौदा, 1998, पृ 235-46

स्कूल मैपिंग एंड माइक्रो प्लानिंग, *डी पी ई पी कालिंग*, 2 (1) (दिसंबर 1997) :14-18

पब्लिक वर्क्स प्राइवेट इन एजुकेशन इन इंडिया, *शिक्षा और भू–राजनीतिक परिवर्तन पर आक्सफर्ड सम्मेलन*, 11-15 दिसंबर 1997 न्यू कालेज, आक्सफर्ड में प्रस्तुत लेख

ए रिपोर्ट आन एनट्रिप एक्टीविटीज, *एनट्रिप न्यूजलेटर*, 2(1) (1997) : 2-7

इनवेस्टमेंट इन एजुकेशन एंड इंप्लिकेशंस फार पावर्टी रिडक्शन इन इंडिया, *भारत में निर्धनता उन्मूलन के लिए यूरोपीय सहायता पर किए गए अध्ययन का भाग*, नीपा, नई दिल्ली, 1997

प्राविजंस एंड परफोर्मेंसः ए स्टडी आफ प्राइमरी स्कूल्स इन *मल्लपुरम डिस्ट्रिक्ट आफ केरला*, के एस संजीव के साथ, नीपा, नई दिल्ली, 1997

एजुकेशन प्रोसेस एंड प्रोग्रेसः ए स्टडी आफ प्राइमरी स्कूल्स इन कासरगोड़ डिस्ट्रिक्ट आफ केरला, के एस संजीव के साथ, नीपा, नई दिल्ली, 1997

हाउ मच डू चिल्ड्रेन लर्न इन प्राइमरी स्कूल्सः ए स्टडी आफ नायनाड डिस्ट्रिक्ट इन केरला, के एस संजीव के साथ, नीपा, नई दिल्ली, 1998

प्रशिक्षण माड्यूल (प्रकाशित)

माड्यूल आन डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग इन इंडिया, नीपा के लिए न्यू कांसेप्ट द्वारा प्रकाशित, नई दिल्ली 1997

एजुकेशनल प्लानिंग ऐट द डिस्ट्रिक्ट लेविलः मीनिंग एंड स्कोप

डायग्नोसिस आफ एजुकेशनल डवलपमेंट

प्लान फार्मूलेशन

प्लानिंग फार इंप्लीमेंटेशन

स्कूल मैपिंग

1997-98

माइक्रो–प्लानिंग इन एजुकेशन, एस एम आई ए जैदी के साथ

संगोष्ठियों में भागीदारी

एनट्रिप की दूसरी वार्षिक बैठक और बुनियादी शिक्षा के लिए अध्यापक निरीक्षण व सहायक सेवाओं पर संगोष्ठी, 6-8 मई 1997, के ई डी आई, सियोल, कोरिया

शिक्षा और प्रौद्योगिकी: राष्ट्रमंडल के सामने प्रस्तुत भू –राजनीतिक प्रश्न पर सम्मेलन–पूर्व वार्ता, 10-11 सितंबर 1997 हैरिस मानचेस्टर कालेज, आक्सफर्ड

शिक्षा और भू–राजनीतिक परिवर्तन पर आक्सफर्ड सम्मेलन, 11-15 सितंबर 1997, न्यू कालेज, आक्सफर्ड

श्रम, रोजगार और कौशल विकास: नीतिगत कार्यसूची कार्यशाला, 30-31 अक्तूबर पोर्ट मोर्स्ट्री, पपुआ न्यू गिनी

सलाहकारी सेवाएं

सदस्य, राष्ट्रीय सलाहकार समिति, आधारभूत मूल्यांकन अध्ययन, एन सी ई आर टी, नई दिल्ली

सदस्य, विशेषज्ञ दल, अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा पर 83 वें संविधान संशोधन के क्रियान्वयन की वित्तीय आवश्यकताएं, मा सं वि मंत्रालय, नई दिल्ली

सदस्य, शासी निकाय, केरल प्राथमिक शिक्षा विकास समिति, केरल सरकार

सदस्य, कार्यकारिणी, सीमैट, इलाहाबाद

मा सं वि मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा गठित अनेक समितियों और दलों की सदस्यता

एशियाई शैक्षिक योजना प्रशिक्षण व अनुसंधान संस्थाओं का नेटवर्क (एनट्रिप) की ओर से एनट्रिप न्यूजलेटर के संपादक, नीपा, नई दिल्ली

सुधा के राव

पुस्तकें और विनिबंध

मैनेजमेंट आफ आटोनमी इन आटोनमस कालेजेज, नीपा (प्रेस में)

केस स्टडीज आफ आटोनमस एंड नान–आटोनमस कालेजेज, नीपा (प्रेस में)

एकेडेमिक स्टाफ कालेजेज इन इंडिया: ए रिव्यू, 1997 (परियोजना की रिपोर्ट)

परफार्मेंस एप्रेजल एंड टीचर एकाउंटेबिलिटी: ए स्टडी रिपोर्ट (पी आर प्रसाद के साथ)

अकादमिक मार्गदर्शन

ए स्टडी आफ रेलेवेंस आफ माडर्न मैनेजमेंट टेक्नीक्स इन एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (पी-एच डी प्रदान की जा चुकी है)

संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं में भागीदारी

वुमेन ऐज इंट्रिप्रिन्योर, महिला उद्यमियों और शिक्षा पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत लेख, श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालय, 26-27 जून 1997

क्रिएटिंग सपोर्टिव इनवायरनमेंट फार वुमेंस डवलपमेंट इन इंडिया, भारत में स्वतंत्रता के 50 वर्षों में स्त्रियों की भूमिका और विकास पर राज्य स्तर की संगोष्ठी में प्रस्तुत लेख, पूना विश्वविद्यालय, 13-14 अक्तूबर 1997

राष्ट्रीय शिक्षा कार्यसूची पर सम्मेलन, इंडिक अनुसंधान के लिए धर्म हिंदुजा अंतर्राष्ट्रीय केंद्र के सहयोग से देशभक्त ट्रस्ट द्वारा आयोजित, नई दिल्ली, 18-19 अक्तूबर 1997

शिक्षा में उत्प्रेरक नेतृत्व, अखिल भारतीय डी ए वी सम्मेलन, 19-20 अक्तूबर 1997

उच्च शिक्षा में महिलाएं और उसके प्रबंध पर राष्ट्रमंडल सचिवालय और वि अ आयोग की कार्यशाला, नई दिल्ली, 3-8 नवंबर 1997

भारत में महिला कक्षों की प्रभारी महाविद्यालय अध्यापिकाओं पर राज्य स्तर की कार्यशाला, कुरूक्षेत्र, 20-23 नवंबर 1997

1997-98

एकीकृत विश्व में उच्च शिक्षा पर संगोष्ठी, राजीव गांधी प्रतिष्ठान द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजित, दिल्ली, 5 जनवरी 1998

परामर्श और सलाह की महत्वपूर्ण सेवाएं

सदस्य, उपसमिति, महिला अध्ययन पर स्थायी समिति, वि अ आयोग, नई दिल्ली, 1997

सदस्य, सलाहकार समिति, गोवा विश्वविद्यालय, 1997

सदस्य, स्वायत्त महाविद्यालय मध्यावधि समीक्षा समिति, वि अ आयोग, नई दिल्ली, 1997

सदस्य, योजना बोर्ड, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 1997

सदस्य आठवीं योजना की कारगुजारी और नवीं योजना की आवश्यकताओं संबंधी समीक्षा समिति, वि अ आयोग, नई दिल्ली, 1997

सदस्य, विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में मार्गदर्शन और संसाधन केंद्रों की स्थापना संबंधी योजना समिति, वि अ आयोग, नई दिल्ली, 1997

उच्च शिक्षा समन्वय की स्थायी समिति, मा सं वि मंत्रालय, नई दिल्ली, 1997, (नीपा का प्रतिनिधित्व)

सदस्य, सहायता–अनुदान समिति, मा सं वि मंत्रालय, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली, 1997

के सुजाता

अनुसंधान अध्ययन

स्टडी आफ स्कूल इफेक्टिवनेस इन ट्राइबल एरियाज

कम्युनिटी पर्टिसिपेशन इन एजुकेशन इन ट्राइबल एरियाज इन आंध्रप्रदेश

लेख

इनसेंटिव्स फार एजुकेशन आफ डिसएडवांटेज्ड ग्रुप्स इन इंडिया

हाउ इफेक्टिव आर द लोकल टीचर्स इन ट्राइबल एरियाज

क्वालिटी इंप्रूवमेंट प्रोग्राम्स फार एजुकेशन आफ ट्राइबल्सः ए कंपेरेटिव स्टडी आफ डिफरेंट डिस्ट्रिक्ट्स इन आंध्रप्रदेश

प्रमिला मेनन

परामर्श/सलाह

पौढ़ और सतत् शिक्षा के लिए संशोधित मार्गदर्शक सिद्धांतों को निरूपित करने और अंतिम रूप देने में परामर्शकारी सेवा

संबंधित विश्वविद्यालयों के लिए पौढ़ और सतत् शिक्षा विभागों के निदेशकों द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावों की समीक्षा के लिए मुबंई में आयोजित बैठक, 18-21 मई 1997, में भागीदारी

राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों और सम्मेलनों में भागीदारी

प्रौढ़ साक्षरता में प्रवर्तन और वृत्तीकरण के लिए दूसरा क्षेत्रीय साक्षरता फोरम में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता संस्थान और यूनेस्को द्वारा नई दिल्ली में आयोजित, 9-13 फरवरी 1998, प्रस्तुत आलेखः प्रोमोटिंग वुमेंस लिटरेसी इन यूनिवर्सिटीजः फ्यूचर चैलेंज

शासकीय और अन्य समितियों की सदस्यता

सदस्य, वयस्क और सतत शिक्षा के विस्तार पर वि अ आयोग की स्थायी समिति

अरुण सी मेहता

परामर्श

उड़ीसा में डी पी ई पी के मूल्यांकन के लिए भारत सरकार द्वारा भेजे गए मिशन के सदस्य, भुवनेश्वर, 31 मार्च से 15 अप्रैल 1997

बिहार में डी पी ई पी के मूल्यांकन के लिए भारत सरकार द्वारा भेजे गए मिशन के सदस्य, पटना, 5-20 मई 1997

1997-98

प्रकाशित माड्यूल

इनरोलमेंट एंड टीचर प्रोजेक्शंस (माड्यूल 7), एन वी वर्गीज (सं): *माड्यूल्स आन डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग इन एजुकेशन*, नीपा, नई दिल्ली, 1997

प्रशिक्षण माड्यूल

एजुकेशन मैनेजमेंट इनफार्मेशन सिस्टम इन इंडिया

इंडिकेटर्स आफ एजुकेशनल डवलपमेंट: कांसेप्ट एंड डिफनीशंस

ए सेट आन प्रेक्टिकल एक्सरसाइज आन यूज आफ क्वांटिटेटिव टेकनीक्स इन एजुकेशनल प्लानिंग

प्रकाशित लेख

एजुकेशनल डवलपमेंट इन इंडिया विद फोकस आन एलिमेंटरी एजुकेशन, नीपा सामयिक लेख, 24, सितंबर 1997

भारत में सभी के लिए शिक्षा: राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के प्रकाश में कुछ नई अंतर्दृष्टियां, परिप्रेक्ष्य, 2(4) नीपा, नई दिल्ली

एजुकेशन फार आल इन इंडिया, जर्नल आफ एजुकेशन एंड सोशल चेंज, जुलाई–सितंबर और अक्तूबर–दिसंबर 1995, भा शि संस्थान, पूना, 9(2-3) जुलाई 1997 में प्रकाशित

राष्ट्रीय शै अ प्र परिषद के सर्वेक्षण के संदर्भ में शैक्षिक आंकड़ों की विश्वसनीयता, परिप्रेक्ष्य 3, अप्रैल 1996, नीपा, नई दिल्ली, 1997 में प्रकाशित

नलिनी जुनेजा

शोधपत्र और लेख

फ्री एंड कंपल्सरी एजुकेशन फार आल चिल्ड्रेन-बट व्हाई ऐट अवर कास्ट ? *यूनिवर्सिटी न्यूज*, 35(22), 2 जून 1997

राइट आफ चाइल्ड टू एजुकेशन एंड इशूज इन इंप्लीमेंटेशन आफ कंपल्सरी एजुकेशन, *न्यू फ्रंटियर्स इन एजुकेशन*, 27 जनवरी–मार्च 1997

विद्यालय प्रधानाचार्यों के प्रशासनिक कार्यकलाप और व्यावसायिक तनाव, परिप्रेक्ष्य, 4(1), अप्रैल 1997

संगोष्ठियों/सम्मेलनों में भागीदारी

राज्य शै अ प्र परिषद द्वारा आयोजित कार्यशाला, 10 जून 1997

शैक्षिक योजना और प्रशासन पर आयोजित सम्मेलन में अनिवार्य शिक्षा पैनल में भागीदारी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 25 जुलाई 1997

महाविद्यालय प्राध्यापकों का अभिविन्यास कार्यक्रम, गुड़गांव, उच्च शिक्षा निदेशालय, हरियाणा द्वारा आयोजित, में दो व्याख्यान, मार्च 1998

एस एम आई ए जैदी

प्रकाशित पुस्तक समीक्षाएं

ई बी फिस्के, यूजिंग बोथ हैंड्स: वुमेन एंड एजुकेशन इन कंबोडिया, *जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन*, 11(2), अप्रैल 1997

सी शाह और जी बर्क, स्टूडेंट फ्लो इन आस्ट्रेलियन हायर एजुकेशन, *जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन*, 11(3), जुलाई 1997

सलामतुल्लाह, एजुकेशन आफ मुस्लिम इन सेक्यूलर इंडिया, *जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन*, 11(4), अक्तूबर 1997

जाय मिलर देल ऐस्सो और तानिया मरेक, क्लास एक्शन: इंप्रूविंग स्कूल परफार्मेंस इन द डवलपिंग वर्ल्ड थ्रू बेटर हेल्थ एंड न्यूट्रीशन, *जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन*, 12(1), जनवरी 1998

प्रकाशित माड्यूल

इंडिकेटर्स आफ एजुकेशनल डवलपमेंट (माड्यूल 6), एन वी वर्गीज (सं): *माड्यूल्स आन डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग इन एजुकेशन*, *नीपा*, नई दिल्ली, 1997

माइक्रो प्लानिंग इन एजुकेशन (माड्यूल 9, सहलेखक), एन वी वर्गीज (सं): उपरोक्त

1997-98

प्रस्तुत आलेख

मैनेजमेंट आफ प्राइमरी एजुकेशन अंडर डी पी ई पी, प्राथमिक चरण में अध्यापकों के शक्ति–संवर्धन और विद्यालय प्रभाविता पर क्षेत्रीय संगोष्ठी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर द्वारा आयोजित, 14-16 अप्रैल 1997

परामर्श

डी पी ई पी की जिला योजना दलों के लिए बिहार शिक्षा परियोजना द्वारा पटना में आयोजित, जिला योजना की तैयारी पर कार्यशाला, 7-10 अप्रैल 1997, में संसाधन व्यक्ति

जिला योजना दलों को मूल्यांकन के लिए योजनाओं की तैयारी में सहायता देने के लिए बिहार भेजे गए योजना सहायता दल की सदस्यता। इस दल ने 19-21 अप्रैल 1997 के दौरान जिलों के दलों की सहायता की।

डी पी ई पी 2 की जिला योजनाओं और राज्य की घटक योजना के मूल्यांकन के लिए कर्नाटक भेजे गए भारत सरकार के मूल्यांकन मिशन का नेतृत्व। मिशन ने 12-27 मई 1997 के बीच अपना काम किया, 5 दिनों तक बंगलौर का दौरा किया और भारत सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंपी।

गुजरात भेजे गए भारत सरकार के आंतरिक निरीक्षण मिशन का नेतृत्व। मिशन ने 23 जून से 2 जुलाई 1997 तक काम किया, राज्य की राजधानी गांधीनगर और जिला बनासकंठा का दौरा किया और भारत सरकार को रिपोर्ट सौंपी।

शिक्षा की व्यष्टिस्तरीय योजना और ग्राम शिक्षा समिति पर बिहार शिक्षा परियोजना की कार्यशाला, पटना, 8-10 सितंबर 1997 में संसाधन व्यक्ति

डी पी ई पी के तहत 14 विस्तारित जिला योजनाओं और राज्य की घटक योजना के मूल्यांकन के लिए भारत सरकार द्वारा आंध्रप्रदेश भेजे गए मूल्यांकन–पूर्व मिशन का नेतृत्व। मिशन 6-18 नवंबर 1997 के बीच कार्यरत रहा, हैदराबाद और चार जिलों का दौरा किया और भारत सरकार को रिपोर्ट सौंपी।

उड़ीसा के लिए भारत सरकार के आंतरिक निरीक्षण मिशन का नेतृत्व। मिशन 16-24 जनवरी 1998 तक कार्यरत रहा, भुवनेश्वर और 2 जिलों का दौरा किया और भारत सरकार को रिपोर्ट सौंपी।

व्याख्यान

राज्य शै अ प्र परिषद, दिल्ली में दिल्ली के माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों और उप–प्रधानाध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्याख्यान 'संस्थागत योजना में प्रधानाध्यापकों की भूमिका' 12 जून 1997

नीलम सूद

शोध पत्र

पैटर्न आफ फैमिली इंटरएक्शन एंड प्राब्लम बिहैवियर इन चिल्ड्रैन, *जर्नल आफ रिसर्च एंड एप्लिकेशन इन क्लिनिकल साइकोलाजी*, 1(1), जनवरी 1998

पुस्तक समीक्षा

राजेंद्र के मिश्र आदि (सं), रोरशाच टेस्टः थ्योरी एंड प्रैक्टिस, *इंडियन एंथ्रोपोलोजिस्ट*, 26(2), मार्च 1998

लेख

प्राब्लम बिहैवियर इन प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रेनः इंप्लीकेशंस फार सोशल हेल्थ, जी मिश्र (सं): *साइको–सोशल पर्सपेक्टिव आन स्ट्रेस एंड हेल्थ*, नई दिल्लीः सेज (प्रेस में)

संगोष्ठियों/सम्मेलनों/कार्यशालाओं में भागीदारी

एशिया–प्रशांत विश्वविद्यालय, मनीला के एक प्रतिनिधिमंडल के अध्ययन–भ्रमण के अवसर पर अध्यापक शिक्षा का प्रवर्तनकारी कार्यक्रम, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा आयोजित संवाद, (12 दिसंबर 1997) में विचार विमर्श में भागीदारी,

शैशवकालीन शिक्षा और प्रारंभिक शिक्षा के मूलभूत अधिकार विधेयक पर बैठक, राष्ट्रीय शै अ प्र परिषद द्वारा आयोजित, 25 दिसंबर 1997

1997-98

संस्कृति और मनोविज्ञान पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित, 28-30 दिसंबर 1997

शैशवकालीन शिक्षा के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के अभिविन्यास में संसाधन व्यक्ति, असम प्राथमिक शिक्षा अचनी परिषद, डी पी ई पी , असम द्वारा आयोजित, 2-5 फरवरी 1998

संसाधन व्यक्ति, महाविद्यालय प्राध्यापकों का अभिविन्यास, उच्च शिक्षा निदेशालय हरियाणा द्वारा आयोजित, 7-30 मार्च 1998

दूसरी अकादमिक गतिविधियां

भारत में विद्यालय शिक्षा के प्रबंध पर नीपा के राष्ट्रीय सम्मेलन में आए लेखों के सारसंक्षेपों का संपादन

जम्मू विश्वविद्यालय में शोध पद्धतियों पर परास्नातक स्तर के प्रश्नपत्र की तैयारी और परीक्षक

एम एस–सी की लघुप्रबंध 'ए स्टेटस सर्वे आफ एजुकेशन इन सेमी–अर्बन लोकेशन' जी बी पंत कृषि व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय का मूल्यांकन

शोध पत्र 'अर्ली चाइल्डहुड स्टिमुलेशनः ए पर्सपेक्टिव' अभीष्टतम संवृद्धि और विकास के लिए शैशवकाल में प्ररेणा पर संगोष्ठी के लिए भेजा गया

सलाहाकारी सेवाएं

अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभाविता के अध्ययन के लिए शोध प्रस्तावों के विकास में जि शि प्र संस्थान, नई दिल्ली के संकाय की सहायता

सदस्य, कार्यकारिणी, विश्वविद्यालय–पूर्व शिक्षा संगठन (भारतीय अध्याय)

जयश्री राय जलाली

पुस्तकें

रि–एडजस्टिंग वोकेशनल एजुकेशन इन पोलैंडः समलेसस फार इंडिया, प्योमकोव त्रिबुनाइस्कीः *पर्सपैक्टिव आन फारेन लैंग्वेज टीचिंग, लोद्ज*, पोलैंड, फरवरी 1998

फीमेल लिटरेसी एंड गर्ल्स एजुकेशन ऐट द एलिमेंटरी एजुकेशन, एम मुखोपाध्याय आदि (सं): *एजुकेशन इन इंडियाः द नेक्स्ट मिलेनियम*, शिक्षा, ग्रामीण अध्ययन और विकास संस्थान, उडांगः हावड़ा, मार्च 1998

शोधपत्र/लेख

फीमेल लिटरेसी एंड गर्ल्स एजुकेशनः ए कंपेरेटिव स्टडी आफ द नार्थ–ईस्ट, भारत में शिक्षा पर विश्व सम्मेलन, नई दिल्ली, नवंबर 1997 में प्रस्तुत

एजुकेशन आन टाप आफ द वर्ल्डः *लद्दाख, इंडियन न्यूज एजेंसी*

प्राथमिक शिक्षा का विकेंद्रीकरणः लाई स्वायत्त जिला परिषद, मिजोरम का केस अध्ययन, *परिप्रेक्ष्य*, नीपा, प्रकाशनाधीन

पूर्वोत्तर भारत में शैक्षिक विकास का एक तुलनात्मक इतिहास, *परिप्रेक्ष्य* नीपा, नई दिल्ली

यजाली जोसेफीन

राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भागीदारी

नवीं पंचवर्षीय योजना का क्रियान्वयन, दिल्ली में आयोजित, 24 सितंबर 1997

शोधपत्र

इंपैक्ट आफ मिड–डे मील्स प्रोग्राम आन इनरोलमेंट आफ प्राइमरी गर्ल्स इन वेस्ट गारो हिल्स आफ मेघालय, 12 नवंबर 1997, अगली सहस्राब्दी में भारत में शिक्षा पर विश्व सम्मेलन में प्रस्तुत, नई दिल्ली

साक्षात्कार

अनुसूचित जातियों/जनजातियों की लड़कियों की शिक्षा पर प्रोत्साहन योजनाओं के प्रभाव पर दिल्ली दूरदर्शन पर साक्षात्कार, 20 नवंबर 1997

पाठ्यसामग्री

रिसोर्स प्लानिंग इन एजुकेशन फार कर्नाटक स्कूल प्रिंसिपल्स

1997-98

दिल्ली के नगरपालिका प्राथमिक विद्यालयों की संस्थागत योजना के लिए विकसित अभ्यास–कार्य

प्रकाशित लेख

रिफार्मिंग स्कूल एजुकेशन : इशूज इन पालिसी प्लानिंग एंड इंप्लिमेंटेशन, नीपा में शोधपत्र इफेक्टिव नेस आफ स्कूलिंगः ए स्टडी आफ एडेड स्कूल्स आफ दिल्ली

विजयकुमार पंडा

प्रकाशित लेख

रिफार्मिंग स्कूल एजुकेशन : इशूज इन पालिसी प्लानिग एंड इंप्लीमेंटेशन, नीपा में लेख इफेक्टिवनेस आफ एडेड स्कूल्स आफ दिल्ली

पुस्तक समीक्षा

ज्यूडिथ ए डोरो, टीचिंग विद हार्टः मेकिंग हेल्दी कनेक्शंस विद स्टूडेंट्स, *जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन,* 11(2), अप्रैल 1997

रश्मि दीवान

लेख

स्कूल बॅस्ड सुपरविजनः प्रेक्टिसिंग हेड्स फेसिंग द चैलेंज, न्यू फ्रंटियर्स इन एजुकेशन, 27(3), जुलाई–सितंबर 1997

भागीदारी

प्रौढ़ शिक्षा में प्रवर्तन और व्यावसायिकता : विविधता पर ध्यान केंद्र पर दूसरे एशियाई क्षेत्रीय फोरम में भागीदारी, 9-13 फरवरी 1998

वी पी एस राजू

प्रशिक्षण सामग्री

इंट्रोडक्शन टू कप्यूटर्स

एस के मलिक

लेख

एजुकेशन अंडर पंचायत्सः क्वांटिटेटिव एंड क्वालिटेटिव डाइमेंशंस, *मैन एंड डवलपमेंट,* 18(3), सितंबर 1996

एजुकेशन अंडर लोकल बाडीजः ए हिस्टारिकल पर्सपेक्टिव, *जर्नल आफ इंडियन एजुकेशन,* 22(3), नंवबर 1996

पुस्तक समीक्षाएं

बी वी चलपति, रूरल एजुकेशन एडमिनिस्ट्रेशन, *जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन,* 11(1), जनवरी 1997

होशियर सिंह (सं), हायर सिविल सर्विसेज इन इंडिया, *जर्नल आफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन* 11(2), अप्रैल 1997

कमलाकांत बिस्वाल

प्रशिक्षण माड्यूल

प्लानिंग फार इंप्लीमेंटेशन (माड्यूल 4, एन वी वर्गीज के साथ), एन बी वर्गीज (सं): *माड्यूल्स आन डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग इन एजुकेशन,* नीपा के लिए न्यू कांसेप्ट द्वारा प्रकाशित, 1997

भागीदारी

शैक्षिक योजना और प्रशासन पर वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम, अ शै यो संस्थान, यूनेस्को, पेरिस द्वारा आयोजित, 1 जनवरी से 30 अप्रैल 1997

शिक्षा और रोजगार पर भारतीय उद्योग महासंघ का सम्मेलन, नई दिल्ली, जनवरी 1998

शोध अध्ययन

डिटरमिनेट्स आफ अर्निंग्स इन द सेगमेंटेड अर्बन लेबर मर्किटः द सिग्निफिकेंस आफ द लेबिल आफ एजुकेशन ऐज ऐन एक्सप्लेनेटरी वेरिएबल (ए स्टडी आफ सेलेक्टेड मैन्यूफैक्चरिंग यूनिट्स इन दिल्ली) पर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से पी-एच डी प्राप्त, दिसंबर 1997

एन के मोहंती

प्रशिक्षण सामग्री

मीजर्स आफ सेंट्रल टेंडेंसी इन एजुकेशनल प्लानिंग

डेमोग्राफिक इंडिकेटर्सः कांसेप्ट्स एंड डिफिनीशंस

1997-98

परिशिष्ट - I

नीपा परिषद

(31 मार्च 1998 के अनुसार)

अध्यक्ष

डॉ. मुरली मनोहर जोशी
मानव संसाधन विकास मंत्री
शास्त्री भवन, नई दिल्ली

उपाध्यक्ष

श्री चंपक चटर्जी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

पदेन सदस्य

प्रो. (सुश्री) ए.एस. अर्मिति देसाई	अध्यक्ष, वि.अ. आयोग, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली
श्री पी आर दासगुप्ता (शिक्षा सचिव)	मा.सं.वि. मंत्रालय, शिक्षा विभाग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली - 110001
श्री सुधीर नाथ	संयुक्त सचिव तथा वित्त सलाहकार, मा.सं.वि. मंत्रालय, शिक्षा विभाग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली -110001
अतिरिक्त सचिव	जन शिकायत, पेंशन और कार्मिक मंत्रालय, सरदार पटेल भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली -110001
आर. एन. काव	प्रधान सलाहकार (शिक्षा), योजना अयोग, योजना भवन, नई दिल्ली 110001
डॉ. ए.के. शर्म	निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली 110016

1997-98

राज्य शिक्षा सचिव

श्री ए. के. पैतांडी	सचिव तथा डी.पी.आई. (शिक्षा), अरुणाचल प्रदेश सरकार, पो. ऑ. इटानगर - 791111
श्री वी.एच. पचुवा	सचिव, शिक्षा विभाग, गोवा सरकार, पणजी (गोवा) - 403001
सचिव	सामान्य शिक्षा विभाग, सचिवालय (केरल सरकार), तिरुवनंतपुरम - 695001
श्री डी.एन. पाढ़ी	आयुक्त तथा सचिव, विद्यालय शिक्षा विभाग, उड़ीसा सरकार, भुवनेश्वर - 751001
प्रधान सचिव	(उच्च शिक्षा) पंजाब सरकार, चंडीगढ़ - 160001

राज्य शिक्षा निदेशक

श्री आर. कोदानदारामा रेड्डी	आयुक्त (महाविद्यालय शिक्षा), आंध्रप्रदेश सरकार, नामपल्ली, हैदराबाद -500022
श्री अम्बुभाई पटेल	निदेशक (प्राथमिक शिक्षा), पुराना सचिवालय भवन, ब्लाक नं. 12, गांधी नगर - 382010
प्रो. आर. के. छिब्बर	निदेशक (विद्यालय शिक्षा), जम्मू और कश्मीर सरकार (जम्मू क्षेत्र), कची छावनी, जम्मू तवी, जम्मू, द्वारा रिजीडेंट कमीशनर, जम्मू और कश्मीर सरकार, 5 पृथ्वीराज मार्ग, नई दिल्ली
श्री एच. आर. बोरा	निदेशक (विद्यालय शिक्षा), नागालैंड सरकार, कोहिमा - 797001
श्रीमती कुलदीप कौर	जन शिक्षा निदेशक (विद्यालय), चंडीगढ़ प्रशासन, संघ क्षेत्र सचिवालय, सेक्टर 9, चंडीगढ़ - 160017

विख्यात शिक्षाविद्

प्रो. एम.घी. माथुर	भूतपूर्व निदेशक (नीपा), एफ-48, सुंदर मार्ग, 'सी' स्कीम, जयपुर - 302001
श्री पी.के. उमाशंकर	भूतपूर्व निदेशक, आइ.आई.पी.ए., 857, 13वां मुख्य मार्ग, अन्ना नगर, मद्रास - 600042
प्रो. ए.एच. कालरो	अध्यक्ष, आर.जे.सी.एम.ई.आई. भारतीय प्रबंध संस्थान, वस्त्रपुर, अहमदाबाद - 380015

1997-98

प्रो. के.एन. पणिकर	डीन, सामाजिक विज्ञान संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 110067
प्रो. मोहित भट्टाचार्य	कुलपति, बर्दवान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल

नीपा संकाय

प्रो. एम. मुखोपाध्याय	वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष, शैक्षिक प्रशासन एकक
डा. (सुश्री) के सुजाता	वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय एकक
सह–अध्येता	प्रादेशिक प्रणाली एकक

कार्यकारी समिति के सदस्य

श्री चंपक चटर्जी	संयुक्त निदेशक (योजना), मा.सं.वि. मंत्रालय, शिक्षा विभाग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली - 110001
श्री आर. तांडेकर	जन शिक्षा आयुक्त तथा निदेशक, (विद्यालय शिक्षा), गौतम नगर, मध्य प्रदेश सरकार, भोपाल
संयुक्त निदेशक	नीपा, नई दिल्ली - 110016

सचिव

श्री पी.आर.आर. नायर	कुलसचिव, नीपा, नई दिल्ली - 110016

1997-98

परिशिष्ट - II

कार्यकारी समिति

(31 मार्च 1998 के अनुसार)

1. श्री चंपक चटर्जी — अध्यक्ष
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली -110016

2. संयुक्त सचिव (योजना)
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शिक्षा विभाग, शास्त्री भवन
नई दिल्ली - 110001

3. श्री सुधीर नाथ
संयुक्त सविच व वित्त सलाहकार
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शिक्षा विभाग, शास्त्री भवन
नई दिल्ली - 110001

4. श्री आर. एन काव
प्रधान सलाहकार (उच्च शिक्षा)
योजना आयोग, योजना भवन
नई दिल्ली -110001

5. प्रधान सचिव (शिक्षा)
पंजाब सरकार
चंडीगढ़ -160001

6. प्रो. एम.वी. माथुर
भूतपूर्व निदेशक (नीपा)
एफ-48, सुंदर मार्ग, 'सी' स्कीम
जयपुर - 302001

7. प्रो. एएच. कालरो
अध्यक्ष, आर.जे.सी.एम.ई.आई.
भारतीय प्रबंध संस्थान
वस्त्रपुर
अहमदाबाद - 380015

8. श्री अर. तांडेकर
जन शिक्षा आयुक्त तथा निदेशक,
(विद्यालय शिक्षा) गौतम नगर
मध्यप्रदेश सरकार, भोपाल

9. संयुक्त निदेशक
नीपा, नई दिल्ली - 110016

10. प्रो. एन. मुखोपाध्याय
वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
शैक्षिक प्रशासन एकक
नीपा, नई दिल्ली - 110016

11. डा. (सुश्री) के. सुजाता
वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
अंतर्राष्ट्रीय एकक
नीपा, नई दिल्ली - 110016

12. श्री पी. आर. आर. नायर — सचिव
कुलसचिव
नीपा
नई दिल्ली - 110016

1997-98

परिशिष्ट - III

वित्त समिति

(31 मार्च 1998 के अनुसार)

1. श्री चंपक चटर्जी — अध्यक्ष
   निदेशक
   राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
   नई दिल्ली - 110016

2. संयुक्त सचिव (योजना)
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   शिक्षा विभाग, शास्त्री भवन
   नई दिल्ली - 110001

3. श्री सुधीर नाथ
   संयुक्त सविच व वित्त सलाहकार
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   शिक्षा विभाग, शास्त्री भवन
   नई दिल्ली - 110001

4. श्री एस. रघुनाथन
   सचिव (शिक्षा)
   राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
   पुराना सचिवालय, नई दिल्ली

5. संयुक्त निदेशक
   नीपा, नई दिल्ली - 110016

6. श्री पी. आर. आर. नायर — सचिव
   नीपा,
   नई दिल्ली - 110016

1997-98

परिशिष्ट - IV

योजना और कार्यक्रम समिति

(31 मार्च 1998 के अनुसार)

1. श्री चंपक चटर्जी — अध्यक्ष
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली - 110016

2. संयुक्त निदेशक
नीपा
नई दिल्ली - 110016

3. संयुक्त सचिव (योजना)
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शिक्षा विभाग, शास्त्री भवन
नई दिल्ली - 110001

4. डॉ. आर.पी. गांगुर्दे
अतिरिक्त सचिव
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली - 110001

5. श्री आर एन. काव
प्रधान सलाहकार (शिक्षा)
योजना आयोग
योजना भवन
नई दिल्ली - 110001

6. कुलपति
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर - 474011
मध्यप्रदेश

7. आयुक्त तथा सचिव
शिक्षा विभाग
राजधानी परिसर
असम सरकार
दिसपुर - 781006
गुवाहाटी

8. प्रधान सचिव
शिक्षा विभाग
कर्नाटक सरकार
बंगलौर - 560001

9. शिक्षा निदेशक
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली
दिल्ली - 110054

10. निदेशक
जनशिक्षा
नया सचिवालय, बिहार सरकार
पटना

11. प्रो. अतुल शर्मा
भारतीय सांख्यिकीय संस्थान
7, शहीद जीत सिंह मार्ग
कटवारिया सराय
नई दिल्ली - 110016

12. प्रो. स्नेह जोशी
अध्यक्ष, शैक्षिक प्रशासन विभाग
शिक्षा तथा मनोविज्ञान संकाय
एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा
बड़ोदरा - 390002

1997-98

13. प्रो. पी.आर. पंचमुखी
निदेशक
बहुआयामी विकास अनुसंधान केंद्र
डी. बी. रोद्दा रोड, जुबिली सर्किल
धारवाड़ - 580007
कर्नाटक

14. प्रो. आर. राधाकृष्णन
आई.सी.एस.एस.आर.
35, फिरोजशाह मार्ग
नई दिल्ली - 110001

15. प्रो. मोहम्मद मियां
डीन (शिक्षा)
जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय
जामिया नगर,
नई दिल्ली - 110025

16. डॉ. आर. के. बहल
प्रोफेसर (भूगोल)
सेवानिवृत्त निदेशक
राज्य शिक्षा संस्थान
सेक्टर, 32/C
चंडीगढ़

17. डॉ. एम मुखोपाध्याय
वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
शैक्षिक प्रशासन एकक
नीपा
नई दिल्ली - 110016

1997-98

18. डॉ. आर. गोविंद
वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
विद्यालय और अनौपचारिक शिक्षा एकक
नीपा
नई दिल्ली - 110016

19. डॉ. जे.बी.जी. तिलक
वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
शैक्षिक वित्त एकक
नीपा
नई दिल्ली - 110016

20. अध्यक्ष
शैक्षिक नीति एकक
नीपा
नई दिल्ली - 110016

21. डॉ. वाई. पी. अग्रवाल
वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
संक्रियात्मक अनुसंधान और प्रणाली प्रबंधन एकक
नीपा
नई दिल्ली - 110016

22. डा. एन. वी. वर्गीज
वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
प्रादेशिक प्रणाली एकक
नीपा
नई दिल्ली - 110016

1997-98

23. डॉ. के सुधा राव
वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष,
उच्च शिक्षा एकक,
नीपा
नई दिल्ली - 110016

24. (सुश्री) के. सुजाता
वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष,
अंतर्राष्ट्रोय एकक
नीपा
नई दिल्ली - 110016

25. श्री पी. आर. आर. नायर — सचिव
नीपा
नई दिल्ली - 110016

1997-98

परिशिष्ट - V

संकाय और प्रशासनिक स्टाफ

(31 मार्च 1998 के अनुसार)

चंपक चटर्जी, निदेशक

शैक्षिक योजना एकक

एन.वी.वर्गीज, वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
एन. मोहंती, अनुसंधान और प्रशिक्षण सहयोगी

शैक्षिक प्रशासन एकक

एम. मुखोपाध्याय, वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
वाई. जोसेफिन, सह–अध्येता
मंजू नरूला, अनुसंधान और प्रशिक्षण सहयोगी

शैक्षिक वित्त एकक

जे.बी.जी. तिलक, वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
एस. के. मलिक, अनुसंधान और प्रशिक्षण सहयोगी

विद्यालय और अनौपचारिक शिक्षा एकक

आर. गोविंद, वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
नलिनी जुनेजा, अध्येता
नीलम सूद, अध्येता
रश्मि दीवान, सह अध्येता
वी.पी.एस. राजू, अनुसंधान और प्रशिक्षण सहयोगी

1997-98

उच्च शिक्षा एकक

सुधा राव, वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
कौसर विजारत, अनुसंधान और प्रशिक्षण सहयोगी

प्रादेशिक प्रणाली एकक

एन.वी. वर्गीज, वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
प्रमिला मेनन, अध्येता
अरुण. सी.मेहता, अध्येता
एस.एम.आई. ए. जैदी, अध्येता
जे. जलाली, सह–अध्येता
कमलकान्त बिस्वाल, अनुसंधान और प्रशिक्षण सहयोगी

अंतर्राष्ट्रीय एकक

के सुजाता, वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
बी.के. पांडा, सह–अध्येता,

संक्रियात्मक अनुसंधान और प्रणाली प्रबंधन एकक

वाई पी अग्रवाल, वरिष्ठ अध्येता और अध्यक्ष
के श्रीनिवास, सिस्टम एनलिस्ट
एकता नाहर, कंप्यूटर प्रोग्रामर
सुनीता चुग, अनुसंधान और प्रशिक्षण सहयोगी

कुलसचिव

पी. आर. आर. नायर

पुस्तकालय और प्रलेखन केंद्र

निर्मल मल्होत्रा, पुस्तकाध्यक्षा
एन.डी. कांडपाल, प्रलेखन अधिकारी
दीपक मकोल, व्यावसायिक सहायक
बी. डी. जोशी, व्यावसायिक सहायक

1997-98

प्रकाशक एकक

एम. एम. अजवानी, उप प्रकाशन अधिकारी

हिंदी कक्ष

सुभाष शर्मा, हिंदी संपादक

मानचित्रण कक्ष

पी.एन. त्यागी, मानचित्रकार (संगणक अनुप्रयोग)

प्रशासन और वित्त

जी. एस. भारद्वाज, प्रशासनिक अधिकारी
डी. पी. सिंह, वित्त अधिकारी
एम. एल. शर्मा, अनुभाग अधिकारी
एस. आर. चौधरी, अनुभाग अधिकारी
पी. मणि, अनुभाग अधिकारी
आर.सी. शर्मा, अनुभाग अधिकारी

परिशिष्ट - VI

वार्षिक लेखा और लेखा परीक्षा रिपोर्ट

1997-98

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना
1.4.97 से 31.3.98 तक

प्राप्तियां

अर्थ शेष

हस्तगत रोकड़	0.00	
अग्रदाय	5,000.00	
बैंक में रोकड़	6,554,258.61	6,559,258.61

1997-98

और प्रशासन संस्थान
की प्राप्तियां और भुगतान लेखा

	भुगतान	
योजनेतर (व्यय)		
अधिकारियों का वेतन		
प्रशासन	198,153.00	
वित्त एवं लेखा	90,306.00	
अनुसंधान एवं प्रशिक्षण	967,857.00	
पुस्तकालय एवं प्रलेखन	105,180.00	
प्रकाशन	76,200.00	1,437,696.00
संस्थागत वेतन		
प्रशासन	1,395,552.00	
वित्त एवं लेखा	244,530.00	
अनुसंधान एवं प्रशिक्षण	985,858.00	
पुस्तकालय एवं प्रलेखन	233,897.00	
प्रकाशन	100,568.00	
छात्रावास	132,791.00	3,093,196.00
भत्ते एवं मानदेय		
प्रशासनिक	2,063,274.00	
वित्त तथा लेखा	376,529.00	
अनुसंधान एवं प्रशिक्षण	2,714,034.00	
पुस्तकालय एवं प्रलेखन	495,037.00	
प्रकाशन	241,204.00	
छात्रावास	161,913.00	6,051,991.00
समयोपरि भत्ता	247,094.00	247,094.00
चिकित्सा व्यय पूर्ति	333563.00	333,563.00
चिकित्सा अग्रिम	66,000.00	66000.00
अवकाश यात्रा रियायत	138,163.00	138,163.00
तदर्थ बोनस	242,620.00	242,620.00

1997-98

	प्राप्तियां	
भारत सरकार से प्राप्त सहायता		
योजनेतर	11,698,000.00	
योजना	30,833,217.00	42,531,217.00
दान		
पुस्तकालय की पुस्तके	26,604.00	26,604.00
छात्रावास किराया	1,481,689.00	1,481,689.00
ब्याज		
निवेश	1,206,654.68	
पी. एफ निवेश पर ब्याज	1,521,948.00	
ब्याज वाली पेशगियों पर ब्याज	116,412.00	2,845,014.68
प्रकाशन बिक्री		
रायल्टी	37,531.60	37,531.60

1997-98

	भुगतान	
भविष्य निधि अंशदान पर ब्याज	1,165,576.00	1,165,576.00
अवकाश वेतन तथा पेंशन	24,481.00	24,481.00
पेंशन तथा उपदान	1,496,210.00	1,496,210.00
अकादमिक गतिविधियां		
विज्ञापन प्रभार	65,319.00	
मनोरंजन प्रभार	121,862.00	
संसाधन व्यक्तियों का मानदेय	41,610.00	
विविध प्रभार	154,742.00	
मुद्रण/जिल्द प्रभार	3,976.00	
डाक एवं तार प्रभार	58,272.00	
पैट्रोल, तेल तथा ल्यूब्रिकेंट प्रभार	84,272.00	
स्टेशनरी/स्टोर का सामान	151,848.00	
स्टाईपेन्ड/भागीदारों को पुस्तक परियोजना अनुदान	154,155.00	
टेलिफोन/ट्रंककाल प्रभार	334,949.50	1 ,170,962.00
यात्ता भत्ता		
अ) संकाय सदस्य तथा स्टाफ	182,420.00	
ब) भागीदार	318,908.00	
स) मेहमान वक्ता	3,397.00	504,725.00
अनुसंधान अध्ययन		
मुद्रण प्रभार	4,495.00	4,495.00
अन्य प्रभार (आवत्ती)		
लेखा शुल्क	85,750.00	
कूलियेज/कार्टेज/कस्टम इत्यादि	5040.00	
ठंडा तथा गर्म मौसम प्रभार	25,437.00	
बागवानी प्रभार	11,696.00	
बीमा	41,486.00	
लिबेरीज	74,302.00	

1997-98

	प्राप्तियां	
पूंजीगत प्राप्तियाँ		
अनुपयोगी वस्तुओं की बिक्री	123,920.00	
लाइसेंस शुल्क	80,257.00	
जल प्रभार	6,728.00	
विविध प्राप्तिया	483,131.00	694,036.00
अवकाश वेतन तथा पेंशन	35,099.00	35,099.00
अधिक पेंशन भुगतान को वूसली	26,700.00	26,700.00
विविध प्राप्तिया		
रोकी गई राशि (डा. श्री प्रकाश)	1,000.00	1,000.00

1997-98

	भुगतान	
कानूनी व्यय	35,750.00	
गाड़ियों का रख रखाव	90,822.00	
उपकरणों का रख रखाव	145,878.00	
फर्नीचर तथा फिक्सचर का रख–रखाव	48,335.00	
भवन का रख–रखाव (सिविल)	15,661.00	
भवन का रख–रखाव (इलेक्व.)	7,210.00	
विविध भुगतान	147,258.00	
समाचार पत्र तथा पत्र–पत्रिकाएं	12,271.00	
किराया, रेट तथा कर	4,992.00	
पानी तथा बिजली	963,213.00	1,715,101.00
वसूली योग्य पेशगियां		
त्यौहार पेशगी	56,700.00	
कार पेशगी	0.00	
स्कूटर पेशगी	11,520.00	
साइकिल पेशगी	1,800.00	
पंखा पेशगी	0.00	
भवन–निर्माण पेशगी	0.00	
कंप्यूटर पेशगी	0.00	70,020.00
कुल व्यय (योजनेत्तर)	**17,761,893.50**	

1997-98

	प्राप्तियां	
वसूली योग्य पेशगियां		
त्यौहार पेशगी	36,520.00	
कार पेशगी	76,790.00	
स्कूटर पेशगी	25,360.00	
साइकिल पेशगी	1,350.00	
पंखा पेशगी	0.00	
भवन निर्माण पेशगी	101,060.00	
कंप्यूटर पेशगी	7,320.00	248,400.00
कुल प्राप्तियां (योजनेतर)	**5,396,074.28**	

1997-98

	भुगतान	
योजना (व्यय)		
विविध पेशगियां		108,856.00
अधिकारियों का वेतन		
प्रशासन	44,750.00	
अनुसंधान तथा प्रशिक्षण	135,038.00	179,788.00
संस्थागत वेतन		
प्रशासनिक	105,250.00	
वित्त तथा लेखा	72,751.00	
अनुसंधान तथा प्रशिक्षण	117,404.00	
प्रकाशन	22.520.00	317,925.00
भते तथा मानेदय		
प्रशासनिक	204,702.00	
वित्त तथा लेखा	80,796.00	
अनुसंधान तथा प्रशिक्षण	30,446.00	
प्रकाशन	38,344.00	684,288.00
समयोपरिभत्ता	28,075.00	28,075.00
चिकित्सा व्यय प्रतिपूर्ति	15,696.00	15,696.00
अवकाश यात्रा रियायत	505.00	505.00
तदर्थ बोनस	28,423.00	28,423.00
अकादमिक गतिविधियां		
विज्ञापन प्रभार	7,055.00	
मनोरंजन प्रभार	86,605.00	
संसाधन व्यक्तियों को मानेदय	33,970.00	
विविध आकस्मिकताएं	790,132.00	
मुद्रण/जिल्द प्रभार	190,714.00	
डाक व तार प्रभार	63,060.00	
पैट्रोल, ऑयल तथा ल्यूब्रीकेण्ट प्रभोर	136,615.00	
स्टेशनरी/स्टोर का सामान	1,32,540.00	
टेलिफोन/टेलिग्राम प्रभार	393,416.00	
एन आई ए ई को सहायता	50,000.00	3,073,107.00
यात्रा भत्ता		
अ) संकाय सदस्य तथा स्टॉफ	157,164.00	
ब) भागीदार	241,675.00	
स) मेहमान वक्ता	71,954.00	470,793.00

1997-98

	प्राप्तियां	
आई.डी.ई.पी.ए. कार्यक्रम		
अनुदान	2,084,073.00	2,084,073.00
डी. आई. एस. ई/ई. एम. आई. एस की संस्थापना और संचालन (डा. अग्रवाल)		
अनुदान	1,582,788.00	1,582,788.00
डाइट के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (जलाली/मेनन)		
अनुदान	1,44,842.00	1,44,842.00

1997-98

		भुगतान	
	पत्र-पत्रिकाएं	1,162,752.70	1,162,752.70
	प्रकाशन (प्रकाशित)	232,481.00	232,481.00
	अन्य प्रभार		
अ)	आवर्त्ती		
	कूलियेज/कार्टेज/कस्टम इत्यादि	15,125.00	
	ठंडा तथा गर्म मौसम प्रभार	710.00	
	बागवानी प्रभार	16,554.00	
	गाड़ियों का रख रखाव	75,905.00	
	उपकरणों का रख रखाव	189,398.00	
	फर्नीचर तथा फिक्सचर का रख–रखाव	42,187.00	
	भवन का रख–रखाव (सिविल)	2,075,088.00	
	भवन का रख–रखाव (इलेक्व.)	3,087,850.00	
	समाचार पत्र तथा पत्र–पत्रिकाएं	16,065.00	
	किराया, रेट तथा कर	288,480.00	
	पानी तथा बिजली प्रभार	77,786.00	5,885,148.00
ब)	गैर आवर्ती		
	फर्नीचर तथा फीक्चर	797,701.00	
	अन्य कार्यलय उपकरण	220,271.00	
	स्टाफ कार	1,017,808.00	2,035,780.00
	पुस्तकालय की पुस्तकें	267,424.00	267,424.00
	दान तथा उपहार स्वरूप	26,604.00	26,604.00

1997-98

	प्राप्तियां	
श्रीलंका के वरिष्ठ विद्यालयों के प्राचार्यों के लिये शैक्षिक प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम-एशियाई विकास बैंक द्वारा प्रायोजित		
अनुदान	6,453,447.00	6,453,447.00
सार्व कार्यक्रम		
अनुदान	45,652.00	45,652.00
उच्च शिक्षा के लिये नेटवर्क बैठक (यू.जी.सी)		
(यू.जी.सी द्वारा प्रायोजित)		
अनुदान	200,000.00	200,000.00

1997-98

		भुगतान	
स)	अग्रिम भुगतान		
	भवन का निर्माण (सिविल)	1,950,298.00	
	भवन का निर्माण (इलेक्ट्र.)	2,640,256.00	
	डी. डी. ए. फ्लैट की खरीद	375,00.00	
	उपकरणों इत्यादि की खरीद	0.00	4,965,554.00
	विविध भुगतान		
	फैक्स के लिए एम. टी. एन. एल को	15,000.00	
	डी/एस्टेट सुरक्षा	2,500.00	17,500.00
	कुल व्यय (योजना)	**19,500,699.70**	
	संस्थान के अनुसंधान अध्ययन		
1)	शैक्षिक प्रशासन पर द्वितीय अखिल भारतीय सर्वेशण		
	वेतन/मानेदय	199,591.00	
	टी.ए/डी.ए	18,311.00	
	स्टेशनरी/मुद्रण तथा जिल्द प्रभार	17,048.00	
	आकस्मिकताएं	22,650.59	257,600.59
2)	मूल्यांकन अध्ययन भारत में आवश्यक शैक्षिक धाराएं (एन. जुनेजा)		
	वेतन	15,290.00	15,290.00
3)	दिल्ली में विद्यालयी शिक्षा (डा. गोविंदा तथा डा. रश्मि दीवान)		
	वेतन	14,479.00	
	विविध आकस्मिकताएं	2,689.00	17,168.00
4)	संस्थागत लागत का प्रतिरूप तथा संरचना (डा. एन. के. मोहंती)		
	वेतन	5,583.00	
	टी. ए. तथा फोटोकापी	420.00	6,003.00
5)	प्राथमिक विद्यालय धारणक्षमता तथा प्रदर्शन में संगीत और खेलों का प्रभाव (डा. एम. मुखोपाध्याय)		
	वेतन	20,000.00	20,000.00
6)	ए. एस.सी कार्य का मूल्यांकन (डा. सुधा राव)		
	वेतन	6,714.00	6,714.00
7)	संस्थागत स्तर पर निदान अध्ययन मैसूर परियोजना (सुश्री जोसोफेन)		
	वेतन	5,935.00	5,935.00

1997-98

	प्राप्तियां	
यू.जी.सी कार्यक्रम-कालेज प्राचार्य		
(डा. के. सुधा राव)		
अनुदान	400,000.00	400,000.00
ई.9 बैठक		
(मा. सं. वि. मंत्रालय) नई दिल्ली		
अनुदान	36,410.00	36,410.00
आई. टी. डी. ए. पाडेरू शिक्षक प्रशिक्षण		
(डा. के. सुजाता)		
अनुदान	40,716.00	40,716.00

1997-98

		भुगतान	
8)	भारत में विद्यालयों का प्रबंधन (डा. नीलम सूद)		
	वेतन	17,536.00	17,536.00
9)	पूर्व स्नातक संगठनों का व्यवसायीकरण (डा. सुधा राव)		
	वेतन	2,500.00	2,500.00
	सहायता योजना व्यय	85,835.00	85,835.00
2)	**अनुसंधान अध्ययनों का योग**	**434,581.59**	
	महायोग (योजना) व्यय	**19,935,281.29**	
	प्रायोजित कार्यक्रम/अध्ययन		
	आई. डी. ई. पी. ए कार्यक्रम		
	वेतन	55,076.00	
	कार्यक्रम व्यय	84,375.00	
	भागीदरों को सीधा भुगतान	235,84.00	
	बोर्डिंग/लॉजिंग प्रभार	237,300.00	
	आकस्मिकताएं	888,256.00	
	स्टेशनरी	81,269.00	1,582,117.00
	बेसलाइन अध्ययन (केरल)		
	वेतन	58,213.00	
	आकस्मिकताएं	9,098.00	67,311.00
	बेसलाइन अध्ययन (कर्नाटक)		
	वेतन	28,586.00	28,586.00
	डी. आई. एस. ई/ई.एम.आई.एस का संस्थापन और संचालन (डा. अग्रवाल)		
	वेतन	381,049.00	
	टी.ए/डी.ए	176,634.00	
	स्टेशनरी	92,912.00	
	आकस्मिकताएं	622,355.00	1,272,950.00
	डाइट के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (जलाली मेनन)		
	टी.ए/डी.ए	102,204.00	
	आकस्मिकताएं	25,914.00	128,118.00
	योजना और प्रबंधन में क्षमता निर्माण, डी. पी. ई. पी (डा. एन.वी. वर्गीज)		
	वेतन	404,587,00	
	टी.ए/डी.ए	803,093.00	
	आकस्मिकताएं	281,643.00	1,489,323.00

1997-98

	प्राप्तियां	
शिक्षार्थी अधिगम प्राप्ति अध्ययन (दिल्ली) (यूनीसेफ) डा. अग्रवाल		
अनुदान	525,000.00	525,000.00
प्राथमिक शिक्षा मूल्यांकन तथा पुनरीक्षण व्यवस्था (यूनीसेफ)		
अनुदान	525,000.00	525,000.00
आई. आई. ई. पी, पेरिस (करार. नं. 97.30.91) (डा. अग्रवाल)		
अनुदान	583,015.00	583,015.00
डाईट की तकनीकी और अधिरचनात्मक क्षमता का निर्धारण (डा. आर. गोविंद)		
अनुदान	649,000.00	649,000,00
कुल प्राप्तियां प्रायोजित कार्यक्रम	**13,269,943.00**	

1997-98

भुगतान		
श्रीलंका के वरिष्ठ विद्यालयों के प्राचार्यों के लिए शैक्षिक प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम एशियाई विकास बैंक द्वारा प्रायोजित		
वेतन	137,736.00	
टी.ए/डी.ए	13,545.00	
लाजिंस/बोर्डिंग प्रभार	713,922.00	
कार्यक्रम व्यय	2,830,382.00	
आकस्मिकताएं कार्यक्रम व्यय	227,442.00	3,923,027.00
मूल्यांकन और प्रत्यायन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी		
डा. सुधा राव		
व्यय	100,695.00	100,695.00
सधन क्षेत्र कार्यक्रम का प्रभाविकता अध्ययन		
(डा. पी. मेनन)		
वेतन	66,332.00	
टी.ए/डी.ए	48,592.00	
मुद्रण तथा स्टेशनरी	23,971.00	1,38,895.00
राष्ट्रीय सुरक्षा कवच योजना (मा.सं.वि. मंत्रालय)		
डा. वाई.पी. अग्रवाल		
स्टेशनरी/आकस्मिकताएं/पूंजी	167,500.00	167.500.00
यू. जी. सी कार्यक्रम कालेज प्राचार्य		
(डा. सुधा राव)		
भागीदारों को टी.ए/डी.ए	614,361.00	
आकस्मिकताएं	271.968.00	886,329.00
ई-9 बैठक (मा. सं. वि. मंत्रालय, नई दिल्ली)		
व्यय	42,771.00	42,771.00
आई. टी. डी. ए, पडेरू, शिक्षक प्रशिक्षण		
(डा. के. सुजाता)		
बोर्डिंग तथा लॉजिंग प्रभार	40,716.00	40,716.00

1997-98

प्राप्तियां	
प्रेषित धन	
आय कर वेतन	26,102.00
भविष्य निधि खाता तथा पेशगी वसूली	3,113,730.00
प्रतिनियुक्तों का भविष्यनिधि खाता	95,850.00
प्रतिनियुक्तों की मकान निर्माण पेशगी	86,153.00

1997-98

	भुगतान	
योग में न्यूनतम अधिगम स्तर (श्री ए.के. सिन्हा)		
व्यय	10,529.00	10,529.00
शिक्षार्थी अधिगम प्राप्ति अध्ययन (दिल्ली) (यूनीसेफ) डा. वाई. पी. अग्रवाल		
वेतन	55,702.00	
डाटा एंट्री प्रभार	104,000.00	
स्टेशनरी	21,255.00	
परिवहन	13,492.00	
कार्यशाला तथा संगोष्ठी	9,209.00	
विविध आकस्मिक व्यय	42,561.00	246,219.00
प्राथमिक शिक्षा मूल्यांकन तथा पुनरीक्षण व्यवस्था (यूनीसेफ)		
वेतन	27,000.00	
स्टाफ तथा मानद अधिकारियों का टी.ए/डी.ए	375.00	27,375.00
आई. आई. ई. पी. पेरिस (करार नं. 97.30.91) डा. अग्रवाल		
व्यय	273,460.00	273,460.00
डाइट का तकनीकी और अधिरचनात्मक क्षमता का निर्धारण (डा. आर. गोविंदा)		
वेतन	4,842.00	
संसाधन व्यक्तियों को मानदेय	24,609.00	
भागीदारों को टी.ए./डी.ए	12,043.00	
आकस्मिकताएं	10,458.00	51,952.00
आइ. टी. डी. ए पडेरू के सभी मंडलों में विद्यालय गुणवकत्ता सुधार का समवर्ती मुल्यांकन (यूनीसेफ प्रायोजित)		
वेतन	96,000.00	
टी. ए/डी. ए	24,000.00	120,000.00
कुल व्यय प्रायोजित अध्ययन	**10,597,873.00**	

1997-98

प्राप्तियां	
पे रोल बचत योजना	158,400.00
समूह बचत लिंक बीमा (एल. आई. सी)	87,800.00
स्टाफ़ का जीवन बीमा	251,570.00
सोसायटी देय	451,098.00
सी.जी.ई.जी.आई.एस (प्रतिनियुक्ता)	5,279.60
आय कर (पार्टी)	17,512.00
कंप्यूटर पेशगी (प्रतिनियुक्ता)	1,800.00
योग	**72,051,787.49**

ह./–
(डी.पी. सिंह)
वित्त अधिकारी
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

1997-98

भुगतान

प्रेषित धन		
आयकर (वेतन)		26,102.00
भविष्य निधि खाता तथा पेशगी वसूली		3,113,730.00
प्रतिनियुक्तां का भविष्य निधि खाता		95,850.00
प्रतिनियुक्तों को मकान निर्माण पेशगी		86,153.00
पे रोल बचत योजना		158,400.00
समूह बचत लिंग बीमा (एल.आई.सी)		89,440.00
स्टाफ का जीवन बीमा		251,570.00
सोसाइटी देय		451,098.00
सी.जी.ई.जी. आई. एस (प्रतिनियुक्ता)		5,279.60
आयकर (पार्टी)		17,512.00
कंप्यूटर पेशगी (प्रतिनियुक्ता)		1,800.00
रोकड़बाकी		
हस्तगत रोकड़	0.00	
अग्रदाय	5,000.00	
बैंक में रोकड़		
भारतीय स्टेट बैंक	2,016,839.00	
सिंडीकेट बैंक (181)	13,287,963.10	
सिंडीकेट बैंक (178)	2,022,500.00	
सिंडीकेट बैंक (179)	2,130,503.00	19,459,805.10
		72,051,787.49

प्रमाणित किया जाता है कि भारत सरकार से प्राप्त सहायत अनुदान का अपेक्षित प्रयोजनों पर उपयोग किया गया है और निर्धारित शर्तों का पूरी तरह पालन किया गया है।

ह./–
(पी. आर. आर. नायर)
कुलसचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

ह./–
(चंपक चटर्जी)
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान

रोकड़ बाकी का विवरण (31 मार्च 1998)

शीर्ष	अर्थ शेष	अनुदान	अन्य प्राप्तियां	योग	भुगतान	शेष
योजनेतर	802,344.98	11,698,000.00	5,396,074.28	17,896,419.26	17,761,893.50	134,525.76
योजना	16,783.33	30,833,217.00	0.00	30,850,000.33	19,935,281.29	10,914,719.04
प्रायोजित कार्यक्रम	5,740,130.30	13,269,943.00	0.00	19,010,073.30	10,597,873.00	8,412,200.30
जी.एस.एल.आई. योजना	0.00	0.00	87,800.00	87,800.00	89,440.00	(1,640.00)
योग	**6,559,258.61**	**55,801,160.00**	**5,483,874,28**	**67,844,292.89**	**48,384,487.79**	**19,459,805.10**

ह/–
(डी.पी. सिंह)
वित्त अधिकारी
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

ह/–
(पी.आर.आर. नायर)
कुलसचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

ह/–
(चंपक चटर्जी)
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान

31 मार्च 1998 के अनुसार निर्धारित कार्यक्रम/अध्ययन का लेखा प्रपत्र

क्र.सं	कार्यक्रम/अध्ययन का नाम	अर्थ शेष	प्राप्तियां	योग	व्यय	शेष
1.	अनौपचारिक शिक्षा की प्रयोगात्मक परियोजना– मूल्यांकन अध्ययन (शिक्षा मंत्रालय)	14923.36	0.00	14923.36	0.00	14923.36
2.	अनौपचारिक शिक्षा समेत प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा का प्रारंभिक तथा नवाचारी कार्यक्रम (कोप) तथा जिला शिक्षा अधिकारियों के लिए एम.आई.एस. (शिक्षा मंत्रालय)	(–)13087.70	0.00	(–)13087.70	0.00	(–)13087.70
3.	मौजूदा सुविधाओं का अधिकाधिक प्रभावी प्रयोग	13037.00	0.00	13037.00	0.00	13037.00
4.	शैक्षिक योजना और प्रशासन में अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा	402759.14	2084073.00	2486832.14	1582117.00	904715.14
5.	उच्च शिक्षा में क्षमता, गुणवत्ता और लागत का अध्ययन	1043.00	0.00	1043.00	0.00	1043.00
6.	शिक्षा में प्रतिदर्श सर्वेक्षण तकनीक	(–)26031.00	0.00	(–)26031.00	0.00	(–)26031.00
7.	शैक्षिक प्रौद्योगिकी योजना का मूल्यांकन अध्ययन	182136.00	0.00	182136.00	0.00	182136.00
8.	ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के प्रतिभाशाली छात्रो के छात्रवृत्ति का मूल्यांकन अध्ययन (मा.स.वि.म.)	60645.00	0.00	60645.00	0.00	60645.00

क्र.सं	कार्यक्रम/अध्ययन का नाम	अर्थ शेष	प्राप्तियां	योग	व्यय	शेष
9.	केरल में जि.शि.प्र.सं. के लिए कार्यक्रम	22417.00	0.00	22417.00	0.00	22417.00
10.	डाइट के पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए कार्यक्रम	124783.00	0.00	124783.00	0.00	124783.00
11.	भारत के चुने हुए विश्वविद्यालयों का कार्य विवरण (वि.अ. आयोग)	75348.00	0.00	75348.00	0.00	75348.00
12.	महिलाओं की अवस्थिति और समस्याएं	127283.00	0.00	127283.00	0.00	127283.00
13.	शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़े जिलों में महाविद्यालयों का विकास (वि.अ. आयोग)	51081.00	0.00	51081.00	0.00	51081.00
14.	उच्च शिक्षा में आधारभूत सुविधाओं का मूल्यांकन (डॉ. जे. इंदिरेसन)	(–)13183.00	0.00	(–)13183.00	0.00	(–)13183.00
15.	सामाजिक सुरक्षा कवच योजना (मा.सं.वि. मंत्रालय)	280082.00	0.00	280082.00	167500.00	112582.00
16.	केब – पंचायती राज संस्थान (मा.सं.वि. मंत्रालय)	88360.00	0.00	88360.00	0.00	88360.00
17.	बेस लाइन अध्ययन (केरल) बेस लाइन अध्ययन (कर्नाटक)	79843.00	0.00	79843.00	67311.00 28586.00	(–)16054.00
18.	डी.आई.एस.ई. की स्थापना और संचालन (यूनीसेफ़)	420011.00	1582788.00	2002799.00	1272950.00	729849.00
19.	डाइट के लिए दसवां प्रशिक्षण कार्यक्रम (जलाली/मेनन)	74612.00	144842.00	219454.00	128118.00	91336.00
20.	भारतीय विश्वविद्यालयों में अर्थशास्त्र विषय में हो रहे अनुसंधानों की स्थिति पर रिपोर्ट (वि.अ. आयोग)	(–)13383.00	0.00	(–)13383.00	0.00	(–)13383.00

क्र.सं	कार्यक्रम/अध्ययन का नाम	अर्थ शेष	प्राप्तियां	योग	व्यय	शेष
21.	राष्ट्रीय शिक्षक आयोग-II	20686.40	0.00	20686.40	0.00	20686.40
22.	योजना और प्रबंधन में क्षमता निर्माण (डी.पी.ई.पी.) (डा. एन.वी.वर्गीज)	2783781.00	0.00	2783781.00	1489323.00	1294458.00
23.	श्रीलंका के वरिष्ठ विद्यालय प्राध्यापकों के लिए शैक्षिक प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम (एशियन विकास बैंक द्वारा प्रायोजित)	100272.00	6453447.00	6553719.00	3923027.00	2630692.00
24.	दक्षेस कार्यक्रम – डॉ. कुसुम प्रेमी	(–)45652.00	45652.00	0.00	0.00	0.00
25.	उच्च शिक्षा पर अनु–क्षेत्रीय कार्यशाला आई.आई.ई.पी. – यूनेस्को, नीपा (डॉ. जी.डी. शर्मा)	30388.00	0.00	30388.00	0.00	30388.00
26.	शैक्षिक योजना और प्रबंधन के राष्ट्रीय प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थानों का एशियन नेटवर्क (5-9 दिसंबर, 1995) डॉ. एन.वी. वर्गीज़	260351.50	0.00	260351.50	0.00	260351.50
27.	योग शिक्षा के न्यूनतम अधिगम स्तर का अध्ययन (श्री ए.के. सिन्हा)	10529.00	0.00	10529.00	10529.00	0.00
28.	शैक्षिक संकेतकों की गुणवत्ता (मा.सं.वि. मंत्रालय) करार सं. 840.972.4/159 (161) डॉ. अरुण मेहता	714.00	0.00	714.00	0.00	714.00
29.	वि.अ.आ. की ओर से कालेज प्राचार्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	300623.00	600000.00	900623.00	886329.00	14294.00

क्र.सं	कार्यक्रम/अध्ययन का नाम	अर्थ शेष	प्राप्तियां	योग	व्यय	शेष
30.	मूल्यांकन और निर्धारण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 24-27/3/1997 (डॉ. श्रीमती सुधाराव)	100695.00	0.00	100695.00	100695.00	0.00
31.	शैक्षिक रूप से पिछड़ों के लिए सघन क्षेत्र कार्यक्रम का अध्ययन (श्रीमती पी मेनन)	245750.00	0.00	245750.00	138895.00	106855.00
32.	इ-9 सम्मेलन (मा. सं. वि. मं.)	0.00	36410.00	36410.00	42771.00	(-)6361.00
33.	आई टी डी ए पाडेरू अध्यापक प्रशिक्षण (डा. के. सुजाता	0.00	40716.00	40716.00	40716.00	0.00
34	अधिगम प्राप्ति दिल्ली पी ई ई पी (डा. अग्रवाल)	0.00	525000.00	525000.00	246219.00	278781.00
35.	प्राथमिक शिक्षा मूल्यांकन और समीक्षा प्रणाली (डा. अग्रवाल)	0.00	525000.00	525000.00	27375.00	497625.00
36.	आई आई ई पी पेरिस करार स. 97.30.91 (डा. आर गोविंद)	0.00	583015.00	583015.00	273460.00	309555.00
37.	डाइट की तकनीकी और अभिरचनात्मक क्षमता का निर्धारण (डा. आर. गोविंद)	0.00	649000.00	649000.00	51952.00	597048.00
38.	आई टी डी ए, पाडेरू के सभी मंडलों में विद्यालय गुणवत्ता सुधार का समवर्ती मुल्यांकन	0.00	0.00	0.00	120000.00	(-)120000.00
	योग	**5760816.70**	**13269943.00**	**19030759.70**	**10597873.00**	**8432886.70**

विशिष्ट परियोजना के लिए उपयोगिता प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सभी शर्तों को पूरा करते हुए निर्धारित प्रयोजनों पर प्राप्त अनुदान का उपयोग किया गया है।

ह/–
(डॉ.पी. सिंह)
वित्त अधिकारी
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

ह/–
(पी.आर.आर. नायर)
कुलसचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

ह/–
(चंपक चटर्जी)
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान

वर्ष 1997-98 के लिए जी.पी. एफ./सी.पी.एफ. की प्राप्ति तथा भुगतान लेखा

प्राप्तियां		भुगतान	
अर्थ शेष	1,260,580.00	पेशगियां और निकासी	3,580,883.00
अंशदान तथा पेशगियों की वापसी	3,090,155.00	आवर्ती जमा निवेश	950,000.00
जी.पी. एफ./सी.पी.एफ. पर ब्याज और नियोक्ताओं का भाग	165,082.00	अंत शेष	1,150,510.00
अदा किए गए जी. पी. एफ पर ब्याज	977,801.00		
अदा किए गए सी. पी. एफ पर ब्याज	129,066.00		
सरकारी अंशदान	22,590.00		
सरकारी अंशदान पर ब्याज	36,119.00		
योग	**5,681,393.00**		**5,681,393.00**

ह/–
(डी.पी. सिंह)
वित्त अधिकारी
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

ह/–
(पी.आर.आर. नायर)
कुलसचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

ह/–
(चंपक चटर्जी)
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

1997-98

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान

1997-98 का आय-व्यय लेखा (31 मार्च 1998)

	व्यय
अधिकारियों का वेतन	1,617,484.00
संस्थागत वेतन	3,411,121.00
भत्ते तथा मानदेय, समयोपरि भत्ता, चिकित्सा व्यय प्रतिपूर्ति अवकाश वेतन तथा पेंशन सहित	7,523,856.00
पेंशन तथा उपदान	1,496,210.00
पी.एफ. नियोक्ता का अंशदान, अंशदाता के खाते में शोधित/देय पी. एफ. पर ब्याज	1,165,576.00
बोनस	271,043.00

1997-98

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
1997-98 का आय-व्यय लेखा (31 मार्च 1998)

	आय	
भारत सरकार से प्राप्त सहायता अनुदान	42,531,217.00	
(अ) फडिंग से प्राप्त अनुदान	13,269,943.00	
पूजीकृत अनुदान को घटाकर		
फर्नीचर व साज–सामान	797,701.00	
कार्यालय के अन्य उपकरण	387,771.00	
स्टाफ कार	1,017,808.00	
पुस्तकालयों की पुस्तकें	267,424.00	53,330,456.00
छात्रावास किराया		
वर्ष के दौरान प्राप्तियां	1,481,689.00	
वर्ष के दौरान व्यय	42000.00	
पिछले साल को घटाकर	4,200.00	1,519,489.00
ब्याज		
निवेश पर	1,206,654.68	
ब्याजवाली पेशगियों पर	116,412.00	1,323,066.68

1997-98

	व्यय
प्रकाशन व्यय	232,481.00
अकादमिक गतिविधियां	6,382,340.20
अनुसंधान अध्ययन	439,076.59
अन्य प्रभार (आवर्ती)	
कार्यालय व्यय	7,600,249.00
फंड प्रदान करने वाली एजेंसी का व्यय	10,597,873.00
व्यय से अधिक आय (कार्यालय)	15,219,746.49
कम से अधिक आय (फडिंग एजेंसी)	2,504,570.00
योग	**58,461,626.28**

ह./-
(डी.पी. सिहं)
वित्त अधिकारी
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

1997-98

आय		
विविध प्राप्तियां		
रायल्टी	37,531.60	
मकान किराया (लाइसेंस शुल्क)	80,257.00	
पानी का शुल्क	6,728.00	
विविध प्राप्तियां	483,131.00	
अनुपयोगी वस्तुओं की बिक्री	123,920.00	
अवकाश वेतन तथा पेंशन	35,099.00	766,666.60
भविष्य निधि निवेश पर ब्याज		
वास्तविक		1,521,948.00
योग		**58,461,626.28**

ह./-
(पी.आर.आर. नायर)
कुलसचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

ह./-
(चंपक चटर्जी)
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

1997-98

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान

तुलन पत्र (31 मार्च 1998)

देयताएं		
पूंजीकृत अनुदान		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	57,425,787.44	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	2,470,704.00	
परिवर्धन (समायोजन द्वारा)	538,440.32	59,358,051.12
व्यय से अधिक आय		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	4,661,510.31	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	15,219,746.49	
संशोधन जोड़कर	158,290.00	20,039,546.80
प्रायोजक एजेंसियों को वापिस किए जाने वाला अव्ययित शेष (निर्धारित कार्यक्रम)		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	5,760,816.70	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	13,269,943.00	
वर्ष के दौरान व्यय को घटाकर	10,597,873.00	8,432,886.70

1997-98

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान

तुलन पत्र (31 मार्च 1998)

परिसंपत्तियां		
भूमि तथा भवन		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	33,739,313.55	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	0.00	33,739,313.55
उपकरण तथा मशीनरी, फर्नीचर व साज-समान टाइपराइटर, कंप्यूटर, स्टाफ कार इत्यादि		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	19,705,561.27	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	2,203,280.00	
बट्टे खाते को घटाकर	536,625.32	21,372,215.95
पुस्तकालयों की पुस्तकें		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	4,114,477.38	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	267,424.00	
उपहार और दान के द्वारा बढ़ोत्तरी	26,604.00	
बट्टे खाते की पुस्तकों की कीमत घटाकर	1,815.00	4,406,690.38
भविष्य निधि निवेश		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	9,350,000.00	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	950,000.00	10,300,000.00
के.लो.नि. विभाग के पास जमा		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	2,857,464.00	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	4,590,544.00	7,448,018.00
विभिन्न देनदार		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	89,334.00	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	17,500.00	106,834.00
डी. डी. ए के पास जमा राशि		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	0.00	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	375,000.00	375,000.00

1997-98

देयताएं		
भविष्यनिधि		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	10,610,580.00	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	4,420,813.00	
वर्ष के दौरान निकाली गई राशि	3,580,883.00	11,450,510.00
विभिन्न लेनदार		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	17,500.00	
वर्ष के दौरान प्राप्त राशि	1,000.00	18,500.00
उपहार तथा दान		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	133,564.76	
वर्ष के दौरान प्राप्त राशि	26,604.00	160,168.76
योग		**99,459,663.38**

ह./-
(डी.पी. सिंह)
वित्त अधिकारी
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

1997-98

परिसंपत्तियां

कर्मचारियों को पेशगी/अन्य पेशगी		
वसूली योग्य पेशगियां		
त्यौहार पेशगी	48,820.00	
मोटर कार पेशगी	40,020.00	
स्कूटर पेशगी	17,190.00	
साईकिल पेशगी	450.00	
पंखा पेशगी	0.00	
भवन निर्माण पेशगी	459,900.00	
कंप्यूटर पेशगी	61,065.00	627,445.00
चिकित्सा पेशगी	66,000.00	66,000.00
विविध पेशगियां (नीपा)		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	102,184.00	
वर्ष के दौरान बढाई गई राशि (एन. ई. टी)	108,856.00	211,040.00
विविध पेशगियां (एन.सी.टी.-II)	20,686.40	20,686.40
छात्रावास से प्राप्त आय		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	5,075.00	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	42,000.00	
प्राप्तियां घटाकर	4,200.00	42,875.00
धन प्राप्ति		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	0.00	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	1,640.00	1,640.00
अधिक पेंशन भुगतान की वूसली		
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष राशि	0.00	
वर्ष के दौरान बढ़ाई गई राशि	1,58,290.00	
वर्ष के दौरान विकास की गई राशि को घटाकर	26,700.00	131,590.00
शेष रोकड़		
हस्तगत रोकड़		
अग्रदाय	5000.00	
बचत खाता	19,454,805.10	
भविष्य निधि बचत खाता टी-2	1,150,510.00	20,610,315.10
योग		**99,459,663.38**

ह./-
(पी.आर.आर. नायर)
कुलसचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

ह./-
(चंपक चटर्जी)
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

1997-98

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान की लेखा परीक्षा रिपोर्ट : 1997-98

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान (नीपा) पहले शैक्षिक योजनाकारों और प्रशासकों के राष्ट्रीय स्टाफ कालेज के नाम से जाना जाता था। मई 1979 में इसकी स्थाना एक स्वायत्त संस्था के रूप में हुई और सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत इसे पंजीकृत किया गया। संस्थान का मुख्य उद्देश्य शैक्षिक योजना और प्रशासन के विविध क्षेत्रों में अनुदान और समन्वय के द्वारा अनुसंधान को बढ़ावा देना है।

नियंत्रक और महालेखा परीक्षक के अधिनियम 1971 की धारा 20(1) (कार्य, अधिकार और सेवाशर्तें) के तहत पांच वर्षों (1996-97 से 2000-2001) के लिए संस्थान की लेखा परीक्षा सुपुर्द की गई है।

संस्थान को मुख्यत केंद्र सरकार से अनुदान के रूप में वित्तीय सहायता प्राप्त होती है। वर्ष 1997-98 के दौरान संस्थान को भारत सरकार से 425.31 लाख रुपए (308.33 लाख योजनागत और 116.98 लाख रुपए योजनेतर मद में) का अनुदान प्राप्त हुआ।

2. लेखा पर टिप्पणियां

2.1. प्राप्ति और भुगतान का अधिक आकलन

वर्ष 1997-98 में संस्थान को 26,604/- रुपए राशि की पुस्तकें दान/उपहार में प्राप्त हुईं। वर्ष 1997-98 की प्राप्ति और भुगतान लेखा में 'पुस्तकालय की पुस्तकों के रूप में 'दान' शीर्ष के अंतर्गत रु. 26,604 की राशि दोनों तरफ दर्शाई गई थी। वस्तुतः प्राप्ति और भुगतान लेखा में केवल वास्तविक रोकड़/बैंक अंतरण ही शामिल किया जाता है। अतः दान/उपहार के रूप में प्राप्त पुस्तकालय की पुस्तकों का मूल्य प्राप्ति और भुगतान लेखा में प्रदर्शित करना गलत है। इसके कारण इस लेखा में रु 26,604.00 की राशि का अधिक आकलन हुआ था।

2.2 प्राप्ति और भुगतान को कम दिखाना

2.2.i) बही के अनुसार संस्थान को श्री पी. आर. नायर कुलसचिव, नीपा के पूर्व संस्थान से पेंशन और उपदान लेखा के अंतर्गत रु. 36,969.00 की राशि प्राप्त हुई। संस्थान इस राशि को प्राप्ति और भुगतान लेखा में नहीं दर्शाया और पेंशन भोगी को इसका भुगतान कर दिया गया। इसके कारण प्राप्ति और भुगतान लेखा में इसका समुचित उल्लेख नहीं हो पाया।

2.2.ii) संस्थान ने 1997-98 के दौरान अपने अधिकारियों से अतिरिक्त टेलीफोन काल/ट्रंककाल के प्रभार के रूप में रु. 39,161.00 (योजनेतर रु. 21,872.00 और योजनागत रु. 17,289.00) की राशि वसूली की। यह राशि प्राप्ति के रूप में प्राप्ति और भुगतान लेखा में दिखाई नहीं मई। इस राशि को उसी शीर्ष के तहत भुगतान के रूप में बही में समायोजित कर दिया गया। इसके कारण प्राप्ति और भुगतान में रु. 39,161.00 की राशि शामिल नहीं हो पायी।

1997-98

2.3 व्यय को अधिक दर्शाना

वर्ष 1997-98 के वार्षिक लेखा के परिशिष्ट में समनुदेशित कार्यक्रमों/परियोजना अध्ययनों के लेखा विवरण प्रपत्र में संस्थान ने रु. 1,05,97,873.00 का खर्च दिखाया है और इसे आय और व्यय लेखा में प्रस्तुत किया है। इस राशि में से रु. 1,67,500.00 की राशि कप्यूटरों की खरीद पर खर्च की गई जिसे पूंजीकृत व्यय के रूप में माना जाना चाहिए। इसके कारण व्यय के रूप में रु. 1,67,500.00 की राशि का अधिक उल्लेख हुआ।

2.4 देयताएं और परिसंपत्तियों को कम बताना

संस्थान दानकर्ता अभिकरणों (सरकारी और गैर सरकारी) से समनुदेशित कार्यक्रमों परियोजना अध्ययनों के लिए दूसरे अभिकरणों से अनुदान प्राप्त करता है। समनुदेशित कार्यक्रमों/अध्ययनों के 31.3.98 के लेखा विवरण के अनुसार 27 परियोजनाओं में रु. 86,40,986.40 की राशि शेष बचत के रूप में थी जबकि बाकी 7 परियोजनाओं में रु. 2,08,099.70 की अधिक राशि व्यय हुई। लेखा सिद्धांतों के अनुसार तुलन पत्र में लेनदारों और देनदारों को अलग–अलग प्रदर्शित करना चाहिए। संस्थान ने तुलन पत्र में केवल कुल देयताएं के रूप में रु. 84,32,886.70 (रु. 86,40,986.40 - रु. 2,08,099.70) की राशि अव्ययित अनुदान बचत राशि के शीर्ष में प्रस्तुत किया है जो दानकर्ता अभिकरणों को वापस की जानी है। इसके कारण देयताएं और परिसंप्तियां लेखा के अंतर्गत रु. 2,08,099.70 की राशि का उल्लेख नहीं किया गया है।

2.5 परिसंपत्तियों का अधिक आकलन

31.3.98 के तुलन पत्र में उपकरण, मशीन फर्नीचर आदि के शीर्ष के अंतर्गत रु. 22,03,280.00 की परिवर्धित राशि दिखाई गई है जबकि संस्थान के बही–खातों और रिकार्डों के अनुसार रु. 18,94,448.00 राशि की परिवर्धित परिसंपत्तियां थीं। अतः इसमें 3,08,832.00 का अंतर पाया गया। इस प्रकार देयताएं और परिसंपत्तियां लेखा में रु. 3,08,832.00 की राशि का अधिक उल्लेख पाया गया।

संस्थान ने वार्षिक लेखा के साथ न तो परिसंपत्ति रजिस्टर का उद्धरण (जी इ आर 19 प्रपत्र में) संलग्न किया और न ही सामान्य वित्त नियम के नियम 151(4) के अनुसार इसे मंत्रालय को भेजा।

परिसंपत्ति लेखा अर्जित संपत्ति का खाता मूल्य प्रदर्शित करता है और अनुपयोगी, अप्रचलित, बेकार और अनुपयोगी घोषित परिसंपत्तियों को बहिष्कृत नहीं करता है। इसमें परिसंपत्तियों के मूल्य ह्रास (अपक्षय) के कारण पूंजी लेखा में कमी को नहीं दिखाया गया है। इसलिए पूंजी और परिसंपत्ति लेखा में अधिक आकलन प्रस्तुत किया गया है और यह इसकी सही तस्वीर नहीं प्रस्तुत करता है।

स्थान : नई दिल्ली

दिनांक: 24.12.98

महानिदेशक, लेखा परीक्षा

केंद्रीय राजस्व

1997-98

लेखा परीक्षा प्रमाण पत्र

मैंने राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली के 31 मार्च 1998 को समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष के आगत और भुगतान लेखा/आय और व्यय लेखा तथा 31 मार्च 1998 के तुलन पत्र की जांच कर ली है। मैंने सभी अपेक्षित सूचना और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं तथा संलग्न लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में दी गई अभियुक्तियों के आधार पर अपनी लेखा परीक्षा के परिणामस्वरूप मैं प्रमाणित करता हूं कि मेरी राय में तथा मेरी जानकारी और मुझे दिए गए स्पष्टीकरण एवं संस्थान की बहियों में दर्शाए गए विवरणों के अनुसार ये लेखे और तुलनपत्र उपयुक्त रूप से तैयार किए गए हैं तथा संस्थान के कार्यकलापों का सही और उचित रूप प्रस्तुत करते हैं।

ह./–
महानिदेशक, लेखा परीक्षा
केंद्रीय राजस्व

स्थान : नई दिल्ली

दिनांक : 24.12.1998

नीपा छात्रावास